सोवियत्-न्याय

और

रादेक् आदि का मुकदमा

लेखक

डड्ली कोलार्ड

अनुवादक

राहुल सांकृत्यायन

प्रकाशक

वाणी-मन्दिर,

छपरा

प्रथम संस्करण]

१९४०

प्रकाशक
मंगलप्रसाद सिंह
वाणी-मन्दिर, छपरा

मुद्रक
विद्यावती देवी
वाणी-मन्दिर प्रेस, छपरा

भूमिका

मैं महाशय कोलार्ड की पुस्तक का गर्मागर्म स्वागत करता हूँ। यद्यपि मैं हाल के प्याताकोफ्, राडेक् आदि के मुकदमों में मौजूद न था, तो भी पिछले साल (अगस्त, १९३६ में) मैं खुद जिनोवियेफ्, कामेनेफ् और दूसरों के मुकदमे में मौजूद था। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि सिर्फ अखबारों की खबरों से सच्चाई तक पहुंचना कितना कठिन है। पहले मौके पर मुकदमे को प्रत्यक्ष देखकर मुझे यह साफ मालूम हो गया था कि मुकदमा सच्चा है, अदालत की कार्रवाई न्याययुक्त थी और अभियुक्त अपराधी थे, जैसा कि उन्होंने खुद स्वीकार किया है। दूसरे मुकदमे के समय लंदन में मैंने अखबारों की खबरें पढ़ीं और उसी निर्णयपर पहुंचा, किन्तु मैंने तुरन्त अनुभव किया कि समाचारपत्रों की खबरों—चाहे वे कितने ही विस्तार के साथ क्यों न हों—से किसी निर्णय पर पहुंचना अत्यन्त असन्तोषजनक एवं मुश्किल काम है। इसलिये मुझे सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि महाशय कोलार्ड— जिनकी योग्यता और विचार-शक्ति की वे सभी कानूनदाँ कदर करते हैं जिन्हें कि उनके सम्पर्क में आने का मौका मिलता है—ने मौके पर जाकर द्वितीय मुकदमे के बारे में वही राय कायम की जैसी

कि पहले मुकदमे के बारे में मेरी थी। खुद एक बारिस्टर होने के कारण वे इसके लिए उचित अधिकारी थे।

महाशय कोलार्ड के वर्णन से मैं समझता हूं, सिर्फ उन्हीं लोगों को इस मुकदमे की सच्चाई पर विश्वास नहीं होगा, जो इसे पढ़ेंगे, बल्कि पहले मुकदमे को सुनकर जो भ्रम में पड़े हुए थे उन्हें भी उसकी सच्चाई पर विश्वास हो जायगा। उन्हें यह भी पता लगेगा कि पहले मुकदमे के कितने ही अभियुक्तों की अपराध-स्वीकृति की आपाततः पूर्णता इसलिये थी जिसमें कि अधिकारियों को विश्वास हो जाय कि वे षड्यन्त्र की तह तक पहुंच गये हैं और इस प्रकार दूसरे या समकक्ष केन्द्र—कम से कम कुछ और महीनों तक के लिये—का उन्हें पता न लग सके। उस वक्त कुछ विदेशी समालोचकों ने अनुमान किया था कि उस अपराध-स्वीकृति का अभिप्राय था त्रोत्स्की को बचाना; लेकिन अब अधिक संभव मालूम होता है कि उसका अभिप्राय होता है सोवियत्-संघ के भीतरी षड्यन्त्रकारियों को छिपाना।

डी० एन० प्रिट, के० सी०;

(मेम्बर पार्लियामेंट)

प्राक्कथन

मेरा इरादा एक पुस्तिका लिखने का था; लेकिन जब मैंने देखा कि रादेक् और दूसरों के मुकदमे से इंगलैंड में कितनी ज्यादा दिलचस्पी बढ़ी हुई है तो विस्तार के साथ अपने विचारों को लिपिबद्ध करने का निश्चय किया।

मैंने सोवियत्-संघ में मुकदमा चलाने के तरीकों और अपराधों की तहकीकात सम्बन्धी नियमों का छोटा सा वर्णन यहां दिया है, यह इसलिये कि मुकदमे के बारे में वार्तालाप करते वक्त मुझे मालूम हुआ कि हमारे देश में सोवियत् की कानूनी कार्रवाई का ज्ञान बहुत कम है। कुछ लोग तो ख्याल करते हैं कि वहां कानूनी कार्रवाई की कोई व्यवस्था ही नहीं है। लेकिन यह बात सत्यता से बिल्कुल विपरीत है। वहां सुव्यवस्थित नियम मौजूद हैं, जिनका कि मैंने खाकाभर यहां दिया है। मैंने बहुत सी शर्तों, नियमों और अपवादों को छोड़ दिया, जो पाठक इनके विषय में विशेष जानना चाहते हैं, उन्हें मैं सोवियत्-संघ के फौजदारी कानून देखने को कहूंगा। मेरी राय में वह किसी दूसरे देश के कानून के बराबर, और कुछ बातों में बढ़कर हैं।

मुकदमे की कार्रवाई का वर्णन करते हुए मैंने कानूनी दृष्टिकोण से पक्षपात-रहित तटस्थ विवरण देने की कोशिश

की है। जहां तक हो सका है, उस सम्बन्ध की राजनीतिक बातों पर विचार न करने की कोशिश की है।

साथ में रादेक के बयान की शब्दशः रिपोर्ट को दे दिया है। यह सोवियत् संघ के न्यायविभाग द्वारा प्रकाशित अदालती कार्रवाई की पूर्ण शब्दशः रिपोर्ट से लिया गया है ... ...

बहुत संकोच के बाद मुकदमे के बारे में सार्वजनिक तौर पर अपनी राय प्रकट करने को तैयार हुआ हूं, और इसके दो कारण थे।

प्रथम, सोवियत् संघ के राजनैतिक मुकदमों के बारे में जो गलतफहमी फैली हुई है—जो कि हमारे देश और सोवियत् संघ के बीच अच्छा सम्बन्ध स्थापित करने में रोड़े अटकाती है—को मैंने हटाना चाहा है।

द्वितीय, मैं समझता हूं, कि हमारे देश में यह जानने की बड़ी जरूरत है कि अपने आक्रमणात्मक मनसूबों को पूरा करने के लिये जर्मनी और जापान कौन-कौन से ढंग अख्तियार कर रहे हैं। यदि ये दोनों देश सोवियत संघ (जिसे कि वे अपना संभाव्य शत्रु समझते हैं) में हत्या और ध्वंस को उत्साहित एवं संगठित करने तथा कीटाणुओं को फैलाने में आनाकानी नहीं करते तो क्या ठीक है कि दूसरे संभाव्य दुश्मनों—जैसे इंगलैंड—के खिलाफ वैसा नहीं करेंगे या नहीं कर रहे हैं—इसका क्या विश्वास है ?

मैं यह भी बतला देना चाहता हूं कि मैं १९३३, १९३५ और १९३६ में सोवियत संघ गया था। अपनी यात्रा में मैंने बहुत से जनन्यायालय देखे, कितने ही न्यायाधीशों और वकीलों से मिला और सोवियत कानूनों और अदालती व्यवस्थाओं को पढ़ा। मुझे रूसी भाषा का काफी मात्रा में ज्ञान है और यद्यपि इन्टूरिष्ट (सोवियत् यात्रा प्रबन्धक-समिति) का पथप्रदर्शक अदालत में मेरे साथ मौजूद रहता था; किन्तु उसकी सहायता के बिना भी अधिकांश कार्रवाई मैं स्वयं समझ लेता था।

दि टेम्पुल,
फरवरी १९३७

डडली कोलार्ड

दो शब्द

"सोवियत्-न्याय" जैसी पुस्तक की हिन्दी में कितनी आवश्यकता है, यह पाठक स्वयं समझेंगे इस पुस्तक को पढ़ कर। सारी दुनिया के पूंजीवादी ग्रंथकर्ता, पत्रकार और राजनीतिज्ञ गला फाड़ फाड़कर सोवियत् को बदनाम करने की कोशिशें आज ही नहीं, पिछले २२ वर्षों से करते आ रहे हैं। देश और साम्यवाद के साथ घोर विश्वासघात करने वालों को, उनकी पुरानी क्रांतिकारी सेवाओं को लेकर शहीद बनाने की कोशिशें की जा रही हैं। यह सब न्याय और साम्यवाद के प्रेम के नाते नहीं, बल्कि सोवियत् शासन और उसके साथ साम्यवादको जनता की नजर में गिराने के अभिप्राय से। पाठक इस पुस्तक को पढ़ने से जान सकेंगे, कि सोवियत् शासक इन परिस्थितियों में दूसरा क्या कर सकते थे?

छपरा,
१७-२-१९४०

अनुवादक

प्रथम खंड

राडेक् की गवाही
की
शब्दशः रिपोर्ट

सुबह की पेशी, जनवरी २४, १९३७,

ग्यारह बजे सुबह।

चपरासी ? —जज आ रहे हैं, कृपया उठिये।

प्रेसीडेन्ट—पेशी आरंभ हो रही है। हमलोग अभियुक्त राडेक् का इजहार शुरू करेंगे।

अभियुक्त राडेक् ! क्या तुम उस इजहार को स्वीकार करते हो जिसे कि तुमने आरंभिक अन्वेषण के समय दिसम्बर में दिया था।

राडेक्—मैं उसे स्वीकार करता हूँ।

विशिन्स्की—अपनी त्रोत्स्की-पंथी पिछली कार्रवाइयों को संक्षेप में कहो।

रादेक्—१९२३ में पार्टी के भीतरी द्वन्द्व के समय में त्रोत्स्की-पंथी विरोधी-दल से मिल गया और जनवरी १९२८—अपने निर्वासन के समय-तक उक्त दल और उसके नेतृत्व सम्बन्ध रखता था। जब मैं निर्वासित था, तब भी, उस वक्त तक मैं त्रोत्स्की-पंथी रहा जब कि जुलाई १९२९ में सोवियत् संघ के साम्यवादी दल की केन्द्रीय समिति के पास मैंने (अपने हृदय परिवर्तन की) घोषणा की। इस सारे समय में मैं त्रोत्स्की-पंथियों के संगठन के राजनैतिक केन्द्र से सम्बद्ध रहा।

विशिन्स्की—किस बात ने तुम्हें घोषणा करने के लिए मजबूर किया ?

रादेक्—पहली बात जिसने मुझे वैसा करने को मजबूर किया, थी वह निर्णय जिसपर कि उस समय मैं पहुंचा। निर्वासन-काल में मैंने सारे अतीत और त्रोत्स्की की प्रधान धारणाओं की असत्यता पर विचार किया। जहां तक त्रोत्स्कीवाद के मौलिक सिद्धान्तों—सिर्फ एक ही देश में समाजवाद का निर्माण असम्भव है—का सम्बन्ध है, मैंने उस धारणा को छोड़ दिया।

दूसरी बात जिसने कि मुझे उक्त घोषणा करने के लिए

बाध्य किया वह थी यह निर्णय कि पार्टी की, केन्द्रीय समिति के खिलाफ Thermidorism का इल्जाम निराधार है, और पंचवार्षिक योजना का प्रोग्राम आगे की ओर बढ़ने के लिए एक जबर्दस्त कदम है।

तो भी मैं यह कहूंगा कि पार्टी की भीतरी प्रजासत्ताकता के सम्बन्ध में अब भी मैं पार्टी से मतभेद रखता था; और जब मैं फिर पार्टी में लौटा तो जहां तक मेरा सम्बन्ध है, यह प्रश्न थोड़ी देर के लिए सामने से हट गया, लेकिन तो भी घटनाचक्र के आगे बढ़ने के साथ साथ वे मेरे मन से बिल्कुल निकल नहीं पाये। मेरा दृढ़ विश्वास था कि भविष्य में पंचवार्पिक योजना का विकास या तो पार्टी के नेताओं की अपनी इच्छा द्वारा पार्टी की आन्तरिक जनसत्ताकता के स्वेच्छा से विस्तारित करेगा, या पार्टी के भीतर फूट का कारण बनेगा।

इस प्रकार पार्टी में अपने लौटने के बारे में संक्षेप से कहते हुए, मैं इसे स्वीकार करूंगा कि चूंकि वह लौटना पार्टी के विचारों से मेरे विचारों को पूर्ण समानता पर निर्भर नहीं था, और इसलिए उसमें हठपूर्ण चुप्पापन 'भीतर-कुछ बाहर-कुछ' वाली बात की मात्रा भी थी, यद्यपि मैं पार्टी के साथ झगड़ा करने के विचार से पार्टी में नहीं लौटा।

विशिन्स्की—परिणामतः, पार्टी में लौटने के बाद भी तुमने पुराने त्रोत्स्की-विचारों का कुछ भाग अपने अंदर कायम रखा था?

राडेक्—हां ।

विशिन्स्की—और तुमने उस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा ?

राडेक्—हां । उस घोषणा में, जिस पर कि मैं, स्मिल्गा और प्रेओब्रांजेन्स्की ने दस्तखत किये, हमने इस बात की ओर संकेत किया था । पार्टी के नेताओं ने उस समयइन संकेतों के बारे में कहा और उनकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए कहा गया था कि अब भी तुमने कुछ बातें पकड़ रक्खी हैं और यदि तुमने उन्हें नहीं छोड़ा तो हम तुम्हारे साथ यथोचित कार्रवाई करेंगे । करीब-करीब ये ही शब्द थे, जो उस समय मुझ से कहे गये थे । लेकिन साफ कहते हुए मैं कहूंगा कि पकड़ने की बातें हमने जरूर अपने मन में रख रक्खी थीं, तो भी हम पार्टी से लड़ने के अभिप्राय से उसमें नहीं लौटे थे ।

विशिन्स्की—यह कब तक जारी रहा ?

राडेक्—पार्टी में लौटते वक्त मैंने एक गल्ती की जो पीछे की सभी बातों के लिए प्रधान कारण थी । विचारों के योग की धारा मानवी सम्बन्धों का योग है, लेकिन तुम उस धारा से अपना पिंड तब तक नहीं छुड़ा सकते जब तक कि उन व्यक्तियों से सम्बन्ध तोड़ नहीं लेते कि जिनके साथ मिल कर तुमने पार्टी का विरोध करने के ख्याल से झगड़ा किया । उस समय मैं त्रोत्स्की-पंथी वर्ग में था और उस-

संघर्ष में भाग लेने वाले बहुत से आदमियों के साथ मैंने नजदीक का सम्बन्ध स्थापित किया, इन सम्बन्धों में से कुछ पहले से चले आते थे लेकिन अब वे और दृढ़ हुए। उदाहरणार्थ—अभियुक्त प्याताकोफ् के साथ मेरा सम्बन्ध। जब हम पार्टी में लौटे तब भी इन सम्बन्धों को हमने बिना छिपाये—मैंने उन्हें कभी नहीं छिपाया—कायम रक्खा, और बराबर हम दोनों मिलते जुलते रहे; और यह हमारे मार्ग में भारी बाधक साबित हुआ, क्योंकि पार्टी में लौटे हुए त्रोत्स्की-पंथियों की बहुत अधिक संख्या मुख्य मुख्य पदों पर रह कर देश के भिन्न भिन्न भागों में ऐसे समय में काम कर रही थी जब कि पंचवार्षिक योजना का संग्राम बड़ी कठिन अवस्था में पहुंचा हुआ था, जब कि देश के कुछ भागों में कुलकों (धनी किसानों) तथा मध्यवित्त किसानों के उस अंश—जो कि कुलकों के प्रभाव में था—से साथ भिड़न्त एक भयंकर रूप धारण कर रही थी। मेरे पहले संघर्ष के ये सहयोगी मेरे पास अत्यन्त निराशापूर्ण सूचनाएँ—ऐसी सूचनाएँ जिन्होंने कि देश की परिस्थिति के सन्बन्ध में मेरी सम्मति पर खतरनाक असर डाला-लगातार भेजनी शुरू कीं।

विशिन्स्की—यह किस सन् की बात है ?

रादेक्—१९३०-३१ की। और उस वक्त मैंने कुछ ऐसे अपराध

किये जिनके कारण, यदि मैं त्रोत्स्की-वर्ग में सम्मिलित न होता तो भी, मेरे ऊपर मुकदमा चलाना वाजिब होता। बात यह थी कि उनकी अस्थिर-चित्तता की इन बातों—जो कि उसी समय अपनी सीमा का उल्लंघन कर चुकी थीं—को जानते हुए भी मैंने इसे उचित नहीं समझा कि पार्टी के नेताओं को सूचित किया जाय। उदाहरणार्थ, यदि तुम सेर्ग्येइ मिरोनोविच् किरोफ् की हत्या की मेरी जिम्मेवारी के बारे में पूछते हो तो मुझे कहना पड़ेगा कि यह जवाबदेही उस समय से आरंभ न हुई जब कि मैं त्रोत्स्की-वर्ग के नेताओं में सम्मिलित हुआ, बल्कि उसका आरम्भ १९३० में उस समय से हुआ जब कि एक आदमी जिसके साथ कि मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध था—सफ़ारोफ़—मुह लटकाये मेरे पास आया और उसने मुझे विश्वास दिलाने की चेष्टा की कि देश सर्वनाश के पास पहुंच रहा है। तो भी यह बात मैंने पार्टी को सूचित नहीं की और इसका परिणाम क्या हुआ? सफ़ारोफ़ की कोतोलूनोफ् से घनिष्ठता थी। यदि मैंने सफारोफ के मानसिक भाव से पार्टी को सूचित किया होता तो वह लेनिनग्राद तरुण-साम्यवादी संघ के पुराने नेताओं—जो कि पीछे किरोफ़ की हत्या के नेता बने—का पता पा जाती। इसलिए मैं कहता हूं कि मेरी जवाबदेही त्रोत्स्की वर्ग में सम्मिलित होने के समय से

नहीं शुरू होती, बल्कि इस अपराध का बीज त्रोत्स्कीपंथी उन विचारों में है जिनको लिये हुए मैं पार्टी में लौटा और जिन्हें मैं पूर्णतया नहीं छोड़ सका, तथा वे सम्बन्ध भी इसके कारण हैं जिन्हें कि मैंने त्रोत्सकी और जिनोवियेफ् पन्थी के कार्य्यकर्त्ताओं के साथ कायम रक्खा।

विशिन्सकी-किस त्रोत्स्की पंथी के साथ तुमने समबन्ध कायम रक्खा? म्रचकोव्स्की के साथ मेरा मित्रतापूर्ण सम्बन्ध था। इ० न० स्मिरनोफ् के साथ मेरी पुरानी मित्रता थी। द्राइत्ज़ेर और उसके नजदीकी सहायक गयेब्स्की के साथ भी मेरा सम्बन्ध था। प्याताकोफ्, प्रेओब्रांजेन्सकी, स्मिल्गा और सेरेब्रयाकोफ् जैसे पुराने बैयक्तिक मित्रों के नाम लेने की आवश्यकता नहीं। १९२४-२७ काल में हमारे त्रोत्स्कियाई केन्द्र के दुतल्ले से जिनका सम्बन्ध था, उन सभी से मेरा सम्बन्ध था। और वैयक्तिक घनिष्ठता के सम्बन्ध द्वारा मैं इन कार्य कर्ताओं से सम्बद्ध था।

विशिन्स्की—यह १९३०-३१ की बात है?

रादेकः—हां! यह १९३० और १९३१ की बात है। मैंने परिस्थति को निम्न प्रकार से जतलाया पंचवार्षिक योजना के लाभ अपरिमित थे, उद्योगीकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया गया था। कुछ हद तक पंचायती खेती ने तभी एक निश्चित रूप धारण कर लिया था। लेकिन उसी

समय, सूचनाएं मुझे मिली थीं, तथा ओत्स्किआई अर्थ-शास्त्रियों (जिनके साथ मेरी घनिष्ठता थी उदाहरणार्थ श्मिल्ग और प्रेओब्राजेन्स्की) की जतलाई परिस्थिति के आधार पर मैं विश्वास करता था कि एक बहुत विस्तृत क्षेत्र में आर्थिक चढ़ाई की जा रही है और उसके लिए (ट्रैक्टरों की संख्या आदि) जो द्रव्यात्मक शक्तियां हमारे पास मौजूद हैं वे सार्वत्रिक पंचायतीकरण की इजाजत न देंगी ; और यदि इस सार्वत्रिक चढ़ाई की गति धीमी न कर दी गई तो इसका "वार्सा पर चढ़ाई जैसा अंत" होगा ; और इतनी तेजी के साथ उद्योगीकरण का सिवाय अपरिमित व्यय के और कोई परिणाम न होगा।

उस समय, १९३१ में ही मैं आवश्यक समझ रहा था कि इस चढ़ाई को रोका जाय और शक्तियों को संचित करके आर्थिक मैदान के एक खास विभाग में उनका उपयोग किया जाय। |संक्षेप में मेरा प्रधान कार्यक्रम-पंचवार्षिक योजना के युद्ध को जारी रखने-से मतभेद रहता था। सामाजिक दृष्टिकोण से इन मतभेदों का विश्लेषण करने पर उस समय इस कार्य शैली को मैं दुरुस्त और श्रेष्ठ साम्यवादी शैली समझता था। किन्तु यदि कोई इस बात के सामाजिक विश्लेषण के सम्बन्ध में पूछता तो मैं कहता-यह इतिहास का उपहास था जो कि मैंने कुलकों के विरोध की शक्ति और योग्यता के परिमाण को ही जरूरत से अधिक

नहीं कूता बल्कि मध्यवित्त किसानों के बारे में भी वही गलती की और समझा कि वे एक स्वतन्त्र शैली का अनुसरण करेंगे। मैं कठिनाइयों से डर गया और इस प्रकार श्रमिक विरोधी शक्तियों का समर्थक बन गया।

इसने मुझे सीधे पार्टी के आन्तरिक प्रजासत्ताकता के प्रश्न पर पहुंचा दिया। लोग उसी वक्त प्रजासत्ताकता के सम्बन्धमें तर्क-वितर्क करने लगते हैं जबकि वे सिद्धान्त सम्बन्धी प्रश्नों पर सहमत नहीं होते। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जब वे सहमत होते हैं तब वे विस्तृत प्रजासत्ताकता की जरूरत नहीं महसूस करते।

विशिन्स्की—तथ्य की यह एक व्याख्या जरूर है; मैं चाहता हूं पहले उस तथ्य को स्थापित करना। यह १९३०-३१ की बात है, और फिर १९३२ में संयुक्त केन्द्र संगठित किया गया।

रादेक्—मैं उस बारे में कुछ नहीं जानता था।

विशिन्स्की—कब तुम्हें संयुक्त केन्द्र के अस्तित्व और कार्रवाइयों का पता लगा ?

रादेक्—उनके बनने के सम्बन्ध में नवम्बर १९३२ में पता लगा।

विशिन्स्की—किससे ?

रादेक्—प्रथमतः त्रोत्स्की के फरवरी-मार्च १९३२ में लिखे पत्र से मालूम हुआ कि तैयारियां हो रही हैं। लेकिन संगठन के बनजाने का पता मुझे नवम्बर १९३२ में म्रच्कोव्स्की से मिला।

विशिन्स्की—और फरवरी, १९३२ में तुमने त्रोत्स्की के पत्र से जाना कि वर्ग योजना बन गई। क्या यह तुम्हारे लिए त्रोत्स्की

का पहला संदेश था ?

रादेक्—सबसे पहला।

विशिन्स्की—क्या बात थी कि जिसने कि त्रोत्स्की को उस समय तुम्हारे पास पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जब कि तुम पार्टी में आ चुके थे? इससे दो प्रश्नों का सम्बन्ध है। पहला प्रश्न क्या त्रोत्स्की को मालूम था कि तुम पार्टी में लौट गये ?

रादेक्—वैसे जानता था।

विशिन्स्की—क्यों उसे साहस हुआ कि वह एक ऐसे त्रोत्स्कियाई के पास काफी घनिष्ठतापूर्ण, राजनैतिक अभिज्ञता से भरा पत्र लिखे जो कि पार्टी में लौट चुका है? और द्वितीय प्रश्न—कैसे वह तुम्हें मिला और कैसी वास्तविक परिस्थितियों में ?

रादेक्—इसका उत्तर इस प्रकार है: त्रोत्स्कियाई नेतालोग जिन्हों ने मेरे साथ सम्बन्ध कायम रक्खा था और जिनका त्रोत्स्की के साथ उस समय पत्रव्यवहार था—जानते थे कि मैं चढ़ाई को रोक रखने के पक्ष में हूं।

विशिन्स्की—नाम?

रादेक्—मृच्कोव्स्की, द्राइत्जे़र और गयेव्स्की। इस बात के सम्बन्ध में मैंने स्मिरनोफ़् के साथ विस्तारपूर्वक बातचीत नहीं की तो भी मृच्कोव्स्की मेरे भावों को जानता था।

विशिन्स्की—१९३२ से पहले ?

रादेक्—१९३२ से पहले। वे जानते थे कि मैं चढ़ाई को रोक रखने के पक्ष में हूं।

विशिन्स्की—इसका मतलब यह है कि पुराने त्रोत्स्कियाई विचारों को तुम अब भी मानते थे ?

रादेक्—लेकिन साथ ही वे यह भी जानते थे कि जब उनमें से कोई संघर्ष के संगठित करने का प्रश्न उठाता तो मेरा उत्तर 'नहीं' में होता, और मैं यह भी कहता कि कुछ भी नहीं किया जा सकता, यह जनता सम्बन्धी प्रक्रिया का प्रश्न है। और जो योजना बन रही थी उसको लेकर मेरे पास आने में वे खुद डरते थे।

विशिन्स्की—लेकिन तुम ताड़ गये थे कि वे किसी बात की तैयारी में लगे हैं ?

रादेक्—उनमें से कुछ के सम्बन्ध में मुझे आरंभ ही से विश्वास था कि पार्टी में लौटने के समय उनके दिमाग में कोई बात थी, और विशेष कर उनकी कितनी ही चेष्टाओं से कुछ बातें प्रकट भी मालूम हो रही थीं। उदाहरणार्थ—एक बार जब मैं इज्वेस्तिया के कार्यालय से घर लौट रहा था, मैंने त्वेर्सकाया सड़क पर स्मिर्नोफ् को उसके पुराने— यदि मैं इस तरह कहूं कि सेनानी गिन्स्बुर्ग-साथी के साथ देखा। मुझे देख कर वे

ग्नेज़्दूनीकोव्स्की पेरेउलोक् की ओर मुड़ गये। और मैंने तुरत भाँप लिया कि कुछ तैयारी हो रही है और कुछ होने जा रहा है। लेकिन वे मेरे पास नहीं आये और न उन्होंने खुलकर मुझ से बात की।

विशिन्स्की—एक शब्द में, उसी समय तुम्हें पता लग चुका था कि वे किसी खुफ़िया-साज़िश में लगे हुए हैं।

रादेक्—मैंने देखा कि स्थिति गंभीर हो रही है और भाव किसी तरफ बहाये लिये जारहे हैं। लेकिन उन्होंने खुल कर नहीं बतलाया, क्योंकि १९२९ में त्रोत्स्की के साथ जो फूट हुई थी उसमें मेरे और त्रोत्स्की के बीच वैयक्तिक सम्बन्ध बहुत खराब हो चुका था। त्रोत्स्की समझता था कि त्रोत्स्किआइयों के फूट के कारण या बहुत प्रबल कारण मैं ही था। वे मुझ से बात करने में डरते थे और ख्याल करते थे कि यह खाई त्रोत्स्की और मेरे बीच फिर से सद्भाव स्थापित होने पर ही मिट सकती है। और जहां तक देखा जा सकता था, मालूम होता है, उन्होंने त्रोत्स्की को सूचित किया और मेरे मनोभाव को जानते हुए उससे कहा कि तुम्हीं पहला कदम आगे बढ़ाओ जिसमें कि हमें सम्बन्ध स्थापित करने में असानो हो।

विशिन्स्की—परिणामतः, सूत्ररूप में इस प्रकार कहा जा सकता है जब कि तुमने भांपा कि म्रचकोव्सकी और स्मिर्नोफ

कुछ तैयारी कर रहे हैं तभी उन्होंने भी देखा कि तुम्हारे मन में भी कुछ उथल-पुथल हो रही है ?

रादेक्—उन्होंने देखा कि मैं उदास सा हूं और मानसिक अवस्था किसी निश्चित कार्रवाई के रूप में परिणत होगी।

विशिन्स्की—दूसरे शब्दों में तुम भी कुछ हद तक किसी तरह की कार्रवाई के क्षेत्र बन चुके थे ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—अब यह स्पष्ट है कि क्यों त्रोत्स्की के साथ तुम्हारा पत्र व्यवहार शुरू हुआ। यह १९३२ में था न ?

रादेक्—हां, फरवरी १९३२ में मुझे त्रोत्स्की का एक पत्र मिला।

विशिन्स्की—त्रोत्स्की ने तुम्हें क्या लिखा था ?

रादेक्—त्रोत्स्की ने लिखा कि मुझे जो सूचना मिली है, उससे मालूम हुआ है कि तुम इस बात से सहमत हो गये हो कि मैं सीधे रास्ते पर था, और त्रोत्स्कियाई मांगों को बिना स्वीकार किये यह नीति खतरे में ले जायगी। त्रोत्स्की ने यह भी लिखा कि चूंकि तुम प्रयत्नशील व्यक्ति हो, इसलिए मुझे विश्वास है कि तुम फिर संघर्ष में योगदान करोगे।

विशिन्स्की—क्या त्रोत्स्की ने तुम्हें संघर्ष में पड़ने के लिये निमंत्रित किया ?

रादेक्—पत्र के अन्त में त्रोत्स्की ने प्रायः निम्न प्रकार से लिखा था: "पिछले समय के अनुभव का तुम्हें ख्याल होना

चाहिए और समझना चाहिये कि अतीत की ओर लौटा नहीं जा सकता, संघर्ष ने एक नया रूप धारण किया, और इस रूप का नया आकार यही है कि या तो सोवियत् संघ के साथ हम नष्ट हो जायं या हम नेताओं के हटाने का प्रश्न उठायँ।" हत्या वाद का शब्द नहीं प्रयुक्त हुआ था लेकिन जब मैंने यह वाक्य पढ़ा "नेताओं को हटाना", तो मेरे लिए साफ था कि त्रोत्स्की के मन में क्या था।

विशिन्स्की—क्या तुमने उस प्रश्न का उत्तर दिया?

रादेक्—नहीं।

विशिन्स्की—तुमने कैसे इस पत्र का स्वागत किया?

रादेक्—त्रोत्स्की ने मुझे सूचित किया कि त्रोत्स्की-पंथियों ने ही नहीं बल्कि ज़िनोवियेफ़्-पंथियों ने भी फिर से निश्चय कर लिया है कि संघर्ष का आरम्भ करना चाहिये; और दोनों पक्षों के मेल की बात चल रही है। मैंने यह ख्याल कर के जवाब नहीं दिया कि इस विषय पर और बारीकी के साथ विचार करना चाहिए। प्रायः अक्तूबर या सितम्बर १९३२ के अन्त में संघर्ष के रास्ते पर लौटने का निश्चय कर लिया।

विशिन्स्की—क्या तुमने इस पर बारीकी से विचार किया; क्या तुमने किसी से परामर्श लिया?

रादेक—मैंने किसी से परामर्श नहीं लिया।

विशिन्स्की—फिर से संघर्ष को आरम्भ करने के निश्चय के बाद क्रियात्मक रूप से तुमने क्या किया?

रादेक्—मैं जानता था कि संगठन के नेता मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं और वे कोई कदम उठानेवाले हैं; त्रोत्स्की ने जो कुछ मुझे लिखा है उसकी सूचना उसने उन्हें भी दी होगी, और मैं उनसे मिलने की आशा रखता था। सचमुच मैं ईवान्, निकितिच्, स्मिरतोफ् या सेर्गेइ विताल्येविच् मृच्कोव्स्की के आने की प्रतीक्षा में था।

विशिन्स्की—क्या वे तुम्हारे पास आये?

रादेक्—मैं जानता था कि उनमें से एक मेरे पास आयगा और वे आये और मैंने उनके प्रश्न का उत्तर 'हां' में दिया।

विशिन्स्की—उसके बाद क्या हुआ?

रादेक्—म्रचकोव्स्की के साथ मेरी बात हुई और उससे पूछा: कहां और किस प्रकार तुम काम करना चाहते हो? यह बात १६३२ के अक्तूबर के अंत या नवम्बर के आरंभ की है।

विशिन्स्की—म्रच्कोव्स्की ने तुम से प्रश्न पूछे और तुमने उससे?

रादेक्—उसने मुझ से पूछा: क्या तुम्हें बूढ़े का एक पत्र मिला?

बिशिन्स्की—कौन सा बूढ़ा?

रादेक्—उसका मतलब त्रोत्स्की से था। उसने मुझ से पूछा:— तुमने क्या निश्चय किया? मैंने उत्तर दिया; मैंने क्या

निश्चय किया, यदि तुमको इसका पता न होता तो तुमने मुझसे यह प्रश्न न पूछा होता। मैंने निश्चय किया है तुम्हारे साथ चलने का। तब मैंने उससे पूछा कि संघर्ष का किस तरह का आकार तुम्हारे सामने है और ज़िनोवियेफ्-पंथियों से मिलने के बारे में कितनी प्रगति हुई है।

विशिन्स्की—म्रचूकोव्स्की ने क्या उत्तर दिया ?

रादेक्—उसने बिलकुल स्पष्ट उत्तर दिया कि संघर्ष हिंसात्मक रूप धारण कर चुका है और इस नीति को पूरा करने के लिए हम ज़िनोवियेफ्-पंथियों के साथ मिल गये हैं और आरंभिक काम का आरम्भ करने जा रहे हैं।

विशिन्स्की—क्या आरम्भिक काम ?

रादेक्- यह स्पष्ट था, चूंकि नया प्रोग्राम आतंकवाद के संबंध में था, इसलिए आरंभिक कार्य था, आतंकवादी कर्मियों का संगठन और निर्माण। पीछे म्रच्ाकोव्स्की ने मुझ से कहा; चूंकि संघर्ष बहुत ही सख्त होगा और कुर्बानियां अत्यन्त अधिक, इसलिए कुछ कर्मियों को हमें पराजय के वक्त-गिरफ्तारी के समय-के लिए बचा रखना होगा। उसने यह भी कहा, यही कारण है जो हमनें तुम्हें प्रथम केन्द्र में शामिल नहीं किया-उसने यह मेरे, प्यात‍ाकोफ् और सेरेब्र्याकोफ् के सम्बन्ध में कहा।

विशिन्स्की—और क्या उसने सोकोल्निकोफ् के बारे में भी कुछ कहा ?

रादेक्—उसने उसके बारे में पीछे कहा। उस अवसर पर बात त्रोत्स्की-पंथियों के सम्बन्ध में हुई। प्रथम वार्तालाप में उसने निम्न विचार प्रकट किये : तुम्हें उन सभी लोगों से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना होगा जो कि तुम्हारे पास मिलने आया करते हैं, और उसने कहा :—द्राइत्जेर को मैंने तुमसे मिलना मना कर दिया।

विशिन्स्की—और क्या वह इस अवस्था में था कि द्राइत्जेर् को तुमसे मिलना बन्द कर देता ?

रादेक्—हम उसे अपना प्रबन्धक, प्रमुख, संगठनकर्ता मानते थे, यद्यपि वह राजनीतिज्ञ न था, लेकिन वह ऐसा व्यक्ति था जो निर्देश देता और बतलाता कि कुछ व्यक्तियों को हमें अभी बचाकर रखना होगा। हमारा वार्तालाप यहीं नहीं खतम हुआ। पहली योजना थी कि जैसे ही पहला दल पकड़ा जाय, हमलोग कार्यक्षेत्र में चले आयें।

विशिन्स्की—१६३२ में नयी मुलाकात के बाद क्या म्रच्कोव्स्की से तुम्हारी और भी मुलाकातें हुईं ?

रादेक्—मैं उससे बसन्त और शरद् में मिला जब कि वह सरकारी काम के बहाने मास्को आया। ऐसा मौका उसे अक्सर मिलता था और वह इससे फायदा उठाता था।

अपनी इन मुलाकातों के दौरान में वह परिस्थिति से मुझे आगाह करता रहता था। अप्रेल १६३३ में वह फिर आया।

विशिन्स्की—क्या उसने बकायेफ़् और राहन्गोल्ट के सम्बन्ध में कुछ कहा ?

रादेक्—जब पीछे उसने दल के संगठन की योजना का खाका बनाया, उस वक्त उसने कहा कि हमारे दल में आतंकवादी संगठन का प्रधान नेता द्राइत्जेर् है, और जिनोवियेफी दल में बकायेफ्।

विशिन्स्की—आतंकवादी संगठन का प्रधान नेता ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—क्या तुम्हें संर्ग्येइ मिरोनोविच् किरोफ़् की हत्या की तैयारी के बारे में कुछ मालूम था ?

रादेक्—जब हम प्रस्तावित आतंकवादी संघर्ष पर विचार करते थे तो सवाल उठता कि सब से पहले किसके खिलाफ इसका प्रयोग किया जाय।

विशिन्स्की—यह १६३२ की बात थी ?

रादेक्—जब प्रश्न उठा कि किसके खिलाफ आतंकवाद का प्रयोग हो तो निश्चय हुआ कि सोवियत् संघ के कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत् सरकार के प्रमुख नेताओं के खिलाफ इसका प्रयोग हो। यद्यपि उस बातचीत के

समय कोई एक नाम नहीं लिया गया तो भी मैं अच्छी तरह से जानता था कि वे नेता कौन हैं। इसमें सन्देह की कोई गुंजायश नहीं कि उक्त कार्रवाई स्तालिन और उसके नजदीक सहकारी किरोफ्, मोलोतोफ्, वोरोशिलोफ् और कगानोविच् के खिलाफ थी।

विशिन्स्की—क्या यह तुम्हारा अनुमान था या उन लोगों ने ऐसा कहा ?

रादेक्—इसे कहने की आवश्यकता न थी क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि कौन पार्टी और सोवियत् सरकार का नेता है।

विशिन्स्की—मैं प्रार्थना करता हूँ कि अभियुक्त रादेक् के सामने ४ दिसम्बर की लिखी गई उसकी गवाही (जिल्द ५, पृष्ठ १०६) पेश की जाय। वहां इस प्रश्न का कोई भिन्न उत्तर दिया गया है।

मुझे इसकी पढ़ने की इजाज़त दीजिये। मैं इसे लेख की एक प्रामाणिक नकल से पढ़ रहा हूँ—

"जिनोवियेकी और त्रोत्स्कियाई दल की कार्रवाइयों के सम्बन्ध में म्रच्कोव्स्की ने भिन्न भिन्न समयों में जो सूचना मुझे दी वह वैसी ही थी जो कि मुकद्दमे की पेशी से ज़ाहिर हुई। उसने मुझसे कहा ....." "उसने" से यहां किससे मतलब है ?

रादेक्—म्रच्कोव्स्की से।

विशिन्स्की--"बकायेफ् और राइनगोल्ट की कार्रवाइयों, तथा मास्को में स्तालिन् और लेनिनग्राद् में किरोफ् की हत्या की तैयारी के बारे में।"

रादेक्—लेकिन मैं ने कहा :— बहुत सी सभाओं में। और वहां कहा है-बहुत सी सभाओं में। अब तुम मुझसे पूछ रहे हो कि नवम्बर १६३२ के वार्तालाप में क्या कहा है, और मैं ने उस बात के बारे में कहा जो कि पीछे के वार्तालाप में कही गई है।

विशिन्स्की—क्या तुम्हें म्रचूकोव्स्की से पार्टी और सरकार के नेताओं की हत्या की तैयारी के बारे में मालूम हुआ?

रादेक्—अप्रेल, १६३३ में। म्रच्कोव्स्की··

विशिन्स्की—क्षमा करो, नियमपूर्वक चलो— तुम इस वयान को स्वीकार करते हो?

रादेक्—कि मैं जानता था, एक हत्या की तैयारियां हो रही थीं?

विशिन्स्की--जो कुछ मैंने अभी तुम्हारे सामने कहा-"उसने (अर्थात् मूचूकोव्स्की ने) मुझ से (अर्थात् तुम से) बकायेफ् और राइन्गोल्ट की कार्रवाइयों तथा मास्को में स्तालिन् और लेनिनग्राद् में किरोफ् की हत्या की तैयारी के बारे में कहा"। क्या तुम स्वीकार करते हो कि मूचूकोव्स्की ने तुम से यह कहा?

रादेक्—यदि तुम उस ख़ास मीटिंग के बारे में नहीं पूछते

तो मैं इसे स्वीकार करता हूं।

विशिन्स्की—मैं नहीं जानता कि वह या दूसरी कौन सी मीटिंग का यहां जिक्र है।

रादेक्—मैं इसे स्वीकार करता हूं।

विशिन्स्की—तो जान पड़ता है कि यह बात मृचूकोव्स्की ने नवम्बर १६३२ में नहीं कहा तो कब कहा ?

रादेक्—किरोफ़् के सम्बन्ध में बातचीत इस घटना से सम्बन्ध रखती है—अप्रेल, १६३३ में मृचकोव्स्की ने मुझ से पूछा कि क्या तुम लेलिनग्राद् में किसी ऐसे भोत्स्किपाई का नाम ले सकते हो जो एक आतंकवादी टोली का संगठन कर सके।

विशिन्स्की—किसके खिलाफ़ ?

रादेक्—किरोफ़् के खिलाफ तो।

विशिन्स्की—तुम्हारी सहायता मांगी ?

रादेक्—किसी व्यक्ति का नाम देना सहायता है, यह स्पष्ट है।

विशिन्स्की—और तब ?

रादेक्—मैंने ऐसे व्यक्ति का नाम लिया।

विशिन्स्की—नाम दिया ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—वह कौन था ?

रादेक् —प्रिगोजिन् ।

विशिन्स्की—प्रिगोजिन ? जो कि एक हत्यारा खोज लाये ?

रादेक् —हां ।

विशिन्स्की—यह अप्रेल, १९३३ की बात है ?

रादेक् —हां ।

विशिन्स्की—और किरोफ् कब मारे गये ?

रादेक् —किरोफ़् दिसम्बर, १९३४ में मारे गये ।

विशिन्स्की—अर्थात् इस जघन्य अपराध के होने से महीनों पहले तुम, रादेक्, तुम जानते थे कि त्रोत्स्कियाई किरोफ़् की हत्या की तैयारी कर रहे हैं ?

रादेक्—मैं और भी कह सकता हूँ। मैं जानता था कि हत्या की एक आम तैयारी हो रही है, और जिनोवियेफ़ियों द्वारा भी, क्योंकि यह तै हुआ था कि नेताओं—किरोफ़् अत्यन्त प्रधान नेताओं में से एक था, और जिनोवियेफियों का प्रधान केन्द्र था पत्रोग्राद्-पर हमला किया जाय, यह स्पष्ट था कि जिनोवियेफियों का आतंकवादी संगठन किरोफ् पर आक्रमण करना चाहता था। और भी म्रच्कोव्स्की ने उस वक्त मुझसे कहा था कि लेनिन्ग्राद् में हम लोगों को कुछ नहीं करना है; जिनोवियेफ़ी वहां तैयारी कर रहे हैं और हमें भी अपनी एक टोली वहां रखनी चाहिये। इस सम्बन्ध में उसने

कितना ही मुझ से कहा, लेकिन यह नहीं कहा कि कब और क्या होगा। उसने सिर्फ इतना ही कहा कि लेनिनग्राद् में जिनोवियेफी एक हत्या की तैयारी कर रहे हैं। उसने यह कहा और मैं बिल्कुल स्पष्ट और बिना किसी संदेह के जानता था कि उसका सम्बन्ध किरोफ् से है।

विशिन्स्की—जब तुम यहां कह रहे हो कि म्रचूकोव्स्की ने बकायेफ् की कार्रवाई के बारे में सूचना दी तो इससे तुम्हारा क्या मतलब है?

रादेक्—उसने मुझ से यह नहीं कहा कि बकायेफ् ने व्यक्तिगत तौर से किरोफ् की हत्या का संचालन किया, किन्तु उसने जिनोवियेफियों की आतंकवादी सभी टोलियों के नेता के तौर पर इसका नाम लिया। मैं नहीं जानता था कि बकायेफ् इस हत्या को करेगा या किसी दूसरे के ऊपर इसका भार रक्खेगा लेकिन मैं यह स्पष्ट जानता था कि बकायेफ् के बिना हत्या की तैयारी नहीं हो सकती।

विशिन्स्की—और मास्को में?

रादेक्—द्राइत्जेर से मुझे जिनोवियेफियों के बारे में मालूम हुआ और यह भी मालूम हुआ कि मास्को में राइन्गोल्ट नेता है। जब द्राइत्जेर म्रचकोव्स्की के कहने पर सब बातों की ठीक तौर पर, सूचना देने के लिये आया तो मैंने उससे पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? यह या वह?

विशिन्स्की—यह या वह से तुम्हारा क्या मतलब है ?

रादेक्—उसने बतलाया कि त्रोत्स्कियाइयों ने अब तक क्या किया और यह भी कहा कि अब कर्मियों के निर्माण की तैयारी हो रही है। वे लोग कई टोलियां संगठित कर रहे हैं और उनका विचार है कि जिनोवियेफियों के संघर्ष में शामिल होकर संगठन के समाप्त होने पर इन टोलियों का उपयोग किया जाय। मैंने उससे पूछा कि जिनोवियेफियों की तरफ से मास्को में आरम्भिक कार्य का नेतृत्व कौन करेगा। उसने कहा कि जिस तरह हमारी तरफ का नेतृत्व मृच्कोव्स्की के हाथ में है, उसी तरह जिनोवियेफियों की तरफ प्रमुख नेतृत्व बकायेफ़ के हाथ में है। मास्को का काम राइनगोल्ट के जिम्मे है।

विशिन्स्की—इस प्रकार इन आतंकवादी टोलियों का तुम्हें पूर्ण परिचय प्राप्त था ?

रादेक्—ठीक, केन्द्र के सदस्य के तौर पर मुझे पूर्ण परिचय था।

विशिन्स्की—और तुम्हें इस बात की भी सूचना थी कि हत्या की क्रियात्मक तैयारी की जा रही है ?

रादेक्—मुझे बहुत पहले ही से मालूम था कि कर्मियों का ज़मावड़ा, उनका संगठन और शिक्षा—त्रोत्स्कियाई—जिनोवियेफी समूह की ओर से भाग लेने वालों की तरह से—क्रियात्मक तैयारी हो रही है।

विशिन्स्की—और यह भी आतंकवादी कामों—जिनमें से एक किरोफ् की हत्या थी—में भाग लेने वालों की तौर पर ?

रादेक्—और आतंकवादी कार्यों में भी जिनमें कि एक था किरोफ् की हत्या।

विशिन्स्की—किससे तुम उस समय मिले थे और तुम्हारे वार्तालाप का विषय क्या था ?

रादेक्—हमने तै किया था कि जहाँ तक हो सके हमलोग बहुत कम आपस में मिलें। इसलिए त्रोत्स्कियाइयों में जो प्रथम के सदस्य थे, उनमें सिर्फ मूच्कोव्स्की था जिससे मैं मिला करता था। ईवान् निकितिच्, स्मिर्नोफ् निकितिच् १९३५ के आरंभ में, मैं समझता हूं, जनवरी में गिरफ्तार हुआ। तेर्वगान्याम् से मैं १९३२ या १९३१ से नहीं मिला था, और आम तौर से तेर् को मुझ से मिलने की इजाजत नहीं थी क्योंकि उसके परिचितों की संख्या अधिक थी, और डर था कि तेर् के कारण कहीं मेरा भेद न खुल जाय। जिनोवियेफी केन्द्र के सदस्यों में से १९३२ तक कभी-कभी मैं जिनोवियेफ् और कामनेफ् से मिल सका था। १९३३ में आंदोलन में सम्मिलित होने के बाद मैंने उनसे बिल्कुल मुलाकात न की। उस समय वे भाषण-मंच के विरोध से सम्बन्ध रखने के कारण निर्वासित थे। निर्वासन से लौटने के बाद जिनोवियेफ् १९३४ में दो बार मुझ से मिलने

आया। और कामानेफ् को मैंने बोलशेविक के कार्यालय में एक बार देखा। लेकिन मैं उन्हें सिर्फ सार्वजनिक स्थान, या हमारे सम्पादकीय कार्यालयों, और पुरानी पुस्तकों की एक दूकान—जिससे कि हम लेखकों का सम्बन्ध था—की तरफ़ से दी गई दावत में मिला था। मैंने कामानेफ़ के साथ इन बातों पर कभी वार्त्तालाप नहीं किया यदि वर्ग में जिनोवियेफियों के भाग के साथ मेरे भी सम्बन्ध के बारे में पूछा जाय, तो किरोफ् की हत्या के पहले जिनोवियेफ् के साथ मेरी तीन बार मुलाकात हुई। और १६३४ के ग्रीष्म में ग० ड० स्कोल्निकोफ्,—जो कि प्रथम केन्द्र का सदस्य न होकर सुरक्षित केन्द्र का सदस्य था—से मेरी एक मुलाकात हुई थी। यदि त्रोत्स्कियाई सुरक्षित केन्द्र के अपने सहयोगियों के साथ मुलाकात के बारे में पूछा जाय तो प्याताकोफ़् से मैं मिला था दिसम्बर १६३२ में, १६३३ के अन्त में; जुलाई ग्रीष्म १६३४ में; १६३५ में जुलाई और दिसम्बर में और १६३६ में जनवरी में। सेरेब्रयाकोफ् से १६३५, और १६३६ में मिला। सोकोल्निकोफ् से मेरी तीन बार मुलाकात हुई।

विशिन्स्की—और इसे प्रमाणित समझना चाहिये कि तुम्हें आतंकवाद का पता म्रचूकोव्स्की से मिला था?

रादेक —हाँ।

विशिन्स्की—यह त्रोत्स्की के पत्र के पाने से पहले की बात है ?

रादेक्—हां, यह त्रोत्स्की के पत्र पाने से पहले की बात है। त्रोत्स्की का पत्र १९३२ की फरवरी या मार्च में मिला था।

विशिन्स्की—अर्थात् फरवरी १९३२ में तुम्हें त्रोत्स्की का एक पत्र मिला था जिसमें उसने लिखा था कि छुट्टी लेनी चाहिये ·· ।

रादेक्—सामने से हटा देना चाहिये।

विशिन्स्की—····हटा देने की जरूरत है; जिसका अभिप्राय आतंकवाद तुम्हें मालूम हुआ ?

रादेक्—ठीक ।

विशिन्स्की—यदि आरंभिक अन्वेषण (तहकीकात) की बातें सच हैं तो १९३२ में तुम जेनेवा में थे ?

रादेक—हाँ।

विशिन्स्की—जेनेवा में क्या किसी से तुम्हारी मुलाकात हुई और इस प्रकार के विषय पर तुमने बातचीत की ?

रादेक्—जेनेवा में मैं सिर्फ एक ही त्रोत्स्कियाई से मिला, और वह था रोम्भ्। वह त्रोत्स्की का पत्र मेरे पास लाया था।

विशिन्स्की—अर्थात् यह त्रोत्स्की का पत्र तुम्हें जेनेवा में मिला था ?

रादेक्— हाँ।

विशिन्स्की—फरवरी १६३२ और वसन्त इन दो समयों का सामञ्जस्य कैसे स्थापित होगा ?

रादेक्—जेनेवा में फरवरी में ही वसन्त आरंभ होने लगता है। और इसलिये मुझे वसन्त के समय का ख्याल आया। यह मार्च का महीना हो सकता है।

विशिन्स्की—इस प्रकार हमें इन सभी बातों को ठीक समझ लेना चाहिए। त्रोत्स्की का पत्र तुम्हें जेनेवा में १६३२ के वसन्त में रोम्भ् द्वारा मिला। क्या त्रोत्स्की का यह पत्र रोम्भ् द्वारा अचानक मिला ?

रादेक्—रोम्भ् और त्रोत्स्की के पारस्परिक सम्बन्ध के बारे में व्यक्तिगत तौर से उस वक्त तक मैं कुछ नहीं जानता था। रोम्भ् को मैं १६३२ से पहचानता था। पार्टी के संघर्ष के समय में, जबकि त्रोत्स्कियाइयों ने विरोधी दल का संगठन किया, उस समय आम तौर पर रोम्भ् त्रोत्स्कियाई के साधारण काम में कर्मशील नहीं था। चीन के प्रश्न पर वह हमलोगों के साथ था। वह वैदेशिक नीति का एक विशेषज्ञ हैं; सुदूर-पूर्व के सम्बन्ध में उसकी खास दिलचस्पी है। कोमिन्तर्न (अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संघ) से चीनी प्रश्न के बारे में मतभेद होने के कारण वह इस प्रश्न पर वहुत दत्तचित्त था, और चूंकि हम वैदेशिक विभाग के काम में घनिष्ठ सम्पर्क रखते थे, मेरा उससे

अत्यन्त नजदीक का सम्बन्ध था, मुझ से ही वह स्थिति का परिचय पाता था। जब मैं निर्वासन से लौटा, उसके एक वर्ष बाद, रोम्भ् जो टोकियो गया हुआ था, मास्को आया। हमने पार्टी के विरुद्ध के संघर्ष के बारे में कोई बात अच्छी तौर से नहीं कही, किन्तु मैंने उससे कहा कि देश की स्थिति उथल-पुथल से भीषण हो गई है और यह भी बतलाया—"वोलोधा, हमें फिर शायद कर्मशील बनना होगा।"

विशिन्स्की—यह १६३१ की बात है?

रादेक्—१६३१ में शायद। इसलिये रोम्भ् ने अपने इजहार में बिलकुल ठीक कहा है कि जब उसे पत्र ले जाने के लिए कहा गया तो मैंने समझा कि रादेक् के पास पत्र पहुंचा कर मैं उसकी इच्छा का अनुसरण करूंगा। और उसका यह भी कहना ठीक है कि मेरे विरोधी दल में वापिस जाने की जवाबदेही रादेक् पर है। मैंने ही उसे सोवियत जेल में पहुँचाया।

विशिन्स्की—दूसरी टोलियों की आतंकवादी कार्रवाइयों के बारे में तुम्हें क्या मालूम है?

रादेक्—मैं आरंभिक घटना काल की तिथियों के बारे में ठीक नहीं कह सकता। मैं समझता हूं कि तुम्हारा प्रश्न है: मैं सम्पूर्ण काल के बारे में क्या जानता हूं? मैं टोलियों

के बारे में बतलाऊंगा । १६३३-३४ में मैं टोलियों के अस्तित्व और मास्को में कितनी ही टोलियों के बारे में अनिश्चित ज्ञान रखता था। उनका नेता ड्राइत्ज़ेर् था, लेकिन मैं उनके पदाधिकारियों के बारे में नहीं जानता था। यह आरंभिक अवस्था थी। मास्को के अतिरिक्त १६३४ में मुझे एक टोली के बनने का पता मिला था जिसे कि हम लोग आपस में "ऐतिहासिक या पगली" टोली कहकर पुकारते थे। यह टोली इतिहासज्ञों की थी, जिनका कि नेता फ्रीद्लान्द था। १६३४ में ड्राइत्जेर् के सहायक गयेव्स्की ने मुझे बतलाया कि कुछ गंभीर व्यक्तियों की एक टोली संगठित हो रही है। यह टोली अभी कार्यक्षेत्र में नहीं उतरेगी; हमलोगों के वर्ग के भेद खुल जाने पर वह कार्यक्षेत्र में आयेगी।

जिनोवियेफ़ियों का एक संगठन लेनिनग्राद में है यह मैं जानता था।

त्रोत्स्कियाइयों के संगठन के बारे में मैं जानता था कि वहाँ ग्रिगोजिन् एक टोली बना रहा है, किन्तु मैं यह नहीं जानता था किनकी। जब १६३४ में उसने मुझे सूचना दी तो उसने मुझे तीन-चार नाम बतलाये थे, जो मेरे लिए कोई अर्थ नहीं रखते थे, और मैं कह नहीं सकता कि वे कौन थे। आरंभिक तहक़ीक़ात के समय, मुझे एक का स्मरण आया था जिसका कि

मैंने जिक्र किया था। उक्रइन् के बारे में युरी ल्युनिदोविच प्याताकोफ् ने मुझ से कहा था कि उक्रइन् केन्द्र—उसने नाम लिया था कोत्स्युविन्स्की, गोलुबेन्को और, मैं समझता हूं, लोगिनोफ्—एक आतंकवादी टोली बना रहा है, जो कि साम्यवादी दल और उक्रइनी सोवियत् सरकारके नेताओं के खिलाफ कार्रवाई करेगा।

सिबेरियाई टोली के बारे में, प्यातकोफ् ने मुझे बतलाया कि वह वहाँ बनायी जा रही है। मैं समझता हूं, इस सम्बन्ध में मुरालोफ् का नाम लिया था।

इसके अतिरिक्त उसने यह भी कहा था, कि तुला में कोई आतंकवादी टोली बनी है, या बनाई जा रही है।

विशिन्स्की—क्या प्यातकोफ् ने नाम लिये थे?

रादेक्—उसमे नाम और नेताओं को नहीं बतलाया, किन्तु यह कहा, कि इस टोली का सम्बन्ध दित्यातेवा से है। खासकर, बहुत पीछे १९३५ में मैंने ब्येलोबोरोदोफ् से रोस्तोफ़—ऊपर दोन में एक टोली के बनने की सूचना पाई। यह भी मालूम हुआ, कि म्दिवानी ने एक टोली बनाई है।

१९३५ में मैंने जिनोवियेफ् के दल के बारे में सुना, यह जक्स ग्लादून्येफ की टोली थी, जिससे कि मास्को में मेरे सहायक तिवेल् का सम्बन्ध था। सोमकोलूनिकोफ़् के कहने पर, उसने आकर मुझ से कहा, कि मेरा सम्बन्ध उस टोली से

है, और मैं आपके कार्यालय में काम कर रहा हूं, इस प्रकार मैं आपको सख्त खतरे में डाल रहा हूं, उसने मुझ से यह भी कहा। कि यह टोली मौजूद है, मेरा उससे सम्बन्ध है, यद्यपि बाहरी तौर से वह पेत्रोग्राद में टूट गई है, किन्तु अब उसका कार्यक्षेत्र मास्को में स्थानान्तरित हो गया है, जहाँ पर कि वह पार्टी और सरकार के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाई की तैयारी में लगी है। जैसा कि उसने कहा, पहिले पहल उन्होंने केन्द्रीय समिति (मंत्रिमंडल) के भवन ही पर दाँव लगाना चाहा था। मैंने जब उससे कहा, कि यह सरासर पागलपन है, तो वह मेरे साथ सहमत हुआ, और बोला कि साथ ही साथ हम केन्द्रीय समिति (मंत्रिमंडल) के बाहर भी निगाह रखते हैं और सरकार तथा पार्टी की केन्द्रीय समिति के सदस्यों के आने-जाने के रास्ते पर भी ख्याल रखते है।

विशिन्स्की—बहुत सी टोलियां ?

रादेक्—हाँ। मैं उन सभी के बारे में नहीं जानता था। इस काम से मेरा सीधा ताल्लुक नहीं था। किन्तु यदि तुम राजनैतिक, नैतिक और अधिकार-क्षेत्र सम्बन्धी जवाबदेही के बारे में पूछते हो तो सभी टोलियों का जवाबदेह मुझे कह सकते हो, बल्कि उनके लिए भी जवाबदेह जिनके बारे में मैं नहीं जानता।

इसका अर्थ यह है कि जिन संस्थाओं द्वारा केन्द्र सब

काम करता था उसके लिए मैं जिम्मेवार जरूर हूं।

विशिन्स्की—क्या तुम्हे उस आतंकवादी मंडली का ज्ञान था जो कि तुला में काम करता था ?

रादेक्—मैं उसके अस्तित्व का ज्ञान रखता था।

विशिन्स्की—क्या तुम्हे मालूम था कि वह आतंकवादी दल की तौर पर काम करती थी ?

रादेक्—जरूर।

विशिन्स्की—और कि वह हमारी पार्टी और सरकार के नेताओं की जान पर हमला करने की तैयारी में थी ?

रादेक—क्यों नहीं, साफ तौर से।

विशिन्स्की—यह तुम्हें स्पष्ट था ?

रादेक्—यही तो है जिसमें कि एक आतंकवादी टोली लगी रहती है।

विशिन्स्की—और तुम्हें यह मालूम था ?

रादेक्—जरूर।

विशिन्स्की—तुम ने यह बात किससे सुनी ?

रादेक्—प्याताकोफ् से। उसने व्यक्तियों के बारे में कुछ नहीं कहा किन्तु यह बतलाया कि तुलामें दित्यातेवा के नेतृत्व में एक टोली है।

विशिन्स्की—इसलिये यह तुमने प्याताकोफ् से सुना ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और ऊराल् में ?

रादेक्—ऊराल्-टोली के बारे में मुझे कुछ याद नहीं ; मैं कोई नाम नहीं बतला सकता। यूलिन् की टोली के बारे में मैंने सुना था।

विशिन्स्की—और पश्चिमी सिबेरिया में ?

रादेक्—पश्चिमी सिबेरिया में। मुरालोफ़् का नाम नेताओं में लिया जाता था।

विशिन्स्की—उसका नाम तुम्हें किससे मालूम हुआ ?

रादेक्—प्याताकोफ़् से।

विशिन्स्की—ब्येलोवोरोदोफ़् की टोली के बारे में ?

रादेक्—ब्येलोवोरोदोफ़् की टोली के अस्तित्व के बारे में मुझे दो जरियों से मालूम हुआ था : प्याताकोफ् और येव्गेनि प्रेओब्राजे़न्स्की से।

विशिन्स्की—मास्को में ज़ाक्स-ग्लादन्येफ़्-टोली के बारे में ?

रादेक्—इसके बारे में मुझे पहले पहल तिवेल् से मालूम हुआ और पीछे सोकोलनिकोफ़् से वार्तालाप के समय उसके अस्त्वित्व का पता मिला।

विशिन्स्की—और अन्त में प्रिगोज़िन्-टोली ?

रादेक्—लेनिनग्राद् की प्रिगोज़िन्-टोली। मैंने इसके अस्तित्व के बारे में उस वक्त सुना जब कि अचकोव्स्की से कहने पर द्राइत्ज़ेर् को उसके पास भेजा। प्रिगोज़िन् के आने पर

मैंने उससे पूछा : वहां के आदमियों से तुमने क्या काम लिया ? उसने जवाब दिया कि मैंने त्रोत्स्की-पंथी जाइदेल् से उनका सम्बन्ध करा दिया। इसी जाइदेक् को फीद्लान्द के साथ सम्बन्ध जोड़ने की मैंने हिदायत दी थी।

विशिन्स्की—प्रिगोज़िन टोली का संचालन कौन करता था ?

रादेक्—चूंकि वह कार्यक्षेत्र में नहीं उतरा और उसका अस्तित्व दोही चार महीने रहा। इस सारे समय में वे सिर्फ नेतृत्व के प्रश्न पर बातचीत करते रहे और उनके भीतर कभी कार्य करने के तरीके का सवाल नहीं उठा।

विशिन्स्की—इस संगठन की जिम्मेवारी किसके ऊपर थी ?

रादेक्—इस टोली के लिये प्रिगोजिन् हमारे पास जिम्मेवार था।

विशिन्स्की—इस टोली के संगठन का जिम्मेवार कौन था ?

रादेक्—प्रिगोज़िन्।

विशिन्स्की—और प्रिगोज़िन् किसके मातहत था ?

रादेक्—प्रिगोज़िन् द्राइत्ज़ेर के मातहत था। लेकिन द्राइत्ज़ेर् उससे कभी नहीं मिलसका ; यदि जरूरत होती तो मैं उसे आदेश देता।

विशिन्स्की—यदि तुम आदेश देते हो तो तुम्हीं नेता ठहरे।

रादेक्—यदि मैं आदेश देता हूं तो मैं नेता हूं ; किन्तु मैंने जो आदेश तब तक दिये थे, वे थे इस टोली के बनाने के बारे में। मुझे संचालन करने का मौका नहीं मिला ; यदि

मिलता तो वैसा करता।

विशिन्स्की--तुमने टोली बनायी?

रादेक्—टोली प्रिगोजिन् ने बनाई थी।

विशिन्स्की--लेकिन प्रिगोजिन् का नाम तुमने पेश किया था?

रादेक्--हां।

विशिन्स्की—वही वह आदमी था जिसे कि तुमने इस काम के लिए भेजा था?

रादेक्—वही वह आदमी था जिसको कि मैंने एक आतंकवादी टोली बनाने के लिए तैयार किया था।

विशिन्स्की—क्या तुम्हारी हिदायत के मोताबिक उसने ज़िनोवियेफ़ियों के साथ सम्बन्ध जोड़ा था या म्रच्कोव्स्की या ड्राइत्जे.र की राय से?

रादेक्—क्या बात हुई, इसे मैं कह नहीं सकता। म्रच्कोव्स्की ने मुझसे पूछा किन्तु मैंने प्रिगोजिन् के बारे में बतलाया कि यह आदमी किसी भी गंभीर आतंकवादी काम अथवा उसके पूरा करने या संगठन के उपयुक्त नहीं है। वह टोली का शुरू से ही खंड-बंड कर देगा। लेकिन उसे आदमी ढूंढ़ने का काम करना होगा। फिर उन आदमियों की परीक्षा का प्रश्न उठा। इस पर हमलोग इस बात पर सहमत हुए कि ड्राइत्जे.र स्वयं इस टोली की परीक्षा करेगा या किसी आदमी द्वारा करायेगा। इसके बारे में न कभी

ड्राइत्जर ने मुझ से कुछ कहा और न ग्रच्कोव्स्की ने। जहां तक प्रिगोजिन् का सम्बंध है उसने १९३४ की गर्मियों में मुझे सूचित किया कि मुझे कुछ उपयुक्त आदमी मिले हैं किन्तु उन्हें कुछ काम करने को नहीं मिला क्योंकि मेरी तब्दीली मास्को हो गई।

यह असली परिस्थिति थी।

विशिन्स्की—लेकिन क्या इस सारे समय में तुमसे उसने आतंकवादी काम में सलाह ली?

रादेक्—हाँ मैंने १९३३, में उसे देखा। मैंने उसे हिदायतें दी १९३४ जबकि वह मास्को चला गया था। उसका यह कहना कि वह मुझ से १९३५ में मिला वैसा ही गलत है जैसा कि अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध में उसके वक्तव्य का तीन चौथाई अंश है।

विशिन्स्की—अच्छा आओ उन बातों को लें जो तुम्हारी राय में सच हैं। क्या तुमने १९३४ की शरद् में प्रिगोजिन्को देखा था?

रादेक्—यह अगस्त की बात है, किन्तु १९३४ में मैंने उसे एक ही बार देखा। उसने मुझ से कहा कि उसने आदमियों को तैयार करना शुरू कर दिया था और वह उन्हें चुन रहा था; किन्तु इसी बीच उसकी तब्दीली हो गई और वे लोग कुछ न कर सके।

विशिन्स्की—उसे यह क्यों जरूरी मालूम हुआ कि आदमियों को चुनने की बात को किसी दूसरे से न कह कर तुम से कहा ?

रादेक्—क्योंकि मैंने उसे आदेश दिये थे।

विशिन्स्की—तो तुमने प्रिगोज़िन को लेनिनग्राद् भेजा था ?

रादेक—वह लेनिनग्राद् में रहता था ?

विशिन्स्की—किसके साथ तुमने उसका सम्बन्ध कराया था ?

रादेक्—उसे मेरा सम्बन्ध कराना था न की मुझे उसका: मैंने उससे कहा, "केन्द्र का काम है, लेनिनग्राद में एक आतंकवादी टोली कायम करो । आदमियों को चुनो फिर मैं देखूं कि काम कैसे हो रहा है।

विशिन्स्की—इसलिए जहां तक काम के इस हिस्से का सम्बन्ध है इसकी तैयारी में प्रिगोज़िन के कार्य के संचालन की जिम्मेवारी किसके ऊपर है ?

रादेक्—मेरे ऊपर।

विशिन्स्की—तो इस आरंभिक कार्य का संचालन किसने किया ?

रादेक्— मैं, रादेक् ने ।

विशिन्स्की—शरद् में जब कि उसने तुमसे कहा कि मेरी तब्दीली मास्को हो गई, उस समय किस सम्बन्ध में तुम्हारी बातचीत हुई ?

रादेक्—यह कि मैं फ्रीद्लान्द् की टोली में बदल दिया जाऊंगा और कोशिश करूंगा कि उसका भेद खुलने न पाये। मैं

उसके सभी सदस्यों का नाम नहीं जानता था। मुझे तीन नाम बतलाये गये थे: फ्रीद्लान्द, वानग् और प्योन्त्-कोव्स्की। यह टोली सीधे गयेव्स्की की मातहत थी। उसने मुझसे कहा: "यह तुम्हारा रिजर्व रहेगा।" गयेव्स्की द्राइत्ज़ेर् का सहायक था।

विशिन्स्की—कौन था केन्द्र का प्रतिनिधि ?

रादेक्—म्रच्कोव्स्की के साथ सीधा सम्बन्ध था द्राइत्जे़र का।

विशिन्स्की—और इस टोली के किस आदमी का सम्बन्ध तुम्हारे विशेष केन्द्र के साथ था।

रादेक्--सम्बन्ध जोड़ने के लिए म्रच्कोव्स्की ने गयेव्स्की को मेरे साथ कर दिया था।

विशिन्स्की—इसलिये प्रिगोजिन् तुम्हारा प्रतिनिधि था और तुम जिम्मेवार हो?

रादेक्—हाँ।

विशिन्स्की—तुमने उसे नियुक्त किया, उसके साथ सम्बन्ध जोड़ा और उसे आतंकवादी काम में लगाया?

रादेक्—हाँ।

विशिन्स्की—क्या गयेव्स्की द्राइत्जे़र् की आतंकवादी टोली के साथ सम्बन्ध रखता था?

रादेक—मुझे व्याख्या करनी होगी।

विशिन्स्की—मुझे सीधा जवाब दो।

राद्देक्—द्राइत्ज़र् ने गयावेस्की को मेरे साथ इस ख्याल से से लगाया था कि द्राइत्ज़र् के साथ जरूरत होने पर पत्र व्यवहार किया जाय।

विशिन्स्की—इसलिये केन्द्र की ओर से वह तुम्हारे साथ सम्बन्ध रखता था। इस प्रकार सम्बन्ध का सूत्र था केन्द्र से प्रिगोजिन्, तुमसे गयेव्स्की। अतएव गयेव्स्की द्वारा तुम्हारा द्राइत्जे़र की टोली से सम्बन्ध था। इस प्रकार द्राइत्जे़र की टोली का संचालन भी तुम करते थे?

राद्देक्—नहीं। द्राइत्ज़र् म्रच्कोव्स्की के अधीन था और सम्बन्ध के अभिप्राय से गयेव्स्की मेरे साथ रक्खा गया था।

विशिन्स्की—उन्हें कौन हिदायत देता था?

राद्देक्—म्रच्कोव्स्की। मृच्कोव्स्की की गिरफ्तारी तक द्राइत्जे़र् मृच्कोव्स्की के अधीन था।

विशिन्स्की—और मृच्कोव्स्की की गिरफ्तारी के बाद तुमने द्राइत्ज़र के साथ सम्बन्ध स्थापित किया?

राद्देक्—मृच्कोव्स्की की गिरफ्तारी के बाद द्राइत्जे़र के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का कोई इन्तजाम मैंने नहीं किया। मैंने न उसे देखा और न उससे कोई सूचना पाई।

विशिन्स्की—किन्तु ये सम्बन्ध तुम्हारे द्वारा होकर जाने वाले थे?

रादेक्—हां, मेरे द्वारा।

विशिन्स्की—रिजर्व (संरक्षित) केन्द्र के एक सदस्य के तौर पर ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—तुम्हें फ्रीद्लान्द के साथ आतंकवादी टोली के एक सदस्य के तौर पर सम्बन्ध स्थापित करना था। इस समय सभी कार्रवाइयों का सचालन कौन करता था ?

रादेक्—यदि तुम पूछते हो कि कौन संचालन करता था, तो ठीक, यदि प्रिगोज़िन आरंभिक कार्य के सम्बन्ध में पूछता तो मैं उत्तर देता।

विशिन्स्की—इस काल में आरंभिक काम के लिये प्रिगोज़िन् को तुमसे हिदायत लेनी थी, और उसका दूसरे सदस्यों से सम्बन्ध न था ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—इसी लिये तुम कहते हो कि मैं स्वयं उसका और उसके आतंकवादी कार्यों का संचालन करता था ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और दूसरे किसके साथ तुमने आतंकवाद के विषय में वार्तालाप किया ?

रादेक्—मैंने इसके विषय में केन्द्र के उन सदस्यों के साथ भी वार्तालाप किया जिनके साथ कि मुझे मिलने का मौका मिला और जिनके साथ मुझे कुछ प्रश्न तै करने थे।

विशिन्स्की—किसी का नाम ले सकते हो ?

रादेक्—प्रेओब्राजन्स्की । स्मिल्गा भी था जिसके साथ कि साधारण तौर से बातचीत हुई थी ।

विशिन्स्की—और दक्षिण पक्षियों की टोली ?

रादेक्—इसके कहने की जरूरत नहीं कि बुखारिन् के साथ मेरा सम्बन्ध था ।

विशिन्स्की—इसके कहने की जरूरत नहीं ? दक्षिण-पक्षियों की टोली के साथ सम्बन्ध के बारे में कौन सा पक्का प्रमाण बतला सकते हो ?

रादेक्—मेरा सम्बन्ध सिर्फ बुखारिन् से था । तोम्स्की को मैंने सिर्फ १६३३ में देखा था जब कि उसने साम्यवादी पार्टी की आन्तरिक अवस्था का वर्णन कड़े शब्दों में किया था ।

विशिन्स्की—बुखारिन के साथ तुम्हारी क्या बात हुई थी ?

रादेक्—अगर तुम्हारा मतलब आतंकवाद के सम्बन्ध की बातचीत से है तो मैं उन्हें अच्छी तरह गिना सकता हूं । पहली बातचीत १६३४, जुलाई में हुई, जब कि बुखारिन् इजवेस्तिया में काम करने आया, उस समय मैं और वह एक दूसरे से सम्बन्ध रखनेवाले दो केन्द्रों के सदस्य के रूप में बात कर रहे थे । मैंने उससे पूछा : "क्या तुमने आतंकवाद का रास्ता पकड़ा" ? उसने कहा : "हां" । मैंने पूछा कि कार्रवाई का संचालन कौन कर रहा है तो उसने

उगलानोफ् और अपना (बुखारिन् का) नाम लिया। बातचीत में उसने मुझ से कहा कि विश्वविद्यालय के युवकों में से कार्यकर्त्ता तैयार करने की आवश्यकता है। कार्य करने की प्रक्रिया और दूसरी ब्यौरे की बातों पर हमारा वार्तालाप नहीं हुआ। म्रच्कोव्स्की ने बुखारिन् के सामने एक प्रश्न रखना चाहा, इस पर उसने कहा : "जब तुम सभी आतंकवादी संगठन के प्रधान सेनापति नियुक्त होगे, तब हम तुम्हारे सामने सब बातें रख देंगे।"

विशिन्स्की—इस प्रकार बुखारिन् ने बातें छिपा रक्खीं ?

रादेक्—वैसे ही बातें छिपा रक्खीं, जैसे कि इस बारे में मैंने म्रच्कोव्स्की के कहे को छोड़ कर बाकी बातें उससे छिपा रक्खी थीं; किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि हमारे केन्द्र में ऐसी कार्रवाइयों का सञ्चालन म्रचकोव्स्की करता था।

विशिन्स्की—और क्या बातें हुईं ?

रादेक्—आतंकवाद के बारे में होने वाली बातचीत के सम्बन्ध में मैंने कहा। उस अवसर पर इतनी बात उसने मुझ से कही। आतंकवाद के सम्बन्ध में दूसरा एक वार्तालाप—वस्तुतः दो या तीन वार्तालाप—किरोफ़् की हत्या के बाद १९३४ के दिसम्बर के अन्त में हुआ। ये वार्तालाप बड़ी कठिनाई के समय में हुए क्योंकि सम्पादकीय विभाग उस समय भी निरंतर सुस्ताये बिना काम कर रहा था। बुखारिन् के

कार्यालय में लगातार बहुत से लोग आया-जाया करते थे; और सिर्फ दूसरे या तीसरे दिन—मैं बिलकुल ठीक नहीं कह सकता—हमें थोड़ा सा मौका मिला जब कि पहले पहल हमने आपस में विचार-विनिमय किये। चूंकि न मैं और न बुखारिन् ही निकोलायेफ़् का नाम जानते थे और न इसका ही ज्ञान रखते थे कि जिस वक्त उसने किरोफ़् की हत्या की उस वक्त निकोलायेफ़् पार्टी (साम्यवादी दल) का सदस्य था। हमें यह स्पष्ट था कि उक्त हत्या या तो हमारे एक वर्ग या दक्षिण पक्ष की टोलियों में से किसी एक आतंकवादी टोली का काम है। उस वक्त हम यह नहीं निश्चित कर सके, किन्तु यह हमारे लिए स्पष्ट था, कि वह इन्हीं संगठनों का काम था।

पहली बातचीत में यह पहली बात थी जिस पर हमने अपनी राय कायम की। बाद के वार्तालापों में, जब कि परिस्थिति और भी स्पष्ट हो गई, हम फिर इसी विषय पर विचारने लगे। जब जब हम मिलते थे, विचार विनिमय करते थे और इस बात के कूतने की कोशिश करते थे कि किरोफ़् की हत्या का राजनैतिक परिणाम क्या होगा।

हमें यह निश्चय हो गया कि हत्या से वह लाभ नहीं हुआ जिसकी आशा संगठनकर्ता अपने मन में रखते थे। परिणाम से उसका औचित्य सिद्ध नहीं हुआ। केन्द्रीय समिति

(मंत्रिमंडल) पर इससे आघात नहीं पहुंचा और त्रोत्स्कियाई और जिनोवियेफ़ी साधारण जनता के बीच जिस सहानुभूति के पैदा करने की उम्मीद रखते थे, वह नहीं हुई; बल्कि इसके परिणाम स्वरूप साधारण जनता और भी अधिक केन्द्रीय समिति से मिल गई। इसके कारण त्रोत्स्कियाइयों और जिनोवियेफियों की बड़ी संख्या गिरफ्तार कर ली गई।

उसी समय हमने आपस में कहा : या तो यह कार्रवाई–जो कि वैयक्तिक आतंकवाद की प्रक्रिया का परिणाम है--चाहती है कि हम आतंकवादी कार्यों को छोड़ दें अथवा हम और आगे बढ़ें अथवा एक सारी मंडली के खिलाफ आतंकवादी कार्रवाइयों का प्रयोग करें।

किरोफ़ की हत्या के कारण उत्पन्न परिस्थिति का जो प्रभाव पड़ रहा था, उस वक्त उन्हीं विचारों पर हमने पहले विचार विनिमय किया।

बुखारिन् ने मुझे बतलाया कि हमारे बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो ऐसा सोचते हैं कि किरोफ़ की हत्या के परिणाम को देखकर आतंकवाद को छोड़ देना कमजोरी और कायरता होगी; इसलिए उसको एक सुव्यवस्थित गंभीर संघर्ष के रूप में परिणत कर देना चाहिये। वे इसे गोरिला (छिट-फुट) शैली से योजना-पूर्ण आतंकवाद में परिणत कर देना चाहते हैं।

विशिन्स्की—मैं इसी गोरिला-शैली के विषय में दिलचस्पी

रखता हूँ। यह वही विषय है जिसे कि तुमने कल छुआ था।

रादेक्—किरोफ् की हत्या से जो पाठ मिला था, उसके फल स्वरूप उस समय यह प्रश्न हम सभी—जो चाहे दक्षिण-पक्ष के नेता थे या जिनोवियेफ़ी-त्रोत्स्कियाई वर्ग—के आगे अत्यंत विचारणीय था; और मैं स्वीकार करूंगा कि इससे पहले भी मैंने इसपर विचार किया था।

विशिन्स्की—और किस दृष्टि से, यथार्थतः, तुम इस बातपर विचार करते थे?

रादेक्—आतंकवादी संघर्ष क्षेत्र में मुझे किसी प्रकार का क्रियात्मक अनुभव नहीं हैं, किन्तु मैं इतिहास से, किताबों से—सिर्फ़ नरोद्नया वोल्या (जन इच्छा) के इतिहास से ही नहीं, बल्कि पोलैण्ड के आतंकवादियों के जबर्दस्त क्रियात्मक अनुभव से भी—जानता था। और इस प्रकार मैं अपने आपसे पूछता था—क्या दल के लिए वैयक्तिक लोगों पर गोली चला कर उस लक्ष्यका प्राप्त करना संभव है जिसे कि उसने अपने सामने रक्खा है। और खास कर इस समस्या के उत्तर में। मैं उस भेद के बारे में कुछ जानता था जो कि हमारी राष्ट्रीय सुरक्षासम्बन्धी संस्थाओं तथा दूसरे देशों एवं पुराने समय की वैसी संस्थाओं

के बीच है। मैं जानता था कि जहां उक्त विदेशी और पुरानी संस्थाएँ जनता की सहानुभूति से वंचित थीं वहां हमारी राष्ट्रीय सुरक्षासम्बन्धी संस्थाएं सारी साधारण जनता की जबर्दस्त सहायता अपने पक्ष में रखती थीं। किसी भी संदिग्ध बात को जनता उन्हें सूचित किये बिना नहीं रहती। हो सकता है कि किसी एक समय अनजाने उनपर प्रहार हो जाय किन्तु वह समाज शास्त्र का इतना अधिक ज्ञान रखते हैं कि किरोफ़ की हत्या जैसी बातों को अचानक नहीं समझ सकते, बल्कि उसे वे किसी असंतुष्ट टोली और मनोभाव द्वारा हुई समझते हैं, इसलिये यह निश्चित था कि राष्ट्रीय सुरक्षासम्बन्धी संस्थाएं ऐसे सभी तरीकों को इस्तेमाल करेंगी जिससे कि वैयक्तिक आतंकवादी कार्यों का करना आसान नहीं रह जायगा।

इसके अतिरिक्त मैं नेताओं के इतना समीप रहता था कि ऐसे तरीकों को उसी समय काम में लाये जाते देख बिना देखे नहीं रह सकता था। मुझे स्पष्ट मालूम होता था कि हमारे सामने दो प्रश्न हैं : चाहे तो यह वैयक्तिक आतंकवादी कार्रवाई इस आशा से छिटफुट करते चले जायँ कि आगे इससे कुछ होकर रहेगा—और यह निरी मूर्खतापूर्ण विचार था—अथवा लड़ने वाला पक्ष इस प्रश्न को समझे और मुकाबला करे कि वह क्या कर सकता है। और हमारे दिमागों में "क्या करना

चाहिये" यह विचार घूम रहा था। यदि हम इस विषय के राजनैतिक पहलू को लें तो उन विचारों का सारांश यह था कि वहां पर एक विशेष दृष्टि से खास किस्म के व्यक्तियों के चुनने का प्रश्न, और इस योजना के साथ एक ख़ास तौर का चुनाव अत्यन्त आवश्यक चीज थी।

मैंने बुख़ारिन्, प्याताकोफ़् और सोकोल्निकोफ़् के साथ इस प्रश्न के सम्बन्ध में विचार विनिमय किया था।

विशिन्स्की—तो तुम गोरिला-शैली के समर्थक नहीं थे?

रादेक्—शुरू से ही मैं गोरिला शैली का विरोधी था।

विशिन्स्की—तुम इस शैली को गंभीर शैली नहीं समझते थे? मुझे पूछने की आज्ञा दो चाहे इसका उत्तर पीछे देना। मैं तुम से पूछता हूं : क्या वहाँ दो प्रकार के आतंकवादी संघर्ष चल रहे थे? एक वह जिसे कि तुम गोरिला-शैली कहते हो और दूसरा वह जिसे कि तुम योजनापूर्ण गंभीर कार्य कहते हो?

रादेक—हां। इसीलिये मैं वैयक्तिक आतंकवाद के मार्ग को गंभीरतापूर्ण नहीं समझता था।

विशिन्स्की—तुम प्रथम प्रकार के आतंकवादी कार्य को पसंद करते थे या दूसरे प्रकार के?

रादेक्—जब तक कि मुझे विश्वास नहीं हो गया कि यह संघर्ष सिर्फ गोरिला संघर्ष है तब तक मैं पुराना संघर्ष मानता था।

पीछे मैं सुव्यवस्थित आतंकवादी संघर्ष का समर्थक हो गया ।

विशिन्स्की—तुम्हारा दृष्टिकोण उस वक्त क्या था जब कि तुम्हें तिवेल-टोली, ज़ाक्स-ग्लादुन्येयेफ़्-टोली, प्रिगोज़िन् की टोली या उसकी कार्रवाई, ज़इदेल-टोली, च्येलोत्रोरोदोफ़् टोली और मुरालोफ़्-टोली की कार्रवाइयों के बारे में सूचना मिली ?

रादेक्—ये वे टोलियां थीं जो भिन्न-भिन्न समय पर बनीं। इसलिये मुझे अलग-अलग टुकड़ा कर के उत्तर देने की इजाजत दीजिये ।

विशिन्स्की— मैं सारे समय के बारे में पूछता हूं ।

रादेक्—तुम १९३४ के अन्त और उसके बाद—इन दो समयों के बारे में पूछते हो ?

विशिन्स्की—मुरालोफ़-टोली किस समय बनी ?

रादेक्—मैंने इसके बारे में १९३५ में सुना ।

विशिन्स्की—बहुत अच्छा, मैं मुरालोफ़् से पूछूंगा। (मुरालोफ़् से) अभियुक्त मुरालोफ़् ! क्या तुम पश्चिमी साइबेरिया में आतंकवादी टोली के नेता थे ।

मुरालोफ़्—हां ।

विशिन्स्की—कब से ?

मुरालोफ़्—१९३१ से

विशिन्स्की—कब तक ?

मुरालोफ़्—मेरी गिरफ्तारी के दिन तक।

विशिन्स्की—क्या तुम गोरिला शैली के समर्थक थे ? या संगठित, योजना पूर्ण शैली के ?

मुरालोफ़्—आम तौर से मैं गोरिला योद्धा नहीं हूं, और मैं बराबर इस बात की कोशिश करता था कि गोरिला शैली को रोक कर संगठित कार्रवाई की जाय।

विशिन्स्की—१९३१ से ही क्या ?

मुरालोफ़्—नहीं, बहुत पीछे, जैसा कि रादेक् ने कहा है कि १९३४ के बाद से।

विशिन्स्की—अर्थात किरोफ़् की हत्या के बाद से ?

मुरालोफ़्—हां।

विशिन्स्की—और उस हत्या के पहले उक्त शैली के बारे में तुम्हारी कोई निश्चित राय न थी ?

मुरालोफ़्—नहीं।

विशिन्स्की—किन्तु, तुम्हारे पास एक टोली थी और तुम तैयारी में लगे थे ?

मुरालोफ़्—हां।

विशिन्स्की—तुम्हें (रादेक्) कब व्येलोवोरोदोफ़्-टोली का पता लगा?

रादेक्—मैंने इसे १९३५ में सुना।

विशिन्स्की—और जइदेल-टोली के बारे में ?

रादेक् —इसके बारे में मैंने १६३४ में सुना ; मैं यह ठीक नहीं जानता कि यह उस वक्त बन चुकी थी या टोली से मतलब सिर्फ जइदेल् से था मुझे ठीक पता नहीं था ।

विशिन्स्की—म्दिवानी,-टोली के बारे में ?

रादेक् —मैंने इसके बारे में दिसम्बर १६३५ में सुना ।

विशिन्स्की – तो इनमें से बहुतों के बारे में तुमने किरोफ् की हत्या के बाद सुना ?

रादेक्—हां ।

विशिन्स्की—उस समय सभी टोलियां मौजूद थीं ; सभी तैयारी कर रही थीं ?

रादेक्—हां ।

विशिन्स्की—और, तो भी तुम इसे गोरिला–शैली कहते हो ?

रादेक्—सब तरह से गोरिला-शैली ।

विशिन्स्की—तो तुम्हारी स्थिति वही थी जिसे कि इन टोलियों ने स्वीकार किया था; तुम इन टोलियों से सहमत थे और इन्हें आदेश देते थे; तो भी तुम सोचते थे कि इससे उचित परिणाम नही निकलेगा और इस शैली को बदलना चाहिये ?

रादेक्—हां ।

विशिन्स्की—इसलिये उस समय: १६३४-३५, में आतंकवादी कार्रवाई के लिए सभी टोलियों को सुव्यस्थित और सुसंगठित करना तुम्हारा काम था ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—क्या तुमने केन्द्र के दूसरे सदस्यों से भी इसके बारे में बातचीत की ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—विशेष कर किससे ?

रादेक्—मुझे खूब याद है कि मैंने इस सम्बन्ध में प्याताकोफ् और सोकोल्निकोफ् से बातें कीं।

विशिन्स्की—इसलिये तुम्हारी स्थिति यह थी कि तुम एक सुव्यवस्थित, नियमित, संगठित टोली द्वारा संघर्ष की आवश्यकता को स्वीकार करते थे ?

रादेक—हां।

विशिन्स्की—लेकिन तुम इन टोलियों को उस तरह की संगठित टोली का संघर्ष नहीं समझते थे जैसा कि तुमको ख्याल था।

रादेक्—ऐसा ही—न व्यक्तियों में ही, न उन कामों में ही जिन्हें कि वे करना चाहते थे।

विशिन्स्की—इस परिणाम पर पहुँचने के बाद विरोधी वर्ग के खिलाफ आतंकवादी कार्रवाई करने की आवश्यकता है, क्या तुमने इस संघर्ष के संगठित करने का कोई उपाय किया ?

रादेक्—हां। जुलाई १९३५ में पहले प्याताकोफ् से और

फिर सोकोल्निकोफ् से बातचीत के सिलसिले में मैंने प्रश्न उठाया कि या तो हमें संघर्ष जारी रखना चाहिये या उसे छोड़ देना चाहिये।

विशिन्स्की—उत्तर क्या मिला ?

रादेक्—उत्तर मिला कि "हमें जारी रखना चाहिये।" ऐसी अवस्था में हमारे पास कौनसी शक्तियां मौजूद हैं उन्हें जानना जरूरी था।

विशिन्स्की—अर्थात् पहली बात थी कि अपनी शक्तियों का अंदाजा लगाया जाय ?

रादेक्—हां पहली बात थी कि अपनी शक्तियों का अन्दाजा लगाया जाय। दूसरी बात थी : जब हमें अपने पास मौजूद शक्तियों का पता लग जाय तो कार्य की एक योजना तैयार करनी थी, और कार्य-योजना के अनुसार निश्चय करना था कि ये शक्तियां उपयुक्त होंगी अथवा योजना को पूर्ण करने के लिये हमें नई शक्तियां तैयार करनी पडेंगी।

विशिन्स्की—अगर ये शक्तियाँ उपयुक्त हैं तो इन्हें काम में लगाना और यदि अनुपयुक्त··

रादेक—यदि अनुपयुक्त थीं तो उनका काम में लगाना व्यर्थ था। वे विशेषज्ञ नहीं थे जो कि आतंकवाद के सिवा दूसरे काम में लग न सकते थे।

विशिन्स्की—मैं यह नहीं जानना चाहता कि वे किस प्रकार के

विशेषज्ञ थे या इसके सिवा वे क्या कर सकते थे। यदि वे शक्तियां अनुपयुक्त थीं तो क्या करना था ?

राडेक्—ऐसी अवस्था में अपने लक्ष्य को सामने रख कर हमें नई शक्तियां तैयार करनी थीं।

विशिन्स्की—अर्थात् उनकी योग्यता की परीक्षा करके या तो उन शक्तियों को काम में लगा देना, या नई शक्तियों को तैयार करना ? केन्द्र एक सदस्य के तौर पर तुम्हें पता लगाना था कि शक्तियां कौन कौन सी हैं उनमें लड़ने की योग्यता कैसी है और फिर उन्हें काम में लगाना अथवा परिस्थिति के अनुसार नई शक्तियां तैयार करना ?

राडेक्—हां। बात ऐसी ही थी।

विशिन्स्की—तुमने क्या उपाय किया ?

राडेक्—फिर हमने तै किया कि ऐसी परिस्थिति का खात्मा कर दें जिसमें कि आतंकवादी काम की जवाबदेही किसी के ऊपर न थी। हमने तै किया कि ड्राइत्जे.र्—जिसे कि म्रच्कोव्स्की की गिरफ्तारी के बाद सीधे आतंकवादी कार्य के लिए हम सब से अधिक उपयुक्त समझते थे—को बुलाकर पता लगाया जाय कि वह क्या करना चाहता है और सब मिलकर एक योजना बनायें।

विशिन्स्की—तो सब से पहले तुम आतंकवादी टोलियों के नेतृत्व को एक करना चाहते थे ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और तुम किसको नेता होने के उपयुक्त समझते थे?

रादेक्—ड्राइत्ज़ेर को।

विशिन्स्की—क्या तुमने उससे सम्बन्ध स्थापित रक्खा था।

रादेक्—मैंने ड्राइत्ज़ेर को एक पत्र लिखा। मैं स्वयं क्रिवोयिरोग नहीं जा सका। मैंने छिपी भाषा में पत्र लिखा। ऐसी अवस्था में आम तौर से एक पोस्टकार्ड पर प्रेमसंदेश लिख भेजने का कायदा है। मैंने उसे लिखा कि पिता के ऊपर जो वज्राघात हुआ, उसके बाद हमें आगे का कर्त्तव्य निश्चित करना है। तुम्हें मालूम नहीं कि हमारे पास कितना बचा, हम नहीं जानते कि तुम क्या करते हो, इत्यादि। तुम अवश्य आओ। यह पारिवारिक गुत्थी सुलझानी होगी।

उत्तर में मैंने उसका एक पत्र पाया, जिसमें लिखा था कि मैं रोगशय्या पर हूं, मेरे पास कोई नहीं मिलने आता और मैं यह स्थान नहीं छोड़ सकता। जैसे ही तबियत ठीक होगी, मैं आऊंगा। पहले मैंने सोचा कि ड्राइत्ज़ेर को षड्यन्त्री ढंग की कोई सूचना मिली है जिसने कि उस समय उसे कार्य में हाथ डालने से रोक दिया, शायद वह जानता है कि मुझ पर संदेह है—मैंने ऐसा अपने मन में सोचा। कितने ही महीने बीत गये लेकिन ड्राइत्ज़ेर् का कोई पत्र नहीं आया। और

तब मेरा संदेह बढ़ने लगा, मैं द्राइत्ज़ेर को अच्छी तरह जानता था कि वह कायरता या जरूरत से अधिक सतर्कता नहीं दिखलायेगा, और मैं यह भी विश्वास नहीं करता था कि द्राइत्ज़ेर् को मुझ से सम्बन्ध रखने के लिए कोई तरीका नहीं मिल रहा है।

किरोफ् की हत्या के बाद पहले पहल हमने भी कुछ नहीं किया, किन्तु जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर,—कई महीने बीत गये और द्राइत्ज़ेर् ने एक शब्द भी नहीं लिखा। तब मैंने तै किया कि उससे बात करने के लिये द्नियेप्रोपेत्रोव्स्क स्वयं जाना चाहिये जिसमें कि मैं वहां जाकर द्राइत्ज़ेर् से मिल सकूं। द्नियेप्रो-पेत्रोव्स्क से ज़ापोरोज़्ये और क्रिवोयिरोग में व्याख्यान देने के लिये कितने ही निमन्त्रण आये थे। मैंने तै किया कि पार्टी की आगामी मीटिंगों में द्नियेप्रो पेत्रोव्स्क या क्रिवोयिरोग् के मंत्रियों में से किसी के साथ द्नियेपेर्-बिजली घर देखने की ख्वाहिश प्रकट करूंगा, जिस पर वे मुझे वहां आने के लिए निमन्त्रण देंगे और द्राइत्ज़ेर् से मिल सकूंगा। इसके बाद एक नयी घटना घटी। त्रोत्स्की ने दिसम्बर की हिदायतें भेजीं जिसमें कि सभी समस्यायें पूरे तौर से सामने रक्खी गई थीं। अब यह एक योजना का प्रश्न नहीं रह गया, बल्कि कुछ और भी विस्तृत चीज थी।

विशिन्स्की—यह किस साल की बात है ?

रादेक्—१९३५ की। किन्तु इसके होते हुए भी हमने एक कान्फ्रेन्स बुलानी तै की। इसके पहले—जनवरी में, जब कि मैं पहुँचा—बितलि पुत्ना मेरे पास तुखाचेव्स्की की बात लेकर मिलने आया। मैंने कहा: "यह एक नेता के काम करने का ढंग नहीं है। महीने से उसने कोई समाचार नहीं दिया। जिन्दा या मुर्दा जैसे हो, उसे पकड़ो।" पुत्ना ने वचन दिया। लेकिन जब मैंने पुत्ना के पाससे भी पत्र नहीं पाया तो द्राइत्जे.र् को एक पत्र लिखा और उसे साफ कहा: फेब्रुअरी के अन्त या मार्च के शुरू तक तुम्हें यहां जरूर आना चाहिये।" और उसने मुझे उत्तर दिया: "मैं आ रहा हूं।" इस तरह मालूम होगा कि मैंने गोरिला-शैली से यह परिणाम निकाला कि ठीक स्थिति के समझने की कोशिश की जाय जिसमें कि गोरिला पद्धति छोड़ दी जाय और देखा जाय क्या कुछ और अधिक निश्चयात्मक ढंग नहीं अख्तियार किया जा सकता जो कि आतंकवादी दृष्टिकोण से कुछ अधिक लाभदायक सिद्ध हो सके। मैं कहूंगा कि त्रोत्स्की के हिदायतों के पाने से पहले मेरी कोशिश थी कि द्राइत्जे.र् को लेकर योजना बना कर एक आतंकवादी काम की तैयारी की जाय; किन्तु त्रोत्स्की की अन्तिम हिदायत जैसे ही मिली वैसी ही स्थिति बिलकुल ही बदल गई। इस हिदायत के बारे में शायद तुम खास तौर पर मुझसे पूछोगे।

विशिन्स्की—जब तुम अपनी शक्तियों का अन्दाजा लगा रहे थे तथा द्राइत्जेर का पता लगा रहे थे उस समय सभी टोलियां मौजूद रह कर काम कर रही थीं ?

रादेक्—हाँ, वे मौजूद रहकर काम कर रही थीं।

विशिन्स्की—और तुम यह जानते थे ?

रादेक्—में कुछ कुछ इसे जानता था।

विशिन्स्की—बहुत अच्छा। अब हमे वैदेशिक सम्बन्ध के विषय में तुम्हारे काम को देखना चाहिये।

प्रेसिडेन्ट—बीस मिनट के लिये इजलास बन्द हो रहा है।

* * * *

अर्दली—जज आ रहे हैं, कृपया उठिये।

प्रेसिडेन्ट—सेसन फिर आरंभ होता है। क्या कुछ प्रश्न पूछने हैं ?

विशिन्स्की—अभियुक्त रादेक्, क्या तुम कृपा करके त्रोत्स्की के साथ तुम्हारे पत्र व्यवहार में लिखी बातों में वैदेशिक नीति-सम्बन्धी बातें बतला सकते हो ?

प्रेसिडेन्ट—अभियुक्त रादेक्, मैं तुम्हें खबरदार कर देना चाहता हूं कि तुम खुली अदालत में विदेशी सरकारी संस्थाओं या उनके अधिकारियों के नाम नहीं लोगे।

रादेक्—क्या मैं देशों का नाम ले सकता हूं ?

प्रेसिडेन्ट—मैं फिर दुहराता हूं कि तुम खुली अदालत में विदेशी

सरकारी संस्थाओं और उनके अधिकारियों के नाम नहीं लोगे।

रादेक्—अप्रेल १९३४, दिसम्बर १९३५ और जनवरी १९३६ में मुझे त्रोत्स्की के तीन पत्र मिले थे। १९३४ के पत्र में त्रोत्स्की ने इस प्रकार लिखा था: जर्मनी में फासिस्तवाद की विजय ने सभी स्थिति को मौलिक रूप से बदल दिया है। इसके कारण निकट भविष्य में युद्ध होगा, युद्ध अनिवार्य है, और साथ ही इससे भी कि सुदूरपूर्व की भी अवस्था विकराल होती जा रही है। त्रोत्स्की को इसमें सन्देह नहीं था कि युद्ध का परिणाम होगा सोवियत सन्घ की पराजय। उसने लिखा: यह पराजय हमारे दल को अधिकारारूढ़ होने में अनुकूल स्थिति पैदा करेगी। और इससे उसने यह परिणाम निकाला कि दल विग्रह की तीक्ष्णता को पसंद करता है। उसने शान्ति के लिये प्रयत्न के के बारे में मेरे और सोकोल्निकोफ् के वैयक्तिक तौर से अधिक कटिवद्ध होने की निन्दा की और कहा कि यदि यही तुम्हारा कर्तव्य है तो इसके बारे में कुछ नहीं किया जा सकता: किन्तु किसी एक सुदूरपूर्वीय शक्ति के एक खास प्रतिनिधि से बात करते वक्त क्या सोकोल्निकोफ् ने काफ़ी साफ़ जवाब नहीं दिया था जिसमें कि इस शक्ति के साथ त्रोत्स्की के प्रस्ताव से अपने को सहमत प्रकट किया? इस

पत्र में त्रोत्स्की ने कहा था कि मैंने एक सुदूरपूर्वीय शक्ति और एक मध्य यूरोपीय शक्ति से सम्बन्ध स्थापित किया है और मैंने इन राष्ट्रों के अर्ध सरकारी अधिकारियों से खुल कर कह दिया है कि दल तुमसे मोल-तोल करने के लिए और तुम्हारे लिये काफी अर्थिक और भौगोलिक सुविधा भी देने के लिए तैयार है। अपने पत्र में उसने आज्ञा दी थी कि हमें मास्को वाले इस मौकें से फायदा उठाना चाहिये। और इन राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के सामने मेरी योजना से सहमत होने की बात प्रकट करनी चाहिये। मैंने उसके पत्र का आशय प्याताकोफ् के पास भेजा और उससे पूछा कि क्या तुम सुदूरपूर्वीय उस वैदेशिक दूत से सोकोल्निकोफ् के वार्तालाप के बारे में जानते हो जिसने कि त्रोत्स्की को असंतुष्ट कर दिया। प्याताकोफ् ने कहाकि मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता।

विशिन्स्की—क्या बात थी जिसने कि इस वार्तालाप में असंतोष पैदा किया?

रादेक्—पत्र में मान लिया गया था कि मैं कामेनेफ् की हिदायतों को जानता था। मैं वैयक्तिक तौर से समझता था कि सोकोल्निकोफ् स्वयं संरक्षकता तक स्वीकार करने को तैयार है और समझता था कि प्याताकोफ् और भी अधिक ठीक ठीक जानता है। यहां मैं थोड़ा सोकोल्निकोफ् के

कथन से मतभेद रखता हूं। जुलाई १६३४ में सोकोलनिकोफ़ इज़वेस्तिया कार्यालय में मेरे पास आया और उसने मुझे उस वार्तालाप से सूचित किया जिसे कि उसने श्री—से किया था। सोकोलनिकोफ़ ने कहा: "सोचो तो मैं वैदेशिक विभाग की जन-कमीसरी में सरकारी तौर से सुलह के लिए बातचीत चला रहा था। वार्तालाप का अन्त होनेवाला था। दुभाषिये कमरे को छोड़ चुके थे। एक खास विदेशी राष्ट्र के सरकारी प्रतिनिधि श्री——ने एकाएक मेरी तरफ मुड़ कर पूछा: क्या तुम्हें त्रोत्स्की के उस प्रस्ताव की सूचना मिली है, जिसे कि उसने मेरी सरकार के सामने रक्खा है?" सोकोलनिकोफ़ ने कहा: हाँ, और यह गंभीर प्रस्ताव और हिदायत है, और मेरे मित्र और मैं इससे सहमत हूं।" सोकोलनिकोफ़ ने यह भी कहा कि कामेनेफ़ ने मुझे कुछ समय पहले खबरदार कर दिया है कि विदेशी राष्ट्रों के प्रतिनिधि मुझ से या तुम से मिलने आयेंगे। उस समय जहां तक मुझे स्मरण है, त्रोत्स्की ने सुदूरपूर्व की स्थिति के सम्बन्ध में किसी प्रकार की हिदायत दी थी। यहां पर सोकोलनिकोफ़ ने—जो कि साधारणतः बहुत ही चुप्पा आदमी है-और मेरे साथ तो और भी अधिक संयत रहता है, क्योंकि हमारा सम्बन्ध सिर्फ व्यवहार का था, व्यक्तिगत

नहीं—बहुत अनकस सा जाहिर किया और मुझ से कहा : "त्रोत्स्की कैसे इसे सोच रहा है ? कैसे मैं, एक सहायक जन कमीसर इस प्रकार के वार्तालाप को जारी रख सकूंगा ? यह बिल्कुल असंभव बात है।" मुझे ठीक तौर से याद नहीं है कि किन शब्दों में उसने अपने भाव प्रकट किये। लेकिन वह त्रोत्स्की की उक्त राय से असहमत था। इस पर मैंने उससे कहा : "उत्तेजित मत हो, शायद वह यहां की स्थिति से अच्छी तरह परिचित नहीं है।" प्याताकोफ़् और मैं—दोनों इस नतीजे पर पहुंचे कि समझौते से सहमत होने से आगे हम नहीं जा सकते।

हम यहां समझौते की बात नहीं कर सकते क्योंकि अव्वल तो हम ऐसे समझौते को तीसरे दर्जे (निम्न श्रेणी) के व्यक्तियों द्वारा करेंगे, और दूसरे यह कि हमें यह मालूम नहीं कि त्रोत्स्की ने क्या कहा, और तीसरे यह कि हम गृह-सचिव विभाग की आंखों के भीतर रहकर समझौते की बातचीत चलाना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं समझते। हम नहीं समझते थे कि समझौते के लिए यह अच्छी अवस्था है। मुझे इसी विषय में त्रोत्स्की को पत्र लिखना था।

मैं इस बात की ओर खास ध्यान दिलाना चाहता हूं कि मेरी बात सोकोलनिकोफ़् से हुई, जिसके लिए मैं डरता था क्योंकि सोकोलनिकोफ़् जिनोवियेफ़ियों के संगठन का आदमी

था, और मेरा उसका बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं था। त्रोत्स्की ने विदेश से उसे फटकारा था जिससे फूट का डर था।

रोम्भ् मई में विदेश गया। मैंने उसके हाथों त्रोत्स्की के पास एक पत्र भेजा, जिसमें मैंने हिदायत की प्राप्ति की स्वीकृति लिखते हुए कहा था कि विदेशी राष्ट्रों से समझौता करने के लिये हम तुम्हारा समर्थन करना छोड़ और कोई कदम बढ़ाने के लिए सहमत नहीं। इसके अतिरिक्त मैंने यह भी लिखा था कि केन्द्र के अधिकारी के तौर पर ही नहीं बल्कि मैं वैयक्तिक तौर से भी, विदेशी राष्ट्रों के साथ समझौता करने की तुम्हारी कोशिश का समर्थक हूं। किन्तु अभी, जब कि मैं जेनेवा ही में था, पुराने अनुभवों से लाभ उठाते हुए काम के सिलसिले में आगे पैदा होने वाले मतभेदों को और न बढ़ने देने के लिये, उसने मुझ से कहा कि—यदि मेरे किसी प्रस्ताव या कार्यक्रम के विषय में तुम्हें कोई संदेह हो, तो उसके बारे में पूर्ण स्वतंत्रता के साथ मेरे पास लिखो। मैंने लिखा कि तुम्हारी हिदायत में जिस बात को मैं निर्विवाद समझता हूं, वह यह है कि यदि दल को किसी तरह से अधिकारारूढ़ होने की संभावना है तो वह शून्य—क्योंकि सोवियत् संघ की स्थिति और राष्ट्रों के भीतर वैसी ही है,—में नहीं होगा, और हमें यह जानना चाहिये कि शत्रु क्या चाहता है, उसका लक्ष्य किस पर है, वह क्या मांग पेश कर सकता है, वह कहां तक जा सकता है; और इसलिये

केन्द्र के अधिकारी के तौर पर ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी मैं सम्बन्ध स्थापित करने को तुम्हारे इस इरादे का समर्थन करता हूं। किन्तु मैं अपनी ओर से निम्न बातों की तरफ तुम्हारा ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं: दल जिस अवस्था में है वैसी अवस्था में सीधी तौर से ऐसा सम्बन्ध स्थापित कर के अपने को पूर्णतया नाश को पहुंचायेगा और अपने आपको दुश्मन के हाथों सौंप देगा।

उद्देश्य के सम्बन्ध में मैंने उसे निम्न बातें लिखी : यह दूसरी बात है कि युद्ध ऐसी स्थिति पैदा करेगा जिसमें दल अधिकारारूढ़ हो; और युद्ध को लाने की कोशिश करना दूसरी बात है। युद्ध के लाने के प्रयत्न के राजनीतिक महत्व को एक ओर छोड़ कर मैंने उसका ध्यान—मैंने इसे अपनी व्यक्तिगत राय लिखी थी—इस बात की ओर आकर्षित किया था कि दल, जो कि १६३३ में मौजूद था, बहुत कम काम करने की क्षमता रखता है, क्योंकि जिनोवियेफ् और कामेनेफ् के निर्वासन के कारण उसने अपनी कार्रवाइयों को बन्द कर दिया था और अभी सगठन की अवस्था में था। और यदि यह युद्ध अभी आरम्भ हो जाय तो वह पराजय को ओर ले जायगा, किन्तु युद्ध हमें ऐसे फाँस देगा कि हम कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकेंगे। मैंने यह बात उसे यह सोच कर लिखी थी कि कोई दूसरा उसे सजम करने की हिम्मत नहीं करेगा। इसलिये मैंने उसके पास यह लिखना जरूरी समझा।

विशिन्स्की—यह मई १९३४ की बात है ?

रादेक्—यह मई १९३४ की बात है। १९३४ के शरद् में एक पर राष्ट्र दूत-स्वागत-संमिलन में एक मध्य-यूरोपीय देश का राजप्रतिनिधि मेरे बगल में बैठा और बातचीत करने लगा। अच्छा, उसने यह वार्तालाप इस प्रकार आरम्भ किया जो कि बहुत संगत नहीं था। उसने कहा (जर्मन में बोलते हुए) : "मैं अनुभव करता हूँ कि तुम्हें सभी बातें साफ़-साफ़ बतला दूं मैं प्रति दिन जर्मन पत्र पाता हूं और वे तुम्हारे खिलाफ सिर से चोटी तक की ताकत लगाते हैं; और मैं सोवियत् पत्र मंगाता हूँ और उसमें तुम जर्मनी पर कीचड़ उछालते हो। ऐसी परिस्थिति में मेरे जैसे को क्या करना चाहिए" उसने कहा : "हमारा नेता " (उसने इसे अधिक स्पष्ट करके कहा) "जानता है कि महाशय त्रोत्स्की जर्मनी के साथ मेल-मिलाप स्थापित करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। हमारा नेता जानना चाहता है कि महाशय त्रोत्स्की के इस विचार का अभिप्राय क्या है। शायद यह एक ऐसे प्रवासी का विचार है जिसे ठीक से नींद नहीं लगती ? इन विचारों के पीठ पर कौन है ?" यह स्पष्ट था कि दल की सम्मति के बारे में मुझसे पूछा गया था। मैं नहीं समझ सका कि यह त्रोत्स्की के लेखों में से किसी की प्रतिध्वनि थी, क्यों कि जो कुछ त्रोत्स्की लिखता था मैं सब पढ़ता था, और

देखता रहता था कि वह अमेरिकन और फ्रान्सीसी पत्रों में क्या लिखता है। मुझे त्रोत्स्की के लेखों का पूरा परिचय था और मैं जानता था कि त्रोत्स्की पत्रों में जर्मनी के साथ मेल-मिलाप के विचारों का प्रतिपादन नहीं करता है। यदि यह परराज प्रतिनिधि कहता है कि वह त्रोत्स्की के विचारों से परिचित है तो इसका मतलब यह है कि यह प्रतिनिधि यद्यपि अपने पद के महत्त्व के कारण वह व्यक्ति नहीं है जिसपर कि उसका नेता रहस्य खोल सके, परिणामतः ऐसा प्रतिनिधि है जो कि मुझसे यह प्रश्न पूछने के लिये नियुक्त किया गया है। जो हो, मेरी उससे यह बातचीत चन्द मिनटों तक ही रही, वैसा संमिलन लम्बे वार्तालाप के लिए उपयुक्त नहीं होता। मुझे एक मिनट में निर्णय करके उत्तर देना था, और मैंने उससे कहा कि दोनों देशोंमें-चाहे उनके सामाजिक संगठन बिल्कुल एक दूसरे से विरुद्ध ही क्यों न हों—आपस की अनबन एक व्यर्थ की बात है, तोभी इन पत्रों के युद्ध को ओर ही सारा ध्यान नहीं जाना चाहिये। मैंने उससे कहा कि सोवियत् संघ के वस्तुवादी राजनीतिज्ञ जर्मन-सोवियत् मेल-मिलाप के महत्त्व को समझते हैं और इस मेल-मिलाप को स्थापित करने के लिये रियायत करने के लिये तैयार हैं। इस प्रतिनिधि ने समझा कि चूंकि मैं वस्तुवादी राजनीतिज्ञों के बारे में

कह रहा था, जिसका मतलब था कि सोवियन् संघ में वस्तुवादी और अवस्तुवादी दो तरह के राजनीतिज्ञ हैं जिसमें सोवियत् सरकार अवस्तुवादी राजनीतिज्ञ हैं और त्रोत्स्कियाई जिनोवियेफी दल वस्तुवादी राजनीतिज्ञ हैं। और उसने हमारे कहने का मतलब यह भी समझा कि यदि दल अधिकारूढ़ हुआ तो वह तुम्हारी सरकार और उसके राष्ट्र के साथ मेल-मिलाप के लिये रियायतें देगा। उसके उत्तर देते हुए मैं समझ रहा था कि मैं सोवियन् नागरिक के लिए एक अपराधपूर्ण काम कर रहा हूं।

विशिन्स्की—यह सब प्रथम प्रश्न के सम्बन्ध की बात है ?

रादेक्—यह प्रथम पत्र का परिणाम है किन्तु उस पत्र का सिर्फ इतना ही परिणाम नहीं हुआ।

विशिन्स्की—क्या १६३४ के एप्रिल और नवम्बर के बीच तुमने इस पत्र में लिखित विषय के सम्बन्ध में केन्द्र के दूसरे सदस्यों से भी बातचीत की ?

रादेक्—मैंने प्याताकोफ् सोकोल्निकोफ् और सेरेब्रयाकोफ़् के साथ इसके बारे में बात की।

विशिन्स्की—मैं एक बार फिर जोर देना चाहता हूँ : ठीक उसी समय १६३४ की शरद् में तुमने उक्त पत्र में उल्लिखित बात और उसके बारे में अपनी संमति से उनलोगों को सूचित किया ?

रादेक्—हाँ। प्राइवेट् पत्र में अपनी जो राय मैंने त्रोत्स्की को लिखी थी उसमें राजनैतिक कारणों के बारे में कुछ नहीं लिखा था। इसका राजनैतिक कारण यह था: कि मैं उन व्यक्तियों में से था जिनका एक बार त्रोत्स्कियाई संगठन में भारी फूट डालने में बहुत बड़ा हाथ था इसलिए इसी संगठन में फिर दुबारा भाग लेने के लिए निश्चय करने पर मैं अपनी वैयक्तिक राय प्रकट करने में बहुत सावधान रहता था जिसमें कि कोई यह कहने का मौका न पाये कि जैसे ही मैं उनके दल में आया अपना असंतोष फिर जाहिर करने लगा। इसीलिए मैंने उस बात को दूसरों को न कह कर त्रोत्स्की ही से कहना उचित समझा।

विशिन्स्की—मूल बात क्या तुमने उससे कही थी? प्रत्येक से कहने में कुछ हल्का सा भेद, किन्तु मुख्यतः वही बात?

रादेक्—मैंने हरेक से कहा कि एक वैदेशिक-दूत के स्वागत संमिलन में—मैंने उस वैदेशिक प्रतिनिधि के पद का जिक्र किया—मुझ से यह कहा गया, और उसका मैंने यह उत्तर दिया। हां उनमें से जो उक्त सम्मिलन में उपस्थित नहीं थे उनके लिये उस व्यक्ति का नाम कोई चीज नहीं थी। मुझे याद है, जब १९३५ में मैंने खुद सेरेब्र्याकोफ् से बात की कि क्या प्याताकोफ् ने तुम से कोई बात कही है, या तुम इस बारे में कुछ जानते हो, तो उसने जवाब दिया: हां किसी जर्मन के साथ बातचीत हुई थी, किन्तु मुझे उसका

नाम याद नहीं है।" किन्तु सोकोल्निकोफ़् को जरूर याद होगा।

विशिन्स्की—तुम प्रेसिडेन्ट की चेतावनी का विशेष ख्याल नहीं कर रहे हो ?

रादेक्—मैं क्षमा मांगता हूं, उत्तेजना में मुँह से निकल आया। मैं हिदायत की पूरी पाबंदी करूंगा।

विशिन्स्की—क्या तुमने त्रोत्स्की के पत्र में लिखी बातें भी उन्हें बतलाईं ?

रादेक्—मैंने त्रोत्स्की के पत्र में लिखी बातों को उनसे खूब साफ साफ कहा

विशिन्स्की—तो क्या सवाल उठे ?

रादेक्—जर्मनी में फासिस्तवाद की विजय। जापानी हमलेकी बढ़ती। इन देशों का सोवियत् संघ के साथ युद्ध करने की अनिवार्यता। सोवियत संघ की अवश्यम्भावी पराजय। दल को अधिकारारूढ़ होने पर रियायत करने के लिए तैयार रहने की जरूरत।

विशिन्स्की—माफ कीजिये, कृपया। अवश्यम्भावी पराजय : तुमने और त्रोत्स्की ने कैसे इसकी कल्पना की ? पराजय के बारे में तुम्हारा और त्रोत्स्की का भाव क्या था ?

रादेक्—पराजय की तरफ भाव विल्कुल स्पष्ट था क्योंकि वहां यह कहा गया : वह दल को अधिकारारूढ़ होने का अवसर

पैदा करेगी और यह भी कहा गया कि युद्ध का जल्दी कराना हमारे लाभ की बात होगी।

विशिन्स्की— इस प्रकार युद्ध को जल्दी कराने के तुम पक्षपाती थे, और उस युद्ध में सोवियत्–संघ पराजित हो यह तुम्हारे लाभ की बात थी ? त्रोत्स्की के पत्र में यह बात कैसे लिखी थी ?

रादेक्—पराजय अनिवार्य है, और वह हमारे अधिकारारूढ़ होने के लिये परिस्थिति तैयार करेगी। मतलब यह कि पराजय में हम अपना लाभ समझते थे।

विशिन्स्की—हम लोग पत्र में उल्लिखित बातों को एक एक करके जोड़ रहे है।

रादेक्—निःसन्देह, यही विचारधारा थी ! निर्विवाद, इसी परिणाम पर हम न्याय्यतः पहुँचते हैं। लेकिन चूंकि हम आपके सामने गवाही दे रहे हैं इसलिये जिन वाक्यों को मैं स्मृति से कहता हूं और जो वस्तुतः पत्र में लिखे गये थे उनमें साफ भेद करना चाहता हूं। किन्तु चाहे वह पत्र इन्हीं बातों में लिखा गया हो या दूसरे में, इसमें सन्देह नहीं कि विचाराधारा यही थी।

विशिन्स्की—मैं फिर तुमसे उस प्रश्न का उत्तर मांगता हूँ : सोवियत्–संघ की पराजय के प्रति तुम्हारा और त्रोत्स्की का भाव क्या था ?

रादेक्—यदि तुम त्रोत्स्की के भाव के बारे में पूछते हो तो मैं उसका उत्तर दे चुका और यदि तुम मेरे बारे में पूछते हो, नागरिक प्रोक्यूरेटर (सरकारी वकील) ! तो मैं कहूँगा कि जहां तक तथ्य स्थापित करने से सम्बन्ध है, मुझे एक उत्तर देना है। जहां तक अपने भावों और नैतिकता का सम्बन्ध है, जिसने कि मेरे कार्य पर प्रभाव नहीं डाला…

विशिन्स्की—मैं भावों के बारे में नहीं पूछता बल्कि तथ्य जानना चाहता हूँ।

रादेक्—तथ्य यह है कि मैंने त्रोत्स्की को अपना प्रतिनिधि स्वीकार किया…

विशिन्स्की—सवाल यह नहीं है कि तुमने त्रोत्स्की की वकालत स्वीकार की; मैं पूछता हूँः त्रोत्स्की का जो पत्र तुमने अप्रेल १९३४ में पाया था – उस पत्र में युद्ध के बारे में लिखा था, युद्ध अनिवार्य है, त्रोत्स्की की राय में उस युद्ध में सोवियत् संघ को जरूर हारना पड़ेगा, इस युद्ध और पराजय के कारण दल अधिकारारूढ़ होगा। और अब मैं तुम से पूछता हूंः इन परिस्थितियों में क्या तुम सोवियत् संघ की पराजय चाहते थे या विजय ?

रादेक्—उस समय पराजय को मैं अवश्यंभावी समझता था और सोचता था कि पराजय से उत्पन्न परिस्थिति में हम अधि-कारारूढ़ होंगे। अगर तुम मुझ से मेरी अपनी इच्छा के

बारे में पूछते हो…

विशिन्स्की—तुम सोवियत संघ की पराजय चाहते थे या विजय?

रादेक्—इन सारे वर्षों के मेरे काम बतलाते हैं कि मैं पराजय में सहायक था।

विशिन्स्की—तुम्हारे ये कार्य क्या जान बूझ कर किये गए थे?

रादेक्—सोना छोड़कर, जिन्दगी में मैंने कोई भी काम बिना जाने-बूझे नहीं किया।

विशिन्स्की—और दुर्भाग्य से यह स्वप्न नहीं था?

रादेक्—दुर्भाग्य से यह स्वप्न नहीं था।

विशिन्स्की—यह वास्तविकता थी?

रादेक्—यह शोचनीय वास्तविकता थी।

विशिन्स्की—हां यह वास्तविकता थी और तुम्हारे लिये शोचनीय थी। तुमने केन्द्र के सदस्यों से पराजय-वाद के बारे में कहा? परिणामतः इसे हम निम्न शब्दों में कह सकते हैं: पराजय का प्रश्न तुम्हारे लिए क्रियात्मक प्रोग्राम था।

रादेक्—हां, पराजय का प्रश्न उस समय हमारे लिये क्रियात्मक प्रोग्राम था।

विशिन्स्की—यह अप्रैल १९३४ की बात थी?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और तुमने केन्द्र के दूसरे सदस्यों से भी इसके बारे में कहा?

रादेक्—यदि तुम पूछते हो कि क्या पराजय के प्रति अपने भाव के बारे में हमने बातचीत की, तो परिस्थिति को स्पष्ट करने के लिए मैं निम्न प्रकार से कहूँगा: इस दृष्टिकोण से सोकोलनिकोफ् के साथ किसी तरह का विचार-विनियम नहीं हुआ। मैंने उसे त्रोत्स्की की हिदायतें बतलाईं और पूछा ठीक ठीक तथ्य के सम्बन्ध में—

प्रेसिडेन्ट—अभियुक्त रादेक! क्या तुम हमें गुस्सा दिलाना चाहते हो?

रादेक्—मैं तुम्हें गुस्सा दिलाने की कोशिश नहीं करता हूँ, ऐसा फिर नहीं होगा।

विशिन्स्की—अभियुक्त रादेक का इस तरह का बर्ताव जिरह के समय मुझे दिक्कत में डाल देता है।

प्रेसिडेन्ट—बिल्कुल ठीक।

विशिन्स्की—मुझे डर है कि रादेक् ऐसी छूट करता रहेगा जिससे कि मैं इस सम्बन्ध में प्रश्न नहीं कर सकूंगा। (रादेक् से) तुम राजनीति से काफी अभिज्ञ व्यक्ति हो और यह जानते हो कि अदालत में कुछ बातों की मनाही है, इसे कानून की मांग के तौर पर स्वीकार करना होगा।

रादेक्—मैं हृदय से क्षमा मांगता हूं; ऐसा फिर कभी नहीं होगा।

प्रेसिडेन्ट—मैं समझता हूं कि यदि रादेक् फिर ऐसी बात को दुहरायेगा तो इस बात के सम्बन्ध में अदालती कार्रवाई कमरे के भीतर होगी।

रादेक्—मैं दुहराता हूँ कि फिर ऐसा नहीं होगा।

विशिन्स्की—मैं तुमसे कहूँगा कि इस बात के तथ्य-सम्बन्धी पक्ष को लेकर चलो, तब ऐसा करना तुम्हारे लिये आसान होगा। तुमने पराजयवाद के सम्बन्ध में केन्द्र के सदस्यों से बातचीत की ?

रादेक्—हमने इसे ऐसी बात मानकर स्वीकार किया जिसे कि हमें पूरा करना है।

विशिन्स्की—क्या इन हिदायतों को कार्य-रूप में परिणत करने के लिये तुमने खुद या तुम्हारे सहयोगियों ने कोई क्रियात्मक पग बढ़ाया ?

रादेक्—हमने पराजयवादी भाषणमंच को छोड़ा नहीं, हम बराबर सहमत रहे—यह हमारी गिरफ्तारी तक रहा; लेकिन १६३६ के बाद जब कि हमें त्रोत्स्की की दूसरी हिदायतें मिलीं, कुछ परिवर्तन दिखाई देने लगे, लेकिन दुर्भाग्य से इसका कोई परिणाम नहीं हुआ।

विशिन्स्की—इसके बारे में हम पीछे बोलेंगे। इस वक्त हम अप्रेल १६३४ की शरद् तक के काल के बारे में जानना चाहते हैं। क्या प्याताकोफ्, सेरे ब्रेथाकोफ् और

सोकोल्निकोफ़् को त्रोत्स्की के पत्र के बारे में सूचित किया गया ?

रादेक्—हां।

प्रेसिडेन्ट—प्रस्ताव होता है कि बीच के विश्राम के बाद अभियुक्त सेरेब्रेयाकोफ़् सोकोल्निकोफ़् और प्यातोकोफ़् की जिरह की जाय।

विशिन्स्की—मेरा प्रश्न बहुत संक्षिप्त होगा। (प्यातोकोफ़् से) क्या तुम सहमत हो कि रादेक् के पास भेजे गये त्रोत्स्की के पत्र के बारे में तुम्हें सूचना दी गई थी ?

प्यातोकोफ़्—इस बात को मैंने कलही स्वीकार किया था और इस वक्त भी कबूल करता हूं कि यह बात बिलकुल वास्तविक है।

विशिन्स्की—(सोकोल्निकोफ़् से) वही प्रश्न मैं तुमसे भी पूछता हूं।

सोकोल्निकोफ़्—मुझे भी सूचित किया गया था।

विशिन्स्की—तुम भी इस दृष्टिकोण से सहमत थे ?

सोकोल्निकोफ़्—हाँ।

विशिन्स्की—(सेरेब्रयाकोफ़् से) तुम भी इस पराजयवादी दृष्टिकोण से सहमत थे ?

सेरेब्रयाकोफ़्—मेरा इससे इन्कार नहीं।

विशिन्स्की—(रादेक् से) तुमने कहा था एक दूसरे पत्र के

बारे में जो दिसम्बर १६३५ में आया था। उसके बारे में बतलाओ।

राडेक्—मुझे वह पत्र दिसम्बर के आरम्भ में मिला था, इस समय यह कोई विशेष राजनैतिक पत्रव्यवहार नहीं था, चाहे कुछ थोड़ा मौलिक प्रोग्राम का महत्त्व भले ही रखता हो, किन्तु एक दूसरे प्रकार का प्रोग्राम–मसविदा–था।

विशिन्स्की—चूंकि कल इसके बारे में हमने सुना है, किन्तु मैं समझता हूं अदालत को इसके सुनने से इनकार नहीं होगा।

तुम हमें मुख्य-मुख्य बाते बताओ।

राडेक्—सब से पहले मुख्य बात थी अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच की। कहा गया था कि जर्मन फासिस्तवाद की विजय ने यूरोप के फासिस्तीकरण का युग आरंभ किया है जिसमें दूसरे देशों में फासिस्तवाद की विजय, श्रमिक श्रेणी की पराजय और क्रान्तिकारी परिस्थिति का अभाव तब तक जरूरी है जब तक कि अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध द्वारा उत्पन्न जैसा आमूल परिवर्तन नहीं हो जाता यह पहली बात है। और जहां तक दूसरी बात का सम्बन्ध है मुख्य बात की दो वैकल्पिक संभावनाएं हो सकती हैं।

विशिन्स्की—इसके बारे में तुमने कल कहा है।

राडेक्—पहली बात, जिसे कि वह काम में आने लायक नहीं समझते थे, थी—बिना युद्ध के ही अधिकारारूढ़ होना।

विशिन्स्की–अर्थात् बिना पराजय के ?

राडेक्—अर्थात् कार्योपयोगी योजना यही थी कि पराजय के परिणाम-स्वरूप अधिकारारूढ़ हुआ जाय। यह पराजय के परिणाम-स्वरूप अधिकारारूढ़ होना त्रोत्स्की के बारे में बतलाता है कि उस समय तक देश से बाहर त्रोत्स्की और यहां मास्को में हमने सोवियत् राष्ट्र के ढांचे के भीतर आर्थिक पश्चादूगति (पीछे हटना) के बारे में कहा था। इस पत्र में एक भारी परिवर्तन का जिक्र किया गया था। क्योंकि अव्दल—त्रोत्स्की सोचता था कि पराजय के परिणामस्वरूप कुछ भूमिका परित्याग अवश्यंभावी होगा, और इसके लिये उसने उक्रइन का नाम भी लिया। दूसरा था सोवियत् संघ के बटवारे का प्रश्न। तीसरा-अर्थशास्त्रीय दृष्टि से, उसने पराजय के निम्नलिखित परिणाम पहले ही देख लिये : पूंजीवादी देशों के लिये महत्त्वपूर्ण औद्योगिक कामों में रियायत देना ही नहीं बल्कि बदली करना, और महत्वपूर्ण अर्थशास्त्रीय उद्योग का खास तौर से वैयक्तिक पूंजीवादी कारखाने वालों को बचना। त्रोत्स्की एक ऐसा कर्ज उठाना चाहता था कि उन कारखानों के संचालन में विदेशी पूंजी लगने का अवसर देता जो कि सोवियत् राज्य के हाथ में मौजूद थे।

कृषि सम्बन्धी-नीति के विषय में उसने स्पष्ट कहा कि पंचायती खेतियों को तोड़ना होगा और उसने इस विचार क

प्रतिपादन किया कि नवीन कुलक (धनी किसान)—श्रेणी को पुनरुज्जीवित करने के लिये व्यक्तिगत रूप से किसानों को ट्रैक्टर और दूसरी कृषि सम्बन्धी मशीनें दी जायँ। अन्त में यह साफ कहा था कि नगरों में व्यक्तिगत पूंजी को पुनरुज्जीवित किया जाय। यह स्पष्ट था कि इसका अर्थ था पूंजीवाद की नये सिरे से स्थापना करना।

राजनीतिक क्षेत्र के सम्बन्ध में, इस पत्र में, एक नयी टिप्पणी लिखी गई थी, उसका मतलब था शक्ति की समस्या। इस पत्र में त्रोत्स्की ने कहा था: यहां किसी प्रकार की प्रजासत्ताकता के बारे में बातचीत करने की आवश्यकता नहीं। श्रमजीवी-श्रेणी क्रान्ति के अट्ठारह वर्षों में जीती रही है और इसका पेट भारी है; और इस श्रमिक-श्रेणी को पीछे लौटाना होगा, कुछ को तो वैयक्तिक कारखानों में और कुछ को सरकारी कारखानों में—जो कि विदेशी पूंजी द्वारा बड़ी कठिन परिस्थिति में मुकाबला करेगी। इसका अर्थ है कि श्रमिक-श्रेणी के जीवनोपयोगी आर्थिक तल को बहुत ही नीचे गिराना होगा। देहात में गरीब और मध्यवित्त किसानों का कुलकों (धनी किसानों) के साथ संघर्ष नये सिरे से होगा। तब अधिकार अपने हाथ में रखने के लिये हमें एक मजबूत गवर्नमेन्ट की जरूरत होगी, चाहे दिखलाने के लिये उसका रूप कोई भी हो।

यदि तुम ऐतिहासिक उदाहरण चाहते हो तो नेपोलियन

प्रथम की सरकार को ले लो और इस उदाहरण पर विचार करो। नेपोलियन प्रथम का साम्राज्य धनिक शासन की पुनः स्थापना नहीं था–पुनः स्थापना पीछे आई, बल्कि यह (फ्रांस की) क्रान्ति से प्राप्त मुख्य लाभों को सुरक्षित करने का प्रयत्न–क्रान्ति से जो कुछ सुरक्षित किया जा सके उसको सुरक्षित करना–था। यह कुछ नयी सी बात थी। उसने अनुभव किया कि परिस्थिति का स्वामी—जिसकी सहायता से दल अधिकारारूढ़ हो सकेगा, वह फ़ासिस्तवाद—एक तरफ जर्मन-फ़ासिस्तवाद और दूसरी तरफ एक दूसरे सुदूरपूर्वीय देश का सैनिक फ़ासिस्तवाद होगा।

क्रियात्मक परिणाम के विषय में जहां तक कहना है, नई बात यह थी कि इस कार्रवाई—अर्थात् कारखानों और रेलों के नाश करने की कार्रवाई—के बारे में उस भागीदार के साथ ख़ास तौर से एक राय होने की आवश्यकता है, जिसकी सहायता से दल अधिकारारूढ़ हो सकता है।

अन्त में नया ढंग यह था—यद्यपि यह मुख्य चीज नहीं थी, बल्कि सिर्फ दिखलाना था —कि हम परिस्थिति से मजबूर थे किसी भी चीज को स्वीकार करने के लिये। तो भी यदि हम जीवित और अधिकारारूढ़ रहे तो इन दोनों देशों को विजय, और उनकी लूट के नफे के लिये दोनों देशों में जो झगड़ा उठ खड़ा होगा वह हमारे लिये नया मौका देगा; यद्यपि

यह कल्पना-जगत् की बात थी। पहली हिदायत का सार इस प्रकार था।

इन हिदायतों में एक दूसरी महत्त्वपूर्ण बात थी यह सूत्र कि यदि हम अधिकार अपने हाथ में रखना चाहते हैं तो सोवियत् संघ के सामाजिक ढांचे को विजयी फासिस्तवादी देशों के समान करना होगा। यह समान करने का विचार—जो कि पूंजीवाद की पुनः स्थापना का एक बनावटी नाम था—हिदायतें पाने के साथ ही हमारे लिये एक बिल्कुल नयी सी बात मालूम हुई।

विशिन्स्की—यदि हम इस पत्र के उल्लिखित विषय का संक्षेप करें, तो क्या हैं मुख्य बातें ?

रादेक्—हम १९३४ की बात पर डटे हुए थे कि पराजय अवश्यम्भावी है।

विशिन्स्की—तुमने इसका क्या परिणाम निकाला ?

रादेक्—इस अवश्यंभावी पराजय से यह परिणाम निकलता था कि अब पूंजीवाद की पुनः स्थापना का प्रश्न खुले तौर से हमारे सामने रक्खा था।

विशिन्स्की—अर्थात् पूंजीवाद की पुनः स्थापना, जिसे कि त्रोत्स्की कहता था—सोवियत् संघ के सामाजिक ढांचे को पूँजीवादी देशों के समान करने—को विदेशी राष्ट्रों के साथ सुलहनामे का अवश्यम्भावी परिणाम समझा गया था ?

राडेक्—सोवियत्-संघ की पराजय, इस पराजय के सामाजिक नतीजे और इस पराजय के आधार पर किये गये सुलहनामे के अवश्यम्भावी परिणाम के तौर पर।

विशिन्स्की—आगे ?

राडेक्—तीसरी शर्त जो हमारे लिये सब से अधिक अनोखी थी- सोवियत् शक्ति के स्थान पर, त्रोत्स्की के शब्दों में, बोनापार्ती सरकार की स्थापना। और हमारे लिये इसका अर्थ स्पष्ट था—फासिस्तवाद, बिना अपनी आर्थिक पूंजी के विदेशी आर्थिक पूंजी की सेवा में।

विशिन्स्की—चौथी शर्त ?

राडेक्—देश का बटवारा करना। इसका स्पष्ट अर्थ था उक्रइनको जर्मनी के हाथों सौंपना और समुद्रतटवर्ती प्रदेशों तथा आमूर प्रान्त जापान के हाथों में दे देना।

विशिन्स्की—क्या उस समय किसी दूसरी आर्थिक रियायत की बात चली थी ?

राडेक्—हां, उन निर्णयों—जिनके बारे में मैं कह चुका हूँ— का अधिक स्पष्टीकरण। खाद्य सामग्री, कच्चे माल और चर्बी की शकल में बहुत वर्षों तक हर्जाना देना। फिर— पहले उसने आंकड़े नहीं दिये थे लेकिन पीछे उसने और साफ करके लिखा—सोवियन् के निर्यात का एक निश्चित प्रतिशतक विजयी देशों के लिये रखना। इन सब को

मिला कर मतलब था देश के लिये पूरी गुलामी ।

विशिन्स्की—क्या वहां सखालिन् के तेल के बारे में बातचीत हुई थी ?

रादेक्—जापान के सम्बन्ध में हमें कहा गया था कि उसे सिर्फ सखालिन् का तेल ही नहीं देना होगा, बल्कि युक्तराष्ट्र अमेरिका के साथ लड़ाई होने पर और भी तेल के लिये वचन देना होगा। यह भी कहा गया था कि जापानी साम्राज्यवाद के चीन जीतने में किसी तरह की रुकावट नहीं डालनी होगी।

विशिन्स्की—और दनूब्-तटवर्ती देशों के बारे में ?

रादेक्—दनूब् और बलेकान के देशों के सम्बन्ध में त्रोत्स्की ने अपने पत्र में लिखा था कि जर्मन फासिज्म वहां बढ़ रहा है और उसके रोकने के लिए हमें कुछ नहीं करना चाहिये। हां, यह बात भी कही गई थी कि, चेकोश्लोवाकिया से हमें उस तरह का कोई भी सम्बन्ध नहीं रखना है जो कि उस देश की रक्षा में सहायक हो सकता है।

विशिन्स्की—क्या ये ६ शर्तें १९३५ के इस पत्र का सम्पूर्ण सार हैं ?

रादेक्—हाँ ।

विशिन्स्की—मैं समझता हूं, तुमने नाना प्रकार की ध्वंसात्मक कार्रवाइयों की अधिक गंभीरता के बारे में कहा था।

राडेक्—इस सम्बन्ध में उसने कोई ब्यौरेवार हिदायत नहीं दी थी, किन्तु उसने बतलाया था कि युद्ध जल्दी आ रहा है, और चाहे वे देश दल के स्वीकार करने का विश्वास भी दिलायें तो भी यह रद्दी का टुकड़ा ही होगा जब तक कि दल मजबूत नहीं हो जाता। और दल की शक्ति का भाव है उसकी आतंकवादी कार्रवाइयां, उसके ध्वंसात्मक कार्य और लड़ाई के समय सेना में अपना प्रभाव दिखाना। इस पत्र में ध्वंसात्मक कार्य फैलाने और मजबूत करने तथा आतंकवादी और विभेदक कार्रवाइयों की आवश्यकता के बारे में भी हिदायतें थीं।

ये कार्रवाइयां सारे प्रोग्राम के साथ एकता रखती थीं, और अधिकारारूढ़ होने के लिए उन्हें एक प्रधान जरिये के तौर पर कहा गया था। युद्ध के बारे में बतलाया गया था कि त्रोत्स्कियाइयों को सेना के संगठन और विनय को कमजोर करना चाहिये।

विशिन्स्की—क्या युद्ध और सोवियत् संघ की पराजय के सम्बन्ध में विभेदक कार्यों पर विचार नहीं हुआ था?

राडेक्—वहां स्पष्ट कहा गया था कि वे राष्ट्र हमारी शक्ति का अन्दाजा उस मदद से लगायेंगे जो कि हम उन्हें देंगे।

विशिन्स्की—और यह मदद किस रूप में देनी थी?

राडेक्—यह मदद थी त्रोत्स्कियाइयों द्वारा सेना की नैतिक शक्ति

को कमजोर करने के साथ ध्वंसात्मक तथा आतंकवादी कार्रवाइयों की बढ़ती के रूप में।

विशिन्स्की—और क्या युद्ध सम्बन्धी उद्योग के बारे में भी कुछ कहा गया था?

रादेक्—इसके बारे में खास तौर से यह बात कही गई थी कि युद्ध सम्बन्धी उद्योग में त्रोत्स्कियाइयों की विभेदक कार्रवाइयों को भागीदार राष्ट्रों के साथ सहमत होकर करना है और इस विषय में उनके—अर्थात् उन विदेशी राष्ट्रों के सेना-संचालकों के साथ सन्धि करनी होगी।

विशिन्स्की—विभेदक कार्यों की योजनाके सम्बन्धमें उन देशों के सेना-संचालकों के साथ समझौता करना?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—साधारण तौर से या ठोस रूप में यह योजना कैसे तैयार की गई?

रादेक्—यहां हिदायतें बिल्कुल साधारण रूप में थीं और उनका सम्बन्ध था मास्को की तरफ से जो कुछ विरोध होगा, उससे। साफ है कि यह द्वितीय श्रेणी के महत्त्व की बात न थी जिसे कि इच्छानुसार पसंद किया या छोड़ा जा सकता हो; एक ऐसी चीज थी जिसके लिए वह सब कुछ दे सकते थे।

विशिन्स्की—कल हमने उस बात को प्रकट किया था जिसे कि

प्याताकोफ़् ने सोकोल्निकोफ़् से कहा था अर्थात् युक्त होने पर केमेरोओ-संयुक्त रासायनिक कारखाने में आग लगा देना। क्या प्यातकोफ़् ने नोर्किन् को जो यह हिदायत दी थी वह इस पत्र के अभिप्राय को लेकर थी ?

रादेक्—मैं नहीं जानता कि प्याताकोफ़् को वैसी बातचीत करने के लिये किस बात ने प्रेरित किया, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि ध्वंसात्मक कार्रवाइयों के संचालकों ने उससे पहले भी ऐसी हिदायतें दी थीं, और वे पत्र के भाव और उसकी मांग की पूरी तौर से पुष्टि करती थीं।

विशिन्स्की—(प्याताकोफ़् से) अभियुक्त प्याताकोफ़् ! युद्ध के वक्त केमेरोओ-रासायनिक कारखाने में आग लगाने की, जिस समय तुमने नोर्किन को हिदायत दी क्या उस वक्त तुम किसी सामान्य नीति का अनुसरण करते थे ?

प्याताकोफ़्—यह त्रोत्स्की की दी हुई "ठोसी-करण" नीति का अनुसरण कर के मैंने किया था।

विशिन्स्की—और सोकोल्निकोफ़् के साथ तुम्हारी बात जब कि तुम्हारे १६३५ में बर्लिन से लौटने पर, त्रोत्स्की से स्वयं मिलने के बाद, हुई थी ?

प्याताकोफ़्—हाँ।

विशिन्स्की—और क्या त्रोत्स्की से मुलाकात के समय ये मांगें तैयार की गई थीं ?

प्याताकोफ़्—अवश्य।

विशिन्स्की—(रादेक् से) क्या वहां रेलवे-यातायात की बात नहीं हुई ?

रादेक्—"ठोसीकरण" की सारी बात युद्ध से सम्बन्ध रखती थी, इसलिये यातायात उससे अलग नहीं किया जा सकता था।

विशिन्स्की—अभियुक्त सेरेब्र्याकोफ़् ! त्रोत्स्की के १६३५ वाले पत्र के बारे में रादेक् से जो तुम्हारी बात हुई थी क्या तुम्हें वह याद है ?

सेरेब्र्याकोफ़्—हां।

विशिन्स्की—क्या रादेक् ने त्रोत्स्की की हिदायतों को यातायात के क्षेत्र की तुम्हारी कार्रवाइयों से सम्बद्ध किया था ?

सेरेब्र्याकोफ़्—यह स्वभावतः मेरे दिमाग में उससे सम्बद्ध था। पहले १६३४ में और दिसम्बर १६३५ में जब कि मैं और लिव्शित्ज़् ने विचार विनिमय किया—उस समय लिव्शित्ज़् रेलवे का सहायक राजमंत्री था—हमने कहा कि खास समय में यातायात के विभेदक और नाशात्मक कामों को गंभीर करने का प्रश्न उठ सकता है।

विशिन्स्की—तुमने लिव्शित्ज़् से बातचीत की ?

सेरेब्र्याकोफ़्—हां, उस समय हमने समझा था कि मालगाड़ी के यातायात में बाधा डालने के लिये अधिक महत्त्व के

जंक्शनों को रोकना और क्षमता से अधिक भार लादना जरूरी है।

विशिन्स्की—और विभेदक कार्यों के संगठन के बारे में ?

सेरेब्र्याकोफ्—प्रश्न इस तरह पेश किया गया था कि हमें विभेदक कार्यों के लिए कार्यकर्त्ताओं की भर्त्ती में शीघ्रता करनी चाहिए।

विशिन्स्की—अभियुक्त लिव्शित्ज् ! इस विषय में तुमको क्या कहना है ?

लिव्शित्ज्—मैं स्वीकार करता हूँ कि युद्ध के समय में ध्वंसात्मक कार्यों के संगठन के लिये सदस्यों की भर्ती में जल्दी करने के सम्बन्ध में हमने बातचीत की थी।

विशिन्स्की—तुम रेलवे-विभाग के सहायक राजमंत्री थे और साथ ही युद्ध के समय रेलवे में यातायात में बाधा डालने के लिये वार्तालाप कर रहे थे ?

लिव्शित्ज्—हां, मैंने सोचा, चूंकि हम त्रोत्स्कियाई-जिनोवियेफी दल के अधिकारारूढ़ होने के लिये संघर्ष चला रहे थे, इसलिए ऐसा करना उसके लिए जरूरी था।

विशिन्सकी—तो इन तैयारियों का सम्बन्ध अधिकारारूढ़ होने के लिये तुम्हारे दल के सारे संघर्ष का एक भाग था ?

लिव्शित्ज्—हां।

विशिन्स्की—और तुम्हारा इसके बारे में यह खास वार्तालाप

सेरेब्र्याकोफ् के साथ हुआ था।

लिव्शित्ज्—हां।

विशिन्स्की—और प्यातोकोफ् से?

लिव्शित्ज्—नहीं।

विशिन्स्की—लेकिन उस समय क्या तुम्हारी प्यातोकोफ् से मुलाकात नहीं हुई?

लिव्शित्ज्—हां, हुई थी।

विशन्स्की—अवश्य तुमने प्यातोकोफ् से दल के कामों के बारे में कहा होगा?

लिव्शित्ज्—वह और मैं ऐसे प्रश्नों पर बात नहीं करते थे।

विशिन्स्की—तो क्या बात तुमने की?

लिव्शित्ज—हमने आम तौर से रेलवे में जो काम त्रोत्स्कियाई कर रहे थे, उसी पर बातचीत की।

विशिन्स्की—जैसे?

लिवशित्ज्—उन आज्ञाओं को कार्य रूप में परिणत होने से रोकना, जिनसे कि रेलवे के कामों में सुधार होता।

विशिन्स्की—प्यातोकोफ् से तुमने क्या बात की?

लिव्शित्ज—उन कामों के बारे में जिन्हें कि त्रोत्स्कियाई यातायत संस्थाओं में कर रहे थे, अर्थात् उन आज्ञाओं को होने नहीं देना जिनसे कि रेलवे के कामों में सुधार होता।

विशिन्स्की—प्यातोकोफ् ने रेलवे में ध्वंसात्मक और विभेदक

कार्यों के बाहुल्य के लिये स्वयं हिदायत और आदेश दिये थे ?

लिव्शित्ज़—हाँ।

विशिन्स्की—तुमने उन्हें स्वीकार किया ?

लिवशित्ज़—हां।

विशिन्स्की—उन्हें कार्यरूप में परिणत किया ?

लिवशित्ज़—हाँ,जिन्हें कर सकता था उन्हें पूरा किया।

विशिन्स्की—तुमने ध्वंसात्मक कार्राइयां कीं ?

लिव्शित्ज़—हां।

विशिन्स्की—तुमने कामको छिन्न-भिन्न किया ?

लिवशित्ज—हाँ।

विशिन्स्की—(रादेक् से) त्रोत्स्की के १६३५ के प्रोग्राम का सार क्या था ?

रादेक्— १६३५ में पूंजीवाद की ओर लौटने का प्रश्न उठा था।

विशिन्स्की—किस हद तक ?

रादेक़्—त्रोत्स्की का जो प्रस्ताव था उसमें कोई हद न थी। उस हद तक जहां तक कि शत्रु चाहेगा।

विशिन्स्की—इस प्रकार फिर पराजय का ही ख्याल बराबर था ?

रादेक्—हाँ, नया रूप यह था कि पराजय विदेशियों की हिदायत से सम्बद्ध थी।

विशिन्स्की—अर्थात् अब वैदेशिक सेना-संचालकों के साथ

सीधा इन्तजाम किया गया था ?

रादेक्—यह बात पहले न थी।

विशिन्स्की—इसने तुम्हें रुककर सोचने को बाध्य किया ?

रादेक्—जिसने मुझे रुककर सोचने को बाध्य किया, वह इतना ही नहीं था बल्कि वह अन्तर भी था जो कि पहले १९३४ में देश की मौजूदा परिस्थिति और पीछे की परिस्थिति में था।

विशिन्स्की—प्याताकोफ् ने अपनी ओस्लो की यात्रा के बारे में तुमसे कहा था ?

रादेक्—हमलोगों के आपस में बातचीत होने के बाद प्याताकोफ़् की यात्रा का निर्णय हुआ। हम इस नतीजे पर पहुँचे कि ओस्लो में विद्यार्थियों के सामने व्याख्यान देने के जो तीन तीन बार निमंत्रण आये, उससे मुझे लाभ उठाना चाहिये। यदि सरकारी काम के लिये प्याताकोफ् बाहर नहीं भेजा गया तो वैसा करने के लिये आज्ञा पाने पर मुझे व्याख्यान देने के लिये ओस्लो जाना पड़ता और उस समय मैं त्रोत्स्की से मिलता।

विशिन्स्की—सो तुम विदेश जाने को थे ?

रादेक्—मैं या प्याताकोफ्। इस यात्रा के उद्देश्य के बारे में मैं कहना चाहता हूँ क्योंकि कल प्याताकोफ् ने उसे बहुत साफ तौर से नहीं कहा। क्यों मैंने उसके सामने यह प्रस्ताव

रक्खा और क्यों उसने तुरन्त स्वीकार कर लिया कि त्रोत्स्की से मिलना जरूरी है ? उसने यह कहते हुए मेरे प्रस्ताव का समर्थन किया कि आदमी (त्रोत्स्की) वास्तविकता का ज्ञान बिलकुल खो चुका है; और उसने हमारे सामने ऐसे काम रखे हैं कि यदि हम अपने भावों का ख्याल न करें तो भी उन्हें पूरा नहीं कर सकते और इसलिए यह बहुत आवश्यक हो पड़ा है कि चाहे जो भी हो इन चीजों के बारे में उससे बात करें। प्यताकोफ् ने प्रस्ताव के लिये यह व्याख्या की। मैंने इसकी कोई व्याख्या नहीं की कि क्यों इस मुलाकात के लिये जोर दे रहा हूं और क्यों उसे आवश्यक समझता हूँ। किन्तु मैं यह स्वीकार करूंगा कि मैं एक क्षण के लिए भी उन अभिप्रायों पर विश्वास नहीं करता था जिन्हें कि प्याताकोफ् ने सामने रक्खा।

विशिन्स्की—क्यों ?

रादेक्—उसका कारण सीधा था। प्याताकोफ् त्रोत्स्की को बहुत अच्छी तरह से जानता था और वह एक क्षण के लिये भी सोच नहीं सकता था कि उसकी दी हुई युक्तियों से प्रभावित होकर त्रोत्स्की कभी इस बात को स्वीकार करेगा कि मैं परिस्थिति के मूलाधार को नहीं समझता। और नीचता में ५ प्रति शत कमी कराने के लिये अपनी गर्दन की बाजी लगाना ठीक बात नहीं कही जा सकती, इसीलिए

प्याताकोफ् की व्याख्या मेरे लिए कोई मूल्य नहीं रखती थी और मैंने सोचा कि शायद उसके भी अभिप्राय मेरे जैसे हों, और मेरे अभिप्राय बिल्कुल सीधे-सादे थे। इन हिदायतों को पढ़ने के बाद रात को मैंने उन पर विचार किया और दूसरे दिन प्याताकोफ् के पास गया। मेरे लिए यह स्पष्ट था कि यद्यपि हिदायतों में वे सभी तत्त्व मौजूद हैं जो कि पहले से भी मौजूद थे, तो भी अब ये तत्त्व इतने परिपक्व हो गये हैं कि इन हिदायतों को स्वीकार करने का मतलब है, प्रथम, इनको पूरा करने के लिए हमें अपेक्षाकृत अधिक लोगों को सूचित करना होगा; क्योंकि हमें संगठनकर्त्ताओं के सामने काम रखने थे, और ये काम काफी विस्तृत थे। हमें इसके बारे में उन्हें सूचित करना होता और यह भी बतलाना होता कि इन हिदायतों के बारे में मेरा व्यक्तिगत विचार क्या है, और मैंने अपनी आंख मूंद कर जिन व्यक्तियों से इन हिदायतों का सम्बन्ध था उनके बारे में विचार किया तो मुझे पूरा निश्चय हो गया था कि उन सब से अधिक महत्त्वशाली व्यक्तियों में से, जिन्होंने कि फौजदारी कानून के अनुसार भारी अपराध किया है,-बहुत से इन हिदायतों को समझने में ही असफल नहीं होंगे बल्कि दल से अपना सम्बन्ध विच्छिन्न करके ही इन्हें स्वीकार करेंगे। मैं एक क्षण के लिये भी सोच सकता

था कि मुरालोफ् सोवियत् संघ के बटवारे के समर्थन की नीति को स्वीकार करेगा। और मैं एक दर्जन दूसरे व्यक्तियों—जिनसे मेरा वैयक्तिक परिचय था—के बारे में इसे सच समझ सकता था। मैं उनके कामों को यहां नहीं बतलाऊंगा जिसमें कि मैं सफ़ाई का वकील समझा जाऊं जब कि उन्होंने वकील करने से इन्कार कर दिया, और इसलिये भी कि उन्होंने ऐसा करने के लिए मुझे वकालत-नामा नहीं लिखा है। किन्तु मेरे लिए, एक राजनीतिज्ञ के तौर पर यह स्पष्ट था कि यह प्रोग्राम दल को छिन्न-भिन्न कर रहा है। इस प्रोग्राम के अनुसार वे ध्वंसात्मक कार्रवाइयों-आतंकवाद और उसी तरह की दूसरी बातों— जो कि सोवियत् संघ की शक्ति को कमजोर करने वाली हैं— में लगाना चाहते हैं। किन्तु आकर यह कहना कि फलस्वरूप अधिकार पाने और पुलिस-सार्जेण्ट बनने और देश में पूँजीवाद के स्थापित करने के लिये यह करना होगा— मेरा दृढ़ विश्वास था कि इसका अर्थ है दल की मृत्यु और सर्वनाश। इसीलिये इस प्रश्न के उठने पर कि मुझे क्या करना है और जिन आदमियों से मैं यह कहने जा रहा हूं कि उन्हें क्या करना है, यह बिल्कुल स्पष्ट था कि यदि मैं, यह जानते हुए कि वह इससे भी ज्यादा सख्त हिदायतों को लायेगा, प्याताकोफ़्, के पास जाता तो इस प्रश्न का

उठना स्वाभाविक था कि हमारी कार्रवाइयों ने हमें ऐसी जगह पहुंचा दिया है जहां कि पूँजीवाद की पुन॰ स्थापना और देश को पर-शासित उपनिवेश बनाकर विश्वासघात करने के लिए हमें कहा जायगा। हमने अपने लिए निश्चय किया कि उस सूत्र के बारे में जो कि चार बातों— (१) हम लोग इस सूत्र की जिम्मेदारी नहीं ले सकते, (२) हम इन हिदायतों की जिम्मेदारी नहीं ले सकते, (३) हम लोगों को अन्धाधुन्ध नहीं चला सकते और (४) हम सोवियत् लाल सेना के आदमियों की हत्या नहीं करा सकते— के कारण निःस्सार था। हमने एक कान्फ्रेन्स बुलाने का निश्चय किया। प्याताकोफ़् त्रोत्स्की के पास गया, मैं नहीं समझता कि प्याताकोफ़् ने यहां इसके बारे में क्यों नहीं कहा, क्योंकि त्रोत्स्की के साथ बातचीत में शायद सब से अधिक मुख्य बात थी— जब कि त्रोत्स्की ने कहा कि कान्फ्रेन्स का मतलब है भंडाफोड़ या फूट। प्यातोकोफ़् ने लौट कर त्रोत्स्की के साथ हुई अपनी बातचीत के बारे में बतलाया। वहीं, उसी जगह हमने निश्चय किया कि एक कान्फ्रेन्स बुलायी जाय— त्रोत्स्की के निषेध करने पर भी। मैंने सेरेब्र्याकोफ़् से बात की और वह मुझ से सहमत हुआ। और स्नेकोल्निकोफ़्— जो कि चुप्पी साधे रहा और हिदायतों को पूरी तरह पालन करने का भाव रखने

की कोशिश करता था— ने कहा कि चूंकि इस कांफ्रेन्स का बुलाना अनिवार्य है इसलिये बुलाना चाहिये। हम सहमत हुए कि कान्फ्रेंस को कैसे संगठित किया जाय और इस पर भी कि किन किन व्यक्तियों को हमें आमन्त्रित करना चाहिये, और किसको किस टोली के साथ सम्बन्ध रखना चाहिये।

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, प्याताकोफ्, सेरेब्रयाकोफ् और ग० उ० सोकोल्निकोफ् के साथ मेरा यह अंतिम वार्तालाप था।

इस सम्बन्ध में मैंने निम्न तरीके अख्तियार किये:—चाहे जिस तरह भी हो ड्राइत्जेर को मास्को बुलाया जाय—मैं कहूँगा क्यों—शायद इस मुकदमे में यह सब से महत्त्वपूर्ण बात है, प्रेओब्राजेन्स्की के द्वारा रोस्तोफ् के आदमियों के साथ सम्बन्ध कायम करना और उन्हें मास्को बुलाना। ऐसा करते हुए मैंने उन्हें यह नहीं बतलाया कि जड़ में क्या बात है तो भी वहां एक ऐसी कान्फ्रेन्स होने जा रही थी जिसमें कि जीवन-मरण जैसे एक प्रश्न का निर्णय होने जा रहा था और उन लोगों का आना बहुत जरूरी था। और यह ऐसा समय था जो कि हम सबों के लिए, भीतर से, यह अर्थ रखता था कि हम सीमा तक पहुंच गये।

हिदायतों के पाने के बाद क्या हमने अपनी कार्रवाइयों

को रोका ? नहीं। मशीन चलती रही। हम ने हिदायतों को स्वीकार नहीं किया, किन्तु इन्कार भी नहीं किया। परिणामतः जहां तक पहले की हिदायतों का सम्बन्ध था, मशीन चलती रही—विशेष कर के चूंकि हमने अपने आदमियों से कान्फ्रेंस की बात छिपा रक्खी थी। ऐसा करते हुए मैं एक कौशलपूर्ण और क्रियात्मक ढंग के विचारों से प्रेरित हुआ था, और मैंने उसे यहां तक छिपाया था—अर्थात् इन हिदायतों की बात को छिपाया था—कि जब जनवरी में बुखारिन् से मिला, और बातचीत में उसने मुझ से पूछा कि क्या नई खबर है इत्यादि, मैं—जो कि सभी अवसरों पर त्रोत्स्की की भेजी सम्पूर्ण हिदायतों से उसे सूचित किया करता था—ने उसे सभी बातें बतलायीं—किन्तु इन हिदायतों के बारे में उसे कुछ नहीं कहा, पहले भेजे हुए पत्रों, जो कि मेरे पास आये थे—के बारे में कहा।

और इस प्रकार नागरिक प्रोक्यूरेटर ! मैं निम्न बातें कहना चाहता हूं :—

क्या हमने अपनी कार्रवाइयों को रोका ? नहीं। गिरफ्तारी के समय तक हम में से हर एक जो कुछ कर सकता था, करता रहा। इन महीनों में यदि मुझ से बहुत काम नहीं हो सका तो इसका श्रेय मुझे नहीं है। उदाहरणार्थ यदि कहीं प्रिगोजिन् मेरे पास आया होता (वह पहले ही गिरफ्तार हो

गया था और मेरे पास नहीं आ सका) और मुझसे पूछता : "क्या हमें अपनी कार्रवाई जारी रखनी चाहिये ?" तो मैंने कहा होता : "हां, उन्हें जारी रक्खो।" यदि फ्रीदलान्द मेरे पास आता तो मैं उससे भी यही कहता।"

किन्तु इतना होने पर भी मैं जानता था कि यहां एक नई बात हुई है जिसके बारे में ब्यौरेवार उत्तर मैं पीछे दूंगा— और यह बात सिर्फ़ मेरे लिए नहीं थी, बल्कि उन सभी लोगों के लिए थी जो कि उन हिदायतों को जानते थे; ये हिदायतें हद थीं।

विशिन्स्की—तीन बातें : अप्रेल १९३४ का पत्र, दिसम्बर १९३५ का पत्र, और दिसम्बर १९३५ में त्रोत्स्की से प्याताकोफ़ की मुलाकात। त्रोत्स्की के १९३४ वाले पत्र में प्रश्न कैसे उठाया गया था ? युद्ध, पराजय के लिए कारण ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—तत्त्वरूप में पूंजीवाद की ओर लौटना ?

रादेक्—नहीं। १९३४ के पत्र में पूंजीवाद की तरफ लौटने का सवाल नहीं उठाया गया।

विशिन्स्की—नहीं ? तो फिर ?

रादेक्—पीछे लौटना जिसके बारे में हम उस समय समझते थे......

विशिन्स्की—किस ओर ?

रादेक्—नवीन अर्थ-नीति की अवस्था की ओर, १९२८ के पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत उद्योग-धन्धे के साथ।

विशिन्की—पीछे को लौटना किन तत्वों को मजबूत करने के लिये?

रादेक्—पीछे लौटना था पूंजीवादी कुछ तत्त्वों की पुनः स्थापना के लिये भी। किन्तु यह पीछे लौटना यदि १९२७ की अवस्था से इसकी तुलना की जाय—तो इस पीछे लौटने के समय सम्भव होगा-एक ओर, पूंजीवाद की पुनः स्थापना को स्वीकार करना, किन्तु साथ साथ उद्योग-धंधे को दृढ़ करना, प्रथम पंचवार्षिक योजना की कृपा से; सरकारी खेती और पंचायती खेती को भी; अर्थात् हमें एक आर्थिक आधार मिला होता, जिसके ऊपर कि, मेरी राय में, कोई भी श्रमजीवी सरकार अपने अस्तित्व को कायम रख सकती।

विशिन्स्की—सो, कोई श्रमजीवी सरकार तब भी अपने अस्तित्व को कायम रख सकती? तो भी ख्याल पीछे की ओर जाने का था?

रादेक्—ख्याल पीछे की ओर जाने का था।

विशिन्स्की—१९३४ की अपेक्षा १९३५ में यह बात और स्पष्ट थी?

रादेक्—१९३५ में पूंजीवाद की ओर लौटने का सवाल उठा था।

विशिन्स्की—किस हद तक ?

रादेक्—त्रोत्स्की ने जो प्रस्ताव किया था, उसमें कोई हद न थी। इस हद तक जहां तक कि शत्रु चाहे।

विशिन्स्की—सो, फिर पराजय का ही ख्याल गूंज रहा था ?

रादेक्—हां! नयी बात यह थी कि पराजय अब वैदेशिक आदेशों के साथ सम्बद्ध थी।

विशिन्स्की—यह नयी बात स्वीकार की गई थी ?

रादेक्—पहले मुझे पराजय के सवाल का जवाब देने दीजिये।

विशिन्स्की—नयी बात क्या थी ?

रादेक्—नयी बात थी : जिस ढंग से पराजय का सवाल सामने रक्खा गया था।

विशिन्स्की—१९३४ की अपेक्षा यह नयी चीज़ थी ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और प्याताकोफ् के वार्तालाप की अपेक्षा ?

रादेक्—वार्तालाप हिदायतों के अनुरूप था ; सिर्फ इसने ख़तरे को बढ़ा दिया।

विशिन्स्की—इस प्रकार १९३४ के पत्र और १९३५ के बार्तालाप के बीच में कोई भेद न था ?

रादेक्—किसी प्रकार का भेद न था। वह सभी पूरी एक चीज़ थी।

विशिन्स्की—सभी एक पूरी चीज़ थी, और इस पूरी चीज के

अन्तर्गत पराजय सब से पहले था ?

रादेक्—पराजय के सम्बन्ध में हमारा जो भाव था वह इसलिये नहीं था कि हम अधिक भले या बुरे हो गये; बल्कि उसका कारण था देश की परिस्थिति—१६३४ से १६३५ की परिस्थिति बिल्कुल ही भिन्न थी, इसके कहने की आवश्यकता नहीं।

विशिन्स्की—हमने इस बात को साफ कर दिया।

रादेक्—नागरिक प्रोक्यूरेटर ! यह बात साफ नहीं हो चुकी।

विशिन्स्की—अब मैं १६३४ के पत्र और १६३५ के वार्तालाप के प्रति तुम्हारे भाव को लेना चाहता हूं। क्या उस में कोई फरक हुआ था ?

रादेक—किसी भी तरह का फरक नहीं, सिर्फ एक नयी बात थी: सारी शक्ति को उसी कार्य में केन्द्रित करना।

विशिन्स्की—सोवियत संघ के बटवारे के प्रश्न पर क्या पत्र और वार्तालाप में कोई भेद नहीं था ?

रादेक्—नहीं, कोई भेद नहीं था।

विशिन्स्की—भूमि-सम्बन्धी रियायत के प्रश्न पर भी वही बात ?

रादेक्—हां, वहीं बात।

विशिन्स्की—आतंकवादी कार्रवाइयों के प्रश्न पर—यहां भी कोई भेद नहीं ?

रादेक्—नहीं।

विशिन्स्की—तो उस समय क्या नई बात थी ?

रादेक्—नयी बात यह थी कि उन सब का सम्बन्ध विदेशी हितायतों से था।

विशिन्स्की—सो यह भेद था ? अर्थात् अब विदेशी सेना-संचालकों के साथ सीधा इन्तज़ाम किया गया—और यह बात पहले न थी ?

रादेक्—यह बात पहले न थी।

विशिन्स्की—इसने तुम्हें रोका और सोचने को मजबूर किया ?

रादेक्—पहले १९३४ में देश की जो अवस्था थी उसने मुझे रोक कर सोचने के लिए मजबूर नहीं किया। यह बात थी कि जिसने मुझे रोककर सोचने को मजबूर किया। आखिरकार हमलोग फासिस्तों द्वारा सोवियत् संघ की पराजय के लिए नहीं पैदा हुए थे। १९३४ में हम समझते थे कि पराजय अवश्यंभावी है, हमने देश की कठिनाइयों का आवश्यकता से अधिक अंदाजा लगाकर अपना काम आरंभ किया था। उद्योग के बारे में हमने सोचा था कि यह एक सन्धिकाल है जब कि नव-निर्मित कारख़ाने अभी अभी काम करने लगे थे। रेलवे की अवस्था उस समय बहुत ही भयानक समझी जाती थी। लेकिन, अब १९३५ के अंत में क्या हम रेलों की अवस्थाको भयानक समझ सकते थे ? क्यों ? मैं प्याताकोफ़

और लिवृशित्ज़् (लिवृशित्ज़् से हमें सूचना मिली थी) —हम सभी जानते थे कि कगानोविच् के नेतृत्व में रेलों ने बहुत काम किया। मैं व्यक्तिगत तौर से, अपनी आफिस के कामों के सम्बन्ध द्वारा जानता था कि विदेशी भेदिया-विभाग हमारी रेलों के बारे में क्या राय रखता था, वह समझता था कि हमारी रेलें युद्ध के लिए तैयार हो रही हैं। १९३५ के त्रोत्स्कियाइयों के कथन को लेकर क्या मैं सोच सकता था कि युद्ध होने पर हमारे उद्योग का नाश होना अनिवार्य है ? मैं जानता हूं कि औद्योगिक अभियान (चढ़ाई) का क्या मतलब है, मैं हरएक उद्योग की कठिनाइयों को जानता हूं, लेकिन मैं यह भी जानता था कि लड़ाई चलाने के लिए जिन चीजों की जरूरत होगी वे सभी पहुँचायी जायेंगी। कृषि के विषय में मुझे स्वयं बहुत विस्तार से देखने का मौका नहीं मिला, प्रतिवर्ष कुर्स्क गुबेर्निया (परगना) के इन्हीं पंचायती खेतों—जिन्हें मैं साल-ब-साल देखता आ रहा था—की तुलना १९३३ की अवस्था से १९३५ में नहीं हो सकती थी, वे बिल्कुल दूसरे से मालूम होते थे। और इस प्रकार यदि १९३३ या १९३४ में पराजय को अवश्यम्भावी समझकर हम आगे बढ़े थे, और इस चीज़ की सहायता आवश्यक समझते थे, जिसमें कि उससे

कुछ हमारे हाथ लग सके, अब हमने देखा कि पश्चिमी फासिस्तवाद और पूरब के सैनिक फासिस्तवादी चक्र द्वारा सोवियत् संघ के नाश का ख्याल—कि जिसे लेकर त्रोत्स्की ने अपनी कार्रवाई आरंभ की थी— अब वस्तु-स्थिति के देखने पर सिर्फ कल्पना मालूम देती थी, और (सोवियत् की) विजय के सारे कारण मौजूद थे। और इस प्रकार इस सम्बन्ध में इस प्रश्न का उठाना जरूरी था कि क्या अधिकारारूढ़ होने के लिए देश को पराजित होने देना चाहिए? १९३४ में एक आवश्यक कार्य के तौर पर पराजय हमारा प्रारम्भ-स्थान था। किन्तु १९३५ में हम में से प्रत्येक अपने से कहता था—यदि तुम ऐसा करने के लिए तैयार हो तो सम्भावित विजय—जो कि अभी बिल्कुल ही अनिश्चित है चाहे तुम विरोध करो भी—के रास्ते में रोड़ा अटकाते हो। १९३३ और '३४ में जब कि आर्थिक पश्चाद्गति को हम अपने अधिकारारूढ़ होने के लिए ही नहीं बल्कि परिस्थिति के कारण आवश्यक वस्तु देश के लिए जरूरी चीज-समझते थे, अब हमने देखा कि देश अपनी मुख्य कठिनाइयों से पार हो गया और पंचवार्षिक योजना सिर्फ नये कारखानों के बनाने में ही कामयाब नहीं हुई, बल्कि वह सजीव सत्य हो गई है।

विशिन्स्की—और किस परिणाम पर तुम पहुंचे?

रादेक—और इसलिए हम इस परिणाम पर पहुंचे : १९३५ की परिस्थितियों में पूंजीवाद की पुनःस्थापना। और किसी चीज के लिये नहीं, सिर्फ़ त्रोत्स्की की सुन्दर आंखों के लिए—देश को पूंजीवाद की ओर लौटना होगा। जब मैंने यह पढ़ा तो मुझे यह पागलपन जैसा मालूम हुआ। और अन्ततः यह साधारण बात नहीं है, पहले स्थिति यह थी कि अधिकारारूढ़ होने को हम इसलिये लड़ रहे थे कि हमें विश्वास था कि इस प्रकार हम देश के लिए कुछ पा सकेंगे। किन्तु हम इसलिये लड़ने जा रहे थे कि विदेशी पूंजी हुकूमत करे, और वह अधिकारारूढ़ होने से पहले ही हमें पूरी तौर से अपनी मुट्ठी में कर लेती है। विदेशी चक्र से ध्वंसात्मक कार्रवाइयों में एकमत होने की जो हिदायत आयी थी उसका क्या मतलब था ? मेरे लिये इस हिदायत का मतलब बिल्कुल साफ़ था, एक राजनैतिक संगठनकर्ता के तौर पर मैं उसे बहुत अच्छी तरह समझता था कि विदेशी शक्तियों के एजेन्ट हमारे संगठन में जुटे हुए हैं, हमारा संगठन विदेशी भेदिया-विभाग का साक्षात् प्रतिनिधि बन रहा है, हम अपने काम के मालिक जरा भर भी नहीं रह गये हैं। हम त्रोत्स्की के साथ सम्बद्ध हुए जब कि उसने विदेश से हमारे पास हिदायतें भेजीं, किन्तु यहां हम विदेशी फासिस्त राष्ट्रों के एजेन्ट बनने को हैं।

कार्यरूप से इसका मतलब था कि याकोव् लिव्शित्ज या सेरेब्र्याकोफ् जैसे आदमी—जिनके जीवन के दर्जनों वर्ष क्रान्ति में गुजरे हैं—ध्वंसात्मक कार्रवाई तक उतर आ सकते हैं, तो उनका नैतिक बल बिल्कुल टूट गया होगा और वे हमारे वर्ग के शत्रु के इशारे पर नाचेंगे। ऐसी अवस्था में या तो वे अपने सिद्धान्त को छोड़ बैठेंगे या भेदिया बन जायेंगे। यदि उन्होंने अपने सिद्धान्त को छोड़ दिया तो मेरा उनसे कोई वास्ता नहीं; यदि वे विदेशी राष्ट्रों के एजेन्ट हो गये तो दूसरे अपने मतलब से उनको आज्ञा देंगे। परिणामस्वरूप, यदि विदेशी फासिस्तवाद, तो वह त्रोत्स्कियाइयों के अधिकारारूढ़ होने देने की बात तो दूर—क्योंकि यह उनके लिये बेकार होंगे—संगठन को नष्ट कर देगा; क्योंकि वह इन अराजकतावादी बुद्धिजीवियों के झुंड के द्वारा हैरान होने की जरूरत नहीं समझेगा। इस प्रकार यदि, देश के प्रति हमारा भाव क्या होना चाहिये, यह ख्याल मेरे दिल में न भी आता तो भी शुद्ध अहम्भाव वहां मौजूद था। संगठन के नेता ने मुझसे कहा था कि शक्ति के लिए, शक्ति की छाया के लिये त्रोत्स्की अपने लिये मरनेवालों में से हरेक को कुर्बान करने के लिये तैयार है, किन्तु मैं उन आदमियों से ऐसा नहीं चाह सकता जो कि १५ सालसे मेरे सहकारी रहे हैं। इसलिये मैंने अपने आपसे पूछा—'मुझे क्या करना चाहिये?'

विशिन्स्की—तुमने क्या निश्चय किया ?

रादेक्—पहला काम था पार्टी की केन्द्रीय समिति के पास जाना, इजहार देना और सभी व्यक्तियों के नाम बतला देना। यह मैंने नहीं किया। मैं ग० प० उ० (गृहरक्षाविभाग) के पास नहीं गया, बल्कि ग० प० उ० मेरे पास आया।

विशिन्स्की—सुन्दर उत्तर।

रादेक्—शोचनीय उत्तर।

विशिन्स्की—किस लिये तुमने कान्फ्रेन्स बुलाने का निश्चय किया? क्या यह, अपराध की वीभत्सता के कारण तुम्हारे मन में जो भाव उत्पन्न हुआ, कह रहे हो, उसके कारण? तुम्हारे कहे मुताबिक उस वीभत्सता ने अपने रूप को पूर्णतया तुम्हारे सामने प्रकट किया और तुम्हें रोककर सोचने के लिये मजबूर किया : क्या मुझे जवाबदेही लेनी चाहिये, और कैसे लेनी चाहिये ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—तुमने यह जवाबदेही न लेने की बात तै की ?

रादेक्—मैंने जवाबदेही न लेने का दृढ़ निश्चय किया।

विशिन्स्की—तुमने इन अपराधों के न करने का निश्चय किया ?

रादेक्—हां, मैंने इन अपराधों का नहीं करना निश्चय किया।

विशिन्स्की—इन सबसे सम्बन्ध तोड़ना ?

राडेक्—मेरा विचार था एक कान्फ्रेन्स बुलाने का। कान्फ्रेन्स इन बातों के सम्बन्ध में सब के भावों को प्रकट करती, अर्थात् कुछ कहते, "हम इसे नहीं करेंगे" दूसरे कहते "हम इसे करेंगे।"

विशिन्स्की—और तब ?

राडेक्—और तब वे जो कि मिलकर अपराध करते, अपने में लड़ना आरम्भ करते और अधिकारी—जिनका कर्तव्य था उनसे लड़ने का—सारे मामले पर अपना हाथ रखते। मुझे निश्चय था कि भंडाफोड़ ग० प० उ० के सामने होगा, किन्तु मुझे उसे संगठित नहीं करना था।

विशिन्स्की—लेकिन इसके लिये एक छोटा मार्ग भी था ?

राडेक्—लेकिन छोटा मार्ग हमेशा आसान रास्ता नहीं होता, और हर एक आदमी सब से छोटे मार्ग को पकड़ने की योग्यता नहीं रखता। और यह सब से छोटा मार्ग नहीं था। इसका दूसरा कारण है: मुझे विश्वास था कि अधिकारी हमारे बीच में फरक करेंगे और उन्हें करना चाहिये। हमलोगों—नेताओं—के ऊपर पूर्ण और अंतिम जवाबदेही थी, किन्तु मुझे विश्वास था कि यदि हमारे कुछ अधीनस्थ अपना विचार बदलेंगे और अपने हथियार को रख देने का निश्चय करेंगे तो उनके प्रति भाव दूसरा ही होगा। और मैंने सोचा था, इन प्रश्नों को उनके सामने

रखकर उन्हें खुद निश्चय करने का मैं अवसर दूंगा। इस सम्बन्ध में एक बात मैं और कहूंगा जिसे कि मैंने नहीं कहा है; मैं द्राइत्जे.र के काम के बारे में कहना चाहता हूं और यह भी कि क्यों हमने इन बातों को इतना गुप्त रक्खा।

विशिन्स्की—इसके बारे में तुम हमें पीछे कहना। इस वक्त उस मानसिक किंकर्त्तव्यविमूढ़ता और दुविधा के बारे में कह रहे हो, जिसने कि कान्फ्रेन्स बुलाने की आवश्यकता के लिये तुम्हें सोचने को बाध्य किया। इस किंकर्तव्यविमूढ़ता और दुविधा का कारण क्या था?

रादेक्—यह हिदायत समाजवादी पितृभूमि—जो कि युद्ध में विजयी हो सकती है—के खिलाफ देशद्रोह करने और रूस में पूंजीवाद की पुनः स्थापना के लिये विदेशी पूंजी की सहायता करने की हिदायत। यह पुनः स्थापना किसी वस्तु-स्थिति के द्वारा नहीं प्रेरित हो रही थी।

विशिन्स्की—इसका अर्थ यह है, कि हम इससे निम्न आशय निकाल सकते हैं: जब तक तुम समझते रहे, कि हमारे देश में समाजवाद निर्बल है, तब तक तुम देश-द्रोह को उचित समझते रहे, युद्ध, सोवियत् संघ की पराजय, इत्यादि के लिये काम करने को विहित समझते रहे; लेकिन जब तुमने देखा, कि समाजवाद काफ़ी मजबूत और दृढ़ है, तब तुमने तै किया कि युद्ध और पराजय

दोनों में से कोई सम्भव नहीं है।

रादेक—तुम मनुष्य के हृदयों के जबर्दस्त पारखी हो, किन्तु तो भी मुझे अपने विचारों पर अपने शब्दों में टिप्पणी करनी होगी।

विशिन्स्की—मैं जानता हूं, कि अपने विचारों को छिपाने के लिये तुम्हारे पास शब्दों का काफी जख़ीरा है, और एक आदमी के लिये, चाहे वह मनुष्य के हृदयों का अच्छा पारखी ही क्यों न हो, तुम्हें समझना और जो कुछ वस्तुतः तुम सोचते हो उसे कहने के लिए तुम्हें वाध्य करना, बहुत मुश्किल है। लेकिन मैं तुम से कहूँगा कि तुम अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के विशेषज्ञ एक पत्रकार के तौर पर तर्क-वितर्क न कर के एक देशद्रोही अभियुक्त के रूप में कहो। और इसी दृष्टिकोण से मैं पूछता हूँ: क्या तुम १६३४ में पराजय के पक्ष में थे?

रादेक्—इस प्रश्न का उत्तर मैं पहले ही दे चुका हूं।

विशिन्स्की—यदि तुम्हें कष्ट न हो तो एक बार फिर इसे दुहराओ।

रादेक्—१६३४ में मैं पराजय को अवश्यंभावी समझता था।

विशिन्स्की—क्या तुम १६३४ में पराजय के पक्ष में थे?

रादेक्—मैं पराजय को अवश्यम्भावी समझता था।

विशिन्स्की—क्या तुम पराजय के पक्ष में थे?

रादेक्—यदि मैं पराजय को रोक सकता तो मैं उसके विरुद्ध होता।

विशिन्स्की—तुम समझते हो कि तुम उसे नहीं रोक सकते थे?

रादेक्—मैं इसे एक अवश्यम्भावी बात समझता था।

विशिन्स्की—तुम मेरे प्रश्न का उत्तर ठीक से नहीं दे रहे हो। क्या १६३४ में दिये त्रोत्स्की के सारे प्रस्ताव को तुम स्वीकार करते थे?

रादेक्—१६३४ में मैंने त्रोत्स्की के सारे प्रस्ताव को स्वीकार किया।

विशिन्स्की—क्या पराजय उसका एक अङ्ग थी?

रादेक्—हां, वह पराजय का प्रस्ताव था।

विशिन्स्की—त्रोत्स्की के प्रस्ताव के अन्तर्गत पराजय थी? तुमने उसे स्वीकार किया था?

रादेक्—हां, स्वीकार किया था।

विशिन्स्की—इसलिये, क्योंकि तुमने उसे स्वीकार किया था, तुम पराजय के पक्ष में थे?

रादेक्—दृष्टिकोण··

विशिन्स्की—तुम पराजय की ओर जा रहे थे?

रादेक्—हां, जरूर।

विशिन्स्की—अर्थात् तुम पराजय के पक्ष में थे?

रादेक्—जरूर, यदि मैं 'हां' कहता हूं तो उसका मतलब है कि

हम उसकी ओर जा रहे थे।

विशिन्स्की—तो हम दोनों में से कौन ठीक प्रश्न नहीं कर रहा है ?

रादेक्—एक ही बात है, मैं समझता हूं कि तुम ठीक प्रश्न नहीं कर रहे हो।

विशिन्स्की—१९३४ में तुम पराजय के विरुद्ध नहीं थे, बल्कि उसके पक्ष में थे ?

रादेक्—हां, मैंने ऐसा कह दिया।

विशिन्स्की—मैं चाहता हूं कि तुम इसे एक बार फिर दुहराओ।

रादेक्—जैसी तुम्हारी खुशी, तुम सरकारी वकील हो और तुम उसे दस बार दुहराने के लिये मुझे कह सकते हो।

विशिन्स्की—यदि तुम एक बार इसे साफ तौर से दुहरा दो तो वह मेरे लिये काफी होगा। १९३४ में पराजय के पक्ष में, १९३५ में पराजय का प्रश्न उठाया गया...

रादेक्—वह दिसम्बर के पत्र में उठाया गया।

विशिन्स्की—क्या तुमने उसे स्वीकार किया ?

रादेक्—नहीं।

विशिन्स्की—क्यों ?

रादेक्—क्योंकि १९३४ में मैं पराजय को अवश्यम्भावी समझता था, किन्तु १९३५ में मैं समझता था कि देश के विजयी होने की पूरी सम्भावना है, और इसलिए....

विशिन्स्की—१६३४ में तुमने पराजय को अवश्यम्भावी समझा। क्यों?

रादेक्—मैंने समझा कि देश अपनी रक्षा नहीं कर सकेगा।

विशिन्स्की—अर्थात् तुमने समझा कि वह कमजोर है?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—अर्थात् तुमने कमजोरी से शुरू किया?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—अर्थात् देश की कल्पित कमजोरी से शुरू कर के तुमने पराजय को स्वीकार किया?

रादेक्—मैंने अवश्यम्भावी समझ कर उसे स्वीकार किया।

विशिन्स्की—और १६३५ में तुमने देखा कि देश मजबूत है और यह बात सच न उतरेगी?

रादेक्—यही नहीं कि पराजय सच न उतरेगी, बल्कि वह नहीं होगी, और यह प्रोग्राम गलत है, इसलिये मैं ऐसे प्रोग्राम के विरुद्ध था जो कि ग़लत नींव पर अवलम्बित हो।

विशिन्स्की—क्योंकि वह गलत था, क्या इसी लिये तुम उसके विरुद्ध थे?

रादेक्—मैं अन्य अभिप्रायों के बारे में नहीं कहूंगा।

विशिन्स्की—क्या यह कहना सच है कि १६३५ में तुम पराजय के इस प्रोग्राम के विरुद्ध थे, क्योंकि तुम उसे ग़लत समझते थे?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—इसका अर्थ यह है कि १९३४ में तुम इसे ठीक समझते थे और इसके पक्ष में थे और १९३५ में तुम इसे गलत समझते थे और इसके विपक्ष में थे ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—मेरे प्रश्न का मतलब इतना ही था। १९३५ में त्रोत्स्की से प्याताकोफ़् की मुलाक़ात—जिसके बारे में तुम्हें जनवरी १९३६ में मालूम हुआ—के बाद तुम्हारा मन असंतुष्ट हो गया जब कि तुमने देखा कि कैसे फ़ासिस्तवाद की दुम बनने का प्रश्न एकदम खुले तौर पर रक्खा गया ?

रादेक्—एकदम खुले तौर पर रखने से ही नहीं बल्कि खुद वस्तुस्थिति को देखा।

विशिन्स्की—क्या यही बात थी जिसने तुम्हें असन्तुष्ट किया ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और तुमने उसे स्वीकार नहीं किया ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—तुमने कहा है कि यह देश के विरुद्ध साक्षात् देश-द्रोह का प्रस्ताव था ?

रादेक़्—पहली बात और दूसरी में (भी) देशद्रोह था।

विशिन्स्की—तुमने कहा है कि दिसम्बर १९३५ में प्याताकोफ् से वार्तालाप के समय और पत्र में त्रोत्स्की ने जिस तरह

प्रश्न को रक्खा वह देश के खिलाफ बगावत का प्रस्ताव था ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—नवम्बर १९३४ में मध्ययूरोपीय देशों में से एक के इन महाशय——के साथ तुम्हारा वार्तालाप, यदि मैं भूल नहीं करता, था···

रादेक्—देश के खिलाफ बगावत के सम्बन्ध में।

विशिन्स्की—तुमने उसे स्वीकार किया ? और तुमने यह वार्तालाप किया ?

रादेक्—तुमसे यह मैंने कह दिया है, उसका अर्थ है कि मैंने वार्तालाप किया।

विशिन्स्की—क्या वह देश के ख़िलाफ बगावत नहीं थी ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—क्या, उसने तुम्हें असंतुष्ट नहीं किया ?

रादेक्—इसके कहने की आवश्यकता नहीं, जरूर उसने मुझे असन्तुष्ट किया। क्या तुम सोचते हो कि मैंने देश के खिलाफ बगावत करने के लिये अपने को अभ्यस्त किया है ? उसने मुझे अतीव असन्तुष्ट किया।

विशिन्स्की—किन्तु तुम पराजय के काम पर कायम रहे ?

रादेक्—हां, मेरे कामों में एक था त्रौत्स्की की हिदायत को पूरा करना।

विशिन्स्की—चाहे उस हिदायत का मतलब हो देश के खिलाफ़ बगावत ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—अर्थात् इस एक मामले में देश के ख़िलाफ़ बग़ावत, और १९३५ में भी ?

मैं अब जानना चाहता हूं; तुम यहां देश के ख़िलाफ़ बग़ावत के प्रश्न में क्या फ़रक—परिमाण में नहीं, गुण में—दिखाना चाहते हो ?

रादेक्—नागरिक प्रोक्यूरेटर! तुमने पहले ही नतीजा निकाल लिया।

विशिन्स्की—तुम इस बात को स्वीकार करते हो कि नवम्बर १९३४ में महाशय——के साथ का वार्तालाप देशद्रोह था ?

रादेक्—वार्तालाप के समय ही मैं इसे अनुभव कर रहा था और वैसे ही अब भी कहना चाहता हूँ।

विशिन्स्की—देशद्रोह ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और प्याताकोफ़् का तुम्हारे पास हिदायत लाना, क्या यह भी देशद्रोह था ?

रादेक्—यह भी देशद्रोह था। क्या फरक था, शायद वह देशद्रोह था, शायद नहीं था। एक आदमी एक चीज के करने के लिए योग्य हो सकता है और दूसरे के लिए नहीं भी।

विशिन्सकी—क्या तुमने देश के खिलाफ बगावत की ?

रादेक्—मैंने नहीं चाहा अपने देश के साथ विश्वासघात करना या पूर्णतया विश्वासघात करना।

विशिन्स्की—तुम समझते हो कि विश्वासघात एक चीज़ है और पूर्णतया विश्वासघात दूसरी चीज है ?

रादेक्—मैं कहना चाहता हूं कि जब मैंने इसे अनुभव किया तो मैंने उसे नहीं स्वीकार करना चाहा।

विशिन्सकी—इजाज़त दो मुझे तुम्हारे बयान (जिल्द ५, पृष्ठ ११६) को स्मरण दिलाने की। क्या तुम इस बयान को स्वीकार करते हो ?

रादेक्—मैं स्वीकार करता हूं और पूर्णरूप से।

विशिन्सकी—क्या तुम अपने बयान की इस बात को स्वीकार करते हो कि तुमने महाशय—से कहा कि वर्तमान सरकार से रियायत की आशा रखना व्यर्थ है ?

रादेक्—मेरे बयान का भाव ऐसा ही था।

विशिन्स्की—तुम उसे स्वीकार करते हो ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और—सरकार सोवियत् संघ के वस्तुवादी राजनीतिज्ञों से रियायत की आशा रख सकती है ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—तुमने महाशय—से कहा कि दल ऐसी रियायतों

को कबूल करेगा ?

रादेक्—हां, हमने त्रोत्स्की को यह अधिकार देना स्वीकार किया कि वह, ये रियायतें क्या होंगी, इसके बारे में समझौता करे।

विशिन्सकी—मैं तुम से पूछता हूं, क्या तुमने दल के नाम से महाशय—को वास्तविक रियायतें देने की प्रतिज्ञा की या नहीं ?

रादेक्—हां, की।

विशिन्स्की—वास्तविक रियायतें ? यह मानना होगा कि वे रियायतें वास्तविक थीं।

रादेक्—हाँ।

विशिन्स्की—अर्थात् वास्तविक चीजों की रियायतें ?

रादेक्—हां, हां।

विशिन्स्की—क्या यह भूमि सम्बन्धी रियायत का प्रश्न, जैसा कि तुम ने समझा था, था ?

रादेक्—लेकिन उस समय यह बिना जाने कि उनकी आवश्यकता होगी। यह मोल-तोल अभी आरम्भ ही हुआ था।

विशिन्स्की—महाशय क—किसे वास्तविक रियायत समझते थे, इसके बारे में तुमने सोचा था ?

रादेक्—मैंने इस बात को सोचा था कि किस हालत में लड़ाई होगी; जब लड़ाई होगी तो क्यों; कौनसी रियायतें देनी

होंगी, कौनसी खास रियायतें, क्या योजना होगी।

विशिन्स्की—तथापि ये रियायतें कुछ वास्तविक सी होनेवाली थीं ? क्या इनमें भूमि भी शामिल थी ?

रादेक्—शामिल हो सकती थी, किन्तु शामिल हों ही, यह आवश्यक नहीं था।

विशिन्स्की—क्या यह देशद्रोह है ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—क्या यह देशद्रोह है ?

रादेक्—यह देशद्रोह है—अवश्य।

विशिन्स्की—सारे प्रश्न का मतलब यह है : तुम ने सोचा कि एक बार देशद्रोह कर लेना, यह काफी था, और तुम्हारे लिए यह जरूरी नहीं था कि जीवन भर देशद्रोह करो। और तब समय आया जब कि तुमने तै किया कि देशद्रोह नहीं करेंगे। क्या हमने तुम्हारे अभिप्राय को ठीक समझा ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और इस विचार को कार्यरूप में परिणत करने के लिए तुमनें क्या किया ?

रादेक्—मैंने क्या किया, इसके बारे में कह चुका हूँ।

विशिन्स्की—संक्षेप में ?

रादेक्—मैं उन परिस्थितियों को पैदा कर रहा था जो कि दूसरों को देशद्रोह करने से रोकतीं।

विशिन्स्की—तुम एक कान्फ्रेंस बुलाना चाहते थे, जिसमें लोगों को समझाना चाहते थे कि अब और देशद्रोह न करें ?

रादेक्—जो लोग मेरी बात सुनने के लिये तैयार होते वे अपने विचारों को बदल देते, और तब आगे क्या करना है, हम इसका निश्चय करते।

विशिन्स्की—और फिर ?

रादेक्—आगे क्या करना है, इसका निश्चय करते।

विशिन्स्की—क्या किया जायगा, तुम इसे जानते थे ?

रादेक्—मैं जानता था कि मैं क्या करना चाहता हूँ।

विशिन्स्की—और तुमने क्या प्रस्ताव किया होता ?

रादेक्—केन्द्रीय समिति के पास जाकर कह देता।

विशिन्स्की—क्या तुम समझते थे कि कुछ और लोग भी इसमें तुम्हारा साथ देते ?

रादेक्—हां, मुझे विश्वास था कि कई मुझ से सहमत होते।

विशिन्स्की—किन्तु तुम अकेले नहीं जाना चाहते थे ?

रादेक्—क्यों कि मैं उन नेताओं में से एक था जिन्हें कि सिर्फ अपनी ही समस्या हल नहीं करनी थी बल्कि उन सब की समस्या हल करनी थी जिन्होंने कि मेरे नेतृत्व को स्वीकार किया था।

विशिन्स्की—किन्तु ऐसी अवस्था में एक प्रश्न है जो कि मुझे स्पष्ट नहीं है, शायद यह आज सवेरे का अन्तिम प्रश्न है।

तुमने १९३४ में त्रोत्स्की का एक पत्र पाया; १९३५ में त्रोत्स्की का एक पत्र पाया; प्याताकोफ् ने त्रोत्स्की के साथ बातचीत की और उस विषय पर वैयक्तिक संवाद तुम्हारे पास आया। यह देशद्रोहात्मक कार्रवाई, यह देशद्रोहात्मक विचार तुम्हें स्पष्ट था। अपनी राजनैतिक, क्रान्तिविरोधी, अपराधपूर्ण, सोवियत्-विरोधी कार्रवाई को क्या तुमने कुछ मात्रा में कम किया?

रादेक्—१९३६ में!

विशिन्स्की—१९३५ और १९३६ में।

रादेक्—१९३४ और १९३५ में?

विशिन्स्की—१९३५ और १९३६ में।

रादेक्—१९३५ में मैं नेता था, और सब कामों का संचालन करता था।

विशिन्स्की—और १९३६ में?

रादेक्—१९३६ में मैंने वैसा कोई काम नहीं किया जो कि पहले किये हुए कामों को बेकार करता, लेकिन मैंने और कोई कदम आगे नहीं बढ़ाया, खास करके इस हिदायत को पूरा करने के बारे में, गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर।

विशिन्स्की—अर्थात्—१९३६ में इस हिदायत को पूरा करने के लिये तुमने कोई कदम नहीं उठाया?

रादेक्—नहीं।

विशिन्स्की—अब तक जो कुछ काम किया गया था उसे बेकार

करने के लिये क्या तुमने कोई प्रयत्न किया ?

रादेक्—नहीं।

विशिन्स्की—अपनी कान्फ्रेन्स के द्वारा नहीं ?

रादेक्—नहीं, क्योंकि मार्च के बाद दल के एक भी सदस्य से मेरी मुलाकात नहीं हुई। जनवरी में मेरी मुलाकात प्याताकोफ् से हुई थी।

उस समय मैं अकर्मण्य था; मैंने किसी भी बात को बेकार नहीं किया। गिरफ्तारी के समय तक मैं केन्द्र का सदस्य था। यदि उस समय मेरे पास लोग आदेश के लिए आये होते तो मैं उनसे कहता कि किस तरह की हिदायतें मेरे पास आई हैं; किन्तु साथ ही यह भी बतलाये होता :—

"घर जाओ और इन्तिजार करो।"

लेकिन १९३६ में किसी कार्रवाई में शामिल नहीं हुआ।

विशिन्स्की—बहुत अच्छा। १७ जनवरी १९३९ से पहले प्रोक्यूरेटर के कार्यालय में इजहार देते वक्त अपनी कार्रवाइयों का विवरण जो तुमने दिया था, क्या तुम उसे स्वीकार करते हो ?

जिल्द ५, पृष्ठ ११९ से मुझे पढ़ने की इजाजत दो:—

"१९३५ के दिसम्बर में त्रोत्स्की ने अपनी नयी और बहुत दूर तक चढ़ी-बढ़ी हिदायतें निकालीं, जिन्होंने कि उसकी पराजयवादी और पुनःस्थापना की नीति को अंतिम हद तक

पहुँचा दी ... ...

क्या तुम इससे सहमत हो ?

रादेक्—हाँ ।

विशिन्स्की—"और दल के अधिकारारूढ़ होने की संभावना के क्षीण होने से त्रोत्स्कियाई संगठन जर्मन सेना-संचालन-विभाग के लिए भेदियों और विभेदकों के जाल के रूप में परिणत कर दिया .. "

रादेक्—हाँ, मैं पूरी तरह से इससे सहमत हूं ।

विशिन्स्की—और आगे :

"और इसलिए इसमें आश्चर्य करने की जरूरत नहीं कि दलका केन्द्र सहम गया, मैं इसपर जोर देना चाहता हूं, भयभीत हो गया ... "

रादेक्—हाँ, हाँ ।

विशिन्स्की—... इस भाषणमंच (संगठन) की जिम्मेदारी लेने के लिए, हेस्स् के साथ त्रोत्स्की खुद पहुँचा, और उसने संगठन के कर्मशील सदस्यों की एक कान्फ्रेन्स बुलाना तै किया । यह है डरने का प्रधान कारण ?

रादेक्—हाँ ।

विशिन्स्की—तुम्हारी व्यक्तिगत राय थी कि इस बात को इन्कार कर दिया जाय ?

रादेक्—हाँ ।

विशिन्स्की—और अपना हथियार रखने के लिए समिति के पास तुम्हें जाना चाहिये ? किन्तु तुम नहीं गये ?

रादेक्—नहीं गया।

विशिन्स्की—और तब तुम गिरफ्तार हुए ?

रादेक्—मैं गिरफ्तार हुआ, किन्तु आदि से अन्त तक सब बातों से मैंने इन्कार किया। हो सकता है, तुम मुझ से पूछो कि क्यों ?

विशिन्स्की—मैं जानता हूं कि तुम हमेशा कोई जवाब निकाल लोगे। गिरफ्तार कर के तुम से प्रश्न पूछे गये। तुमने जवाब दिये ?

रादेक्—मैंने आदि से अन्त तक स्पष्ट शब्दों में सब बातों से इन्कार किया।

विशिन्स्की—तुम सब बात जानते थे, तुम्हें मौका मिला था कि जाकर सब बात कह दो ?

रादेक—मुझे मौका मिला था किन्तु मैंने तय किया कि मैं इसे गृह-रक्षा-विभाग के सामने कहूं.....

विशिन्स्की—साथी प्रेसिडेन्ट ! क्या तुम अभियुक्त से कहोगे कि वह प्रश्नों का उत्तर दे, व्याख्यान न दे ?

प्रेसिडेन्ट—अभियुक्त रादेक ! तुम दो व्याख्यान दे सकते हो, एक, अपनी सफ़ाई के लिए, और दूसरा, अन्तिम प्रार्थना के लिए।

विशिन्स्की—मैं अभियुक्त रादेक् के साथ हल्ला करने की बाज़ी नहीं लगाना चाहता। मैं तुम से प्रश्न पूछता हूं, तुम से जिरह करता हूं। तुम कृपया मेरे प्रश्नों का उत्तर दो और व्याख्यान मत दो। मैं तुम से कहूंगा कि शोर मत करो और वे बातें न कहो जिनका इस मुकदमे से कोई ताल्लुक नहीं है।

दिसम्बर १६३५ और १६३६ में तुम अब त्रोत्स्की के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करते थे। अब देशद्रोह पूर्ण रूप से तुम्हें साफ दिखाई पड़ रहा था, इसलिये तुम्हारा मन उससे हट गया था। अतः तुमने अपने लिये अंगीकार न करना तै किया और आगे क्या करना चाहिये, इसपर तुम अपने सहकारियों के साथ बातचीत करना चाहते थे?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—तुमने और भी कहा है कि तुम जाकर अपराध स्वीकार करना चाहते थे?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—और सिर्फ इसलिये तुम नहीं गये कि आकर तुम्हें गिरफ्तार कर लिया गया। क्या मैं ठीक कह रहा हूं?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—अब मैं तुम से पूछता हूं: २२ सितम्बर को तुम से सवाल किया गया, और कहा गया कि तुम प्रतिक्रान्तिवादी

त्रोत्स्कियाई कार्रवाइयों के अपराध में गिरफ्तार किये गये हो। तहकीकात करने वाले अधिकारियों के हाथ में जो सबूत थे उनके आधार पर तुम्हारे ऊपर अभियोग चलाने से पहले तुम्हें सब कुछ कहने का अवसर मिला था?

रादेक्—मैंने वैसा नहीं किया।

विशिन्स्की—जांच करने वाले अधिकारी ने तुम से जो सवाल पूछा,—क्या तुमने उसका उत्तर दिया?

रादेक्—नहीं।

विशिन्स्की—गिरफ्तारी के बाद जांच के वक्त तुम से पूछा गया कि क्या तुमने पार्टी और सोवियत् राष्ट्र के साथ पाप किया। तुमने क्या जवाब दिया?

रादेक्—मैंने जवाब दिया कि नहीं किया।

विशिन्स्की—तुम से पूछा गया था: क्या तुमने किन्हीं गुप्त स्थानों या घर में कोई गैरकानूनी दस्तावेज़ छिपा रक्खा है? तुमने क्या जवाब दिया?

रादेक्—मुझ से पूछा गया था और मैंने जवाब दिया कि मैंने गुप्त स्थानों में कोई चीज़ छिपा नहीं रक्खी है।

विशिन्स्की—तुम से इसके बारे में पूछा गया——और क्या तुमने सच कहा?

रादेक्—मैंने उससे इन्कार किया, और यह सच था।

विशिन्स्की—क्या आगे यह भी तुम से पूछा गया: क्या तुम्हारा

दूसरे आदमियों—तिवेल्—के साथ सम्बन्ध था ?

रादेक्—मुझ से पूछा गया था।

विशिन्स्की—क्या तुमने उसे स्वीकार किया ?

रादेक्—मैंने आदि से अन्त तक सब बातों से इन्कार किया।

विशिन्स्की—जल्दी मत करो, एक-एक अंश का जवाब दो। क्या तुमने तिवेल् के साथ अपना सम्बन्ध होने से इन्कार किया ?

रादेक्—मैंने इससे इन्कार किया।

विशिन्स्की—क्या तुमने फ्रीद्लान्द् के साथ सम्बन्ध से इन्कार किया ?

रादेक्—मैंने इससे इन्कार किया।

विशिन्स्की—क्या तुमसे आतंकवादी टोली के दूसरे सदस्यों के साथ सम्बन्ध के बारे में पूछा गया ? तुमने क्या उत्तर दिया ?

रादेक्—मैंने उससे इन्कार किया।

विशिन्स्की—यह २२ सितम्बर १९३६ की बात है ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—क्या तुम्हारा सोकोल् निकोफ़् से सामना हुआ ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की—क्या सोकोल् निकोफ़् ने तुम्हारा भंडाफोड़ किया ?

रादेक्—हां।

विशिन्स्की— और तुमने ?

रादेक्— मैंने आदि से अंत तक सब बातों से इन्कार किया।

विशिन्स्की— यह २२ सितम्बर की बात है। क्या तिवेल् के साथ तुम्हारा सामना हुआ ?

रादेक् — हुआ।

विशिन्स्की—उसने क्या कहा ?

रादेक् — उसने कुछ सत्य कहा और कुछ असत्य, किन्तु मैंने सबसे इन्कार किया।

विशिन्स्की— जो सत्य था, और जो असत्य, दोनों से इन्कार किया।

रादेक् — हां।

विशिन्स्की—क्या ४ नवम्बर को अपनी कारवाइयों के सम्बन्ध की कितनी ही बातों के बारे में तुमसे पूछा गया ?

रादेक् — हां। ४ दिसम्बर तक मुझसे पूछा जाता रहा और मैंने सब से इन्कार किया।

विशिन्स्की— कितने महीनों तक तुम सब बातों से इन्कार करते रहे ?

रादेक् — करीब तीन महीनों तक।

विशिन्स्की— तो असल यह है कि तुम—जो सब कुछ कह डालना चाहते थे अपने दिमाग में निश्चय भी न कर सके जैसा कि तुम कहते हो कि अपने आदमियों को न्याय के

हाथ में सौंपा जाय, और जब तुम खुद न्याय के हाथ में पड़ गये तो तुमने हर बात से साफ इन्कार किया। क्या यह ठीक है ?

रादेक्— हां।

विशिन्स्की— क्या यह तुम्हारी उस बात में शंका नहीं पैदा करता जो कि तुमने अपने अस्थिरमनस्कता और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ता के बारे में कहा ?

रादेक् — हां, यदि तुम इस बात से इन्कार करते हो कि प्रोग्राम और त्रोत्स्की की हिदायतों के बारे में तुमने सिर्फ मुझसे सुना, तो जरूर यह, मैंने जो कुछ कहा है उसमें संदेह पैदा करता है।

विशिन्स्की— मेरे लिये खास चीज है तथ्य को स्थापित करना। क्या तथ्य स्थापित हो गया ?

रादेक् — हां।

विशिन्स्की— यह कैसे माना जा सकता है कि दिसम्बर १९३५ में त्रोत्स्की के पत्र के पाने और उसके बाद प्याताकोफ़ के साथ हुए उसके वार्तालाप को सुनने के बाद तुमने उस विचार-धारा को स्वीकार नहीं किया जिसे कि तुम तब तक विना किसी हिचकिचाहट के पूर्णतया स्वीकार करते आये थे ? क्या ऐसे तथ्य तुम्हारे पास हैं ?

रादेक् — नहीं।

विशिन्स्की— और तुम इसे साबित करना नहीं चाहते ?

रादेक — नहीं ।

विशिन्स्की— मुझे और कुछ पूछना नहीं है ।

प्रेसिडेन्ट— इजलास ६ बजे शाम के लिए बरखास्त किया जाता है ।

(हस्ताक्षर)

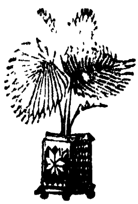
प्रेसिडेंट : व० उलरिच्

स्थल-सैनिक जूरी

(सोवियत संघ के महान्यायालय के सैनिक न्यायालय के प्रेसिडेंट

सेक्रेटरी : अ० कोस्त्युश्को

प्रेसिडेन्ट, फौजी जूरी, प्रथम श्रेणी



द्वितीय खण्ड

प्रथम परिच्छेद

आरम्भिक अन्वेषण

सोवियत फौजदारी विधान बन चुका। हमारे कानून से तुलना करने पर उसमें सब से बड़ी विशेषता यह मालूम होती है कि अपराधी व्यक्ति को बहुत ज्यादा सुभीता दिया गया सौर उसके मुकदमे के सभी अधिकारियों पर भार दिया गया है कि वे अपराधी को बतलावें कि उसका अधिकार क्या और कितना है। इजलास और जांच करनेवाले मजिस्ट्रेट के ऊपर भी जिम्मेवारी रक्खी गई है कि छोटे से छोटे निर्णय के लिये भी पूरा कारण बतलायें।

फौजदारी मुकद्दमा, जैसा कि हमारे यहां भी, आरम्भ होता है अपराध की जांच से। जांच करने वाले दो प्रकार के अधिकारी हैं, एक मिलिशिया (पुलिस) और दूसरे गृहमन्त्री विभाग के (अपराध-अन्वेषण-विभाग के) अधिकारी। उनके छोटे से छोटे कर्त्तव्य भी कानून में दिये गये हैं।

अपराध के लिये किसी पर लागू करने का निश्चय कर लेने पर या तो वे अपराधी के पास सम्मन भेजते हैं या

कितने ही मुकदमे में उसे पकड़ कर हिरासत में रख सकते हैं। ऐसे गुरुतर अपराध वाले मुकदमे ये हैं।

(१) जब कि उन्होंने अपराध करते हुए आदमी को पकड़ा ;

(२) जब कि इल्जाम या आँख देखा गवाह अपराधी को पहचान लेता है ;

(३) जब कि मुल्जिम के शरीर या घर पर अपराध के चिह्न मिले हैं ;

(४) जब कि मुलज़िम भागना चाहता है या भागते वक्त पकड़ा गया है ;

(५) जब कि मुलज़िम का कोई काम या स्थान निश्चित नहीं है ; और

(६) जब कि मुलज़िम की पहचान नहीं हो पाई।

फिर भी ऊपर की बातों में से सिर्फ एक बात मुल्ज़िम के गिफ्तार करने के लिये काफी नहीं समझी जाती। वहां यह भी बतलाना होगा कि आगे की कार्रवाई में मुल्ज़िम के उपस्थित रहने की निश्चयता के लिये गिरफ़्तारी अवश्यक है।

जांच करने वाले मैजिस्ट्रेट को २ घन्टे के भीतर गिरफ्तारी की सूचना देनी होगी। और उसे ४८ घन्टे के भीतर हिरासत में रखने की स्वीकृति देनी होगी अथवा छोड़ देने का हुक्म देना होगा।

अधिक से अधिक एक महीने के भीतर पुलिस को जांच

का परिणाम मजिस्ट्रेट के सामने रखना होगा जिसके आधार पर वह अपराधी पर दोषारोपण करे । उसे दोषारोपण के कारण बतलाने होंगे और ४८ घंटे के भीतर उसकी सूचना अपराधी को देनी होगी।

उसके बाद जांच करने वाले मजिस्ट्रेट को आरम्भिक तहकीकात करनी होगी। यह तहकीकात जैसा कि युरोप में हर जगह प्रचलित है, निजी तौर से प्राइवेट सुनवाई के रूप में होती है। इङ्गलैंड में और उसी के कारण भारत में फौजदारी मुकदमों की कार्रवाई खुले इजलास में होती हैं, और पहले से ही जनता को उसे सुनने का मौका मिलता है, इससे नफा भी है और नुकसान भी है। आरम्भ से ही बहुत अधिक प्रसिद्धि हो जाने के कारण बहुत सनसनीखेज मुकदमों में न्याय की सम्भावना कम हो जाती है—खास कर जिन मुकदमों में कि जनमत अपराधी के विरुद्ध होता है; और यह भी सम्भव है कि कुछ मुकदमों में यह निजी तहकीकात और नई घटनाओं की जानकारी में आसानी पैदा करती है।

यहां यह भी कह देना जरूरी है कि भारत तथा इङ्गलैंड में भी मजिस्ट्रेट के सामने सुनवाई हमेशा खुले इजलास में हो यह नियम नहीं। भारत में तो राजनैतिक मुकदमे बहुतेरे जेल के भीतर ही भीतर हुआ करते हैं, और इङ्गलैंड में भी कानूनन यह अधिकार प्राप्त है; किन्तु ऐसे अधिकारों का उपयोग

सिर्फ सरकारी भेद खोलने तथा अति लज्जास्पद मुकदमों में बरता जाता है।

जांच करने वाला मजिस्ट्रेट पब्लिक प्रोसिक्यूटर (Public Prosecutor) पर जांच करने की कार्रवाई आरम्भ करने का अपना अभिप्राय प्रकट करता है और बिना देर किये हुए उसे कार्रवाई आरम्भ करनी होती है। कानून ने अस्पष्टतया उसका कर्त्तव्य निर्धारित कर दिया है कि वह उन घटनाओं की जांच और स्पष्टीकरण करे जो कि अपराधी के कसूर को गम्भीर या हल्का साबित करते हों और उसकी जिम्मेवारी की मात्रा और आकार को निर्धारित करते हों। उसे (मजिस्ट्रेट को) पूर्णतया और अत्यन्त निष्पक्ष रूप से जांच करनी चाहिये। अपराधी और दूसरे पक्षों को अधिकार है कि मजिस्ट्रेट को पक्षपात करते देख उसे चुनौती दें।

अपराधी की जांच करने के पहले मजिस्ट्रेट को चाहिये कि वह उसे आरोप का सार बतला दे और वादी को सूचित कर दे, यदि हो सकता, कि वह अपराधी के खिलाफ दीवानी दावा का अधिकार रखता। दीवानी दावे के मुकदमे की कार्रवाई भी फौजदारी मुकदमे के साथ चलती रहेगी।

अपराधी और वादी दोनों को गवाहों की जिरह करने का अधिकार है। यदि मजिस्ट्रेट कार्रवाई में किसी पक्ष की किसी प्रार्थना को अस्वीकार करता है तो ऐसा करने के लिये

कारण बतलाने का वह सरकार के प्रति जिम्मेवार है। ब्रिटिश फौजदारी कानून की धारा १३६ बतलाती है—"जांच करने वाले मजिस्ट्रेट को चाहिये कि वह बलात्कार या मारपीट या ऐसे दूसरे तरीकों से गवाही और स्वीकारिता न प्राप्त करे।"

यदि एक से अधिक अपराधी हैं तो उनकी परीक्षा अलग अलग होती है, और ऐसी तदबीर करनी चाहिये कि एक अपराधी दूसरे के इज़हार के जानने का मौका न पाये...

अपराधी की परीक्षा आरम्भ करते हुए उससे कहा जाता है कि अपराध के सम्बन्ध में वह जो कुछ जानता है वह बयान करे। वक्तव्य दे देने के बाद उससे प्रश्न किये जा सकते हैं। अपराधी जो जो उत्तर देता है वह उसके ही शब्दों में अक्षरशः लिखा जाता है, पीछे वक्तव्य और प्रश्नोत्तर उसे सुनाया जाता है और अपराधी और मजिस्ट्रेट दोनों को उस पर हस्ताक्षर करना होता है। अगर अपराधी इच्छा रखता हो तो अपना इजहार उसे खुद लिखने की इजाजत देनी चाहिये।

झूठी गवाही के दंड की व्याख्या करके गवाहों के इज़हार को भी उपरोक्त क्रम से ही लिया जाता है।

साधारण मुकदमों में आरम्भिक जांच के लिये दो महीने से अधिक समय नहीं लगना चाहिये। बहुत पेचीदे मुकदमों में पब्लिक प्रोसिक्यूटर ६ महीने तक की अवधि बढ़ा सकता है।

यदि मजिस्ट्रेट की राय में अपराधी के खिलाफ अभियोग प्रमाणित नहीं होता हो तो वह मुकदमे की कार्रवाई को छोड़ सकता है। ऐसी अवस्था में उसे कारण दिखलाते हुए अपना निर्णय देना होगा, जिसके विरुद्ध अपील पांच दिन के भीतर की जा सकती है।

लेकिन यदि मजिस्ट्रेट समझता है कि मुकदमा चलाने की गुंजाइश है तो उसे इसकी सूचना अपराधी को देनी चाहिये। और उसे समझा देना चाहिये कि अपने विरुद्ध दी गई गवाहियों की पड़ताल कर सकता है। उसे इसके लिये सुभीता मिलना चाहिये। और यदि अपराधी चाहता है तो उसे दूसरा वक्तव्य देने की इजाजत मिलनी चाहिये।

इसके बाद मजिस्ट्रेट अपने इल्जामों को प्रस्तुत करे। वह अपराध साबित करने वाली बातों के साथ साथ उन बातों का भी जिक्र कर दे जो कि अपराधी के पक्ष में पड़ती हैं। इसके साथ साथ उसके पास सभी गवाहों के नाम व पते की सूची तथा उनके इजहार की नकल भी रहनी चाहिये। साथ ही यह भी लिख देना चाहिये कि अपराधी कितने समय तक हिरासत में रहा है।

इल्जाम-पत्र पब्लिक प्रासिक्यूटर के पास भेजा जाता है, जहां वह इसपर विचार करता है। यदि पब्लिक प्रासिक्यूटर उसे नियमानुकूल समझता है तो उसे इजलास में भेजता है और

सूचित करता है कि वह वहां हाजिर हो। इल्जाम-पत्र की एक प्रति अपराधी को भी दी जाती है। हर एक अपराधी व्यक्ति, जब कि उसके ऊपर मुकदमा चल रहा है, को अपने हस्ताक्षर के साथ वचन देना होगा कि वह तारीख के दिन हाजिर होगा और पते के परिवर्तन का सूचना अदालत को देगा। आवश्यकता पड़ने पर अपराधी की उपस्थिति पक्की करने के लिये विशेष तरीके भी इस्तेमाल किये जा सकते हैं; लेकिन इसके लिये मैजिस्ट्रेट को कारण बतालने होंगे।

इसकी हरगिज इजाजत नहीं है कि अपराधी का पास-पोर्ट या परिचय-पत्र रोक रक्खे जायँ। कानून के अनुसार विशेष तरीके ये हैं :—

(१) हस्ताक्षर कर के मुचलका देना कि वह अपने स्थान को नहीं छोड़ेगा। अपराधी को सावधान कर देना चाहिये, कि वचन भंग करने पर वह दूसरे अपराध का भागी होगा।

(२) कम से कम दो जमानतें देना इसलिये कि अपराधी तारीख़ के दिन अदालत में उपस्थित किया जायगा।

(३) नकद या सम्पत्ति के रूप में उपयुक्त धन की ज़मानत।

(४) घर में गिरफ्तारी—पहरे के साथ या उसके बिना।

(५) हिरासत।

(६) हवालात में रखने की स्वीकृति तभी होगी जब कि समझा जायेगा कि सजा होने पर अपराधी जेल के दंड का

भागी होगा। साथ साथ इसका भी कारण देना होगा कि यदि अपराधी को बाहर रहने की इजाजत दी जायगी तो वह सच्चाई तक पहुँचने में बाधा देगा या फ़रार हो जायेगा। हवालात में रखने की स्वीकृति देने से पहले मजिस्ट्रेट को अपराधी के अपराध के गुरुत्व, गवाहियों की संगीनी, अपराधी के व्यवसाय की सूरत, उसकी आयु, स्वास्थ्य और वंश की स्थिति का भी ख्याल रखना होगा।

भारी देशद्रोह—गुरुतर अपराध—के लिये मजिस्ट्रेट को अधिकार है कि उपर्युक्त बातों पर ध्यान न देते हुए अभियुक्त को हिरासत में रखने की स्वीकृति दे।

इल्जाम-पत्र के पाने के बाद सेशन अदालत आम तौर से उसके अध्ययन के लिये प्रारम्भिक बैठक करती है।

इल्जाम-पत्र के मिलने के एक महीने के भीतर अदालत को मुकदमे की कार्रवाई शुरू करनी चाहिये।

दूसरा परिच्छेद

इङ्गलैंड (या भारत) की तरह सोवियत्-संघ में भी अदालतों की भिन्न भिन्न सीमायें हैं। जन-न्यायालय, साधारण मजिस्ट्रेट की अदालतों की तरह अधिकांश फ़ौजदारी मुकदमों को देखते हैं।

सोवियत्-संघ में २७ हजार जन-न्यायालय हैं, जिसका मतलब है हर साठ हजार आदमी पर एक न्यायालय है। प्रत्येक न्यायालय औसतन प्रति मास ६५ मुकदमे देखता है। एक चौथाई फौजदारी मुकदमों में अपराधी छोड़ दिये जाते हैं। सैकड़े २१ फैसलों की अपील होती है, जिनमें दो सैकड़ा सरकार की ओर से।

जन-न्यायालय के ऊपर प्रादेशिक न्यायालय होता है, जिसे मौलिक और अपील के मुकदमों को देखने का अधिकार है। वे जन-निर्णयालय के फैसलों के खिलाफ अपील सुनते हैं और उनके पास आये मुकदमों में दशांश ऐसे भी महत्वपूर्ण मुकदमे होते हैं जिनकी प्रथम सुनवाई उन्हीं के इजलास में होती है।

प्रादेशिक न्यायालयों के ऊपर प्रत्येक प्रजातन्त्र का महा-न्यायालय (Supreme Court) तथा सारे स०स०स०र०

(संघ साम्यवादी सोवियत रिपब्लिक या सोवियन्-संघ) का महान्यायालय। यह महान्यायालय मौलिक मुकदमे तथा अपील दोनों के सुनने का अधिकार रखता है।

सोवियन्-संघ का महान्यायालय विशेष महत्व रखने वाले फौजदारी मुकदमों को देखता है। ऐसे मुकदमे, जिनमें केन्द्रीय कार्य-कारिणी समिति या मन्त्रि-मंडल का कोई सदस्य अपराधी होता है। वह प्रजातन्त्रों के पारस्परिक झगड़ों का भी फैसला करता है।

१० जून १९३४ की एक घोषणा के अनुसार सोवियत्-संघ का महान्यायालय देशद्रोह, राजकीय रहस्य-उद्घाटन, आतंकवाद और विस्फोटक का इस्तेमाल, आग लगाना तथा दूसरे राजद्रोही अपराधों का फैसला करता है।

इन मुकदमों का देखना सैनिक विभाग के सामने होता है जो कि वस्तुतः (सैनिक सिर्फ नाम में है) महान्यायालय का वैसा ही एक साधारण विभाग है, जैसा कि रेलवे विभाग या जलीय यातायात विभाग है।

नाम से भ्रान्ति होने पर भी सैनिक विभाग, सैनिक अदालत की तरह नहीं है, न उसपर फौजी कानून लागू होता है। वह देश के साधारण कानूनों का अनुसरण करता है। इसी ने रादेक के अतिरिक्त जिनोवियेफ और कामेनेफ़के मुकदमों को देखा था।

महान्यायालय के निर्णय के खिलाफ अपील नहीं की जा सकती। इङ्गलैंड में भी १६०७ ई० के बाद ही ऐसा अधिकार प्राप्त हुआ है।

न्यायालयों के वर्णन की पूर्णता के लिये "कामरेड न्यायालयों" का जिक्र कर देना भी जरूरी है। ये महल्लों, कारखानों में स्थापित हैं और ये सुस्त और बेपरवाह व्यक्तियों की बात को सुधारने के लिये निजी संस्थायें हैं। इनमें अधिक नशाखोरी, काम में आने के लिये देर और ढिलाई जैसे मामले पेश होते हैं। चूंकि इनमें सभी उपस्थित व्यक्ति बहस में भाग लेते हैं इसलिये जनमत तैयार करने में इनका बड़ा भाग होता है। इन्हें जेल देने का अधिकार नहीं है। आम तौर से ये सार्वजनिक तौर पर लज्जित करने का दंड देते हैं।

सोवियत-संघ की सभी कचहरियों में तीन न्याया-धिकारी (जज) होते हैं। वहां जुरी की प्रथा नहीं है। निचले न्यायालयों में एक न्यायाधिकारी कानूनपेशा होता है और दो असेसर। असेसर प्रति वर्ष ६ दिन अदालत में बैठते हैं और उनकी सम्मति का उतना ही मूल्य है जितना कि उनके कानूनपेशा सहकारी की सम्मति का। सारे सोवियत संघ में दस लाख से अधिक असेसर हैं, और १६३६ में सिर्फ मास्को शहर के असेसरों की संख्या २२ हजार थी। ऊपर के न्यायालयों में सभी न्यायाधिकारी कानूनपेशा होते हैं, जन्म के अनुसार ५० सैकड़ा

न्यायाधिकारी मज़दूर श्रेणी के, ३५ सैकड़ा किसान श्रेणीके और १५ सैकड़ा लाल सैनिक, २० सैकड़ा न्यायाधिकारी स्त्रियां हैं। मास्को का प्रधान न्यायाधिकारी (चीफ़ जस्टिस) क्रान्ति से पहले एक फेरीवाला रोटी–विक्रेता था।

सभी न्यायाधिकारी निर्वाचन से होते हैं। कानूनपेशा न्यायाधिकारी जन–न्यायालयों में तीन वर्ष और ऊपरी न्यायालयों में ५ वर्ष तक काम करता है। चुनाव के लिये खड़े होने वाले व्यक्ति के लिये मताधिकार होना चाहिये, और कम से कम दो साल का राजनैतिक या सामाजिक काम का अनुभव रखना चाहिये। अदालत के न्यायाधिकारियों को एक दूसरे का सम्बन्धी नहीं होना चाहिये और न वादी–प्रतिवादी या गवाहों का ही और न दूसरे ही तरह से मुकदमों के साथ उनका कोई स्वार्थ रहना चाहिये। वे ऐसे मुकदमों की अपील भी नहीं सुन सकते जिनका कि फैसला उन्होंने ही पहले नीचे की अदालत में किया है।

यदि जज के पक्षपात–रहित होने में सन्देह हो तो उसे उस मुकदमे से हटाया जा सकता है। यदि एक ही न्यायाधिकारी वैसा है तो बाकी दो उनकी अनुपस्थिति में मुकदमे का फैसला करेंगे। और यदि उनका निर्णय एक दूसरे के विरुद्ध है तो मुकदमा दूसरी अदालत में जायगा, जिसका कि निर्णय वही करेंगे। हाँ, यदि निर्णय गलत निकला तो मुकदमे को

नये सिरे से फिर चलाने के लिये यही काफी होगा।

अपराधी को अधिकार है कि पब्लिक प्रासक्यूटर, विशेषज्ञ, गवाह, दुभाषिये और अदालत के किसी सहकारी को पक्षपात-युक्त होने की चुनौती दे।

प्रत्येक न्यायालय की कार्यवाही अपने प्रजातन्त्र की भाषा में होती है। लेकिन सोवियत्-विधान की ११ धारा के अनुसार अपराधी अपनी मातृभाषा में अदालत के सामने बोल सकता है, चाहे अदालत की सरकारी भाषा से वह परिचित हो या न हो ...... यह ऐसा अधिकार है जो सोवियत-संघ से बाहर किसी देश में प्राप्त नहीं।

अभियुक्त को विधान ६ धारा १११ के अनुसार वकील रखने का पूरा अधिकार है। चूंकि दूसरे देशों की अपेक्षा सोवियत की कचहरियों की कार्यवाही बड़ी सरल होती है; इस लिये बहुत से प्रतिवादी स्वयम् अपने मुकदमे की पैरवी करते हैं ......

सिवाय सेना और राज्य सम्बन्धी अथवा वैदेशिक रहस्य तथा अश्लीलात्मक मामलों के सभी मुकदमों की अदालत सर्व-साधारण के सामने बैठती है। सभी मुकदमों में सार्वजनिक तौर से फ़ैसला सुनाया जाता है। सोवियत अधिकारी सार्वजनिक प्रचार को बड़ा महत्व देते हैं; क्योंकि वह समझते हैं कि इससे जनता की पिछड़ी हुई श्रेणी को शिक्षा मिलती है।

१४ साल से कम उम्र के लड़के अदालत में नहीं जाते। सोलह वर्ष से कम उम्रवाले लड़कों का तो फौजदारी अदालत में मुकदमा भी नहीं होता।

कानून द्वारा अदालत को अधिकार है कि वह गवाही के किसी ऊपरी नियमोपनियम द्वारा अपने को बद्ध न समझे। कोई भी जबानी गवाही तथा कोई भी दस्तावेज, जिसे अदालत मुकदमे से सम्बद्ध समझती है, स्वीकार कर सकती है। योरप के और देशों की तरह वहां भी कोई ऐसा कानून कायदा नहीं है जो कि प्रतिवादी की पूर्व की सजाओं और अपराधी के स्वभाव-इतिहास और अभिप्राय को खोलने की मनाही करे।

अदालत के मैत्रीपूर्ण वायुमंडल और घरेलू ढंग को देख कर आश्चर्य होगा। अदालत और सरकारी वकील की तरफ से बराबर ऐसा भाव अपराधी के साथ रक्खा जाता है जिससे कि उसे अपने सुधरने में सहायता मिले। इसका परिणाम यह होता है कि वास्तविक अपराधियों में बहुत कम अपराध से इनकार करते या वैधानिक बचाव प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। बहुधा ऐसा देखा जाता है कि अपराधी स्वयं अपने लिये दण्ड-व्यवस्था का प्रस्ताव करता है। बहुत से अपराधी स्वयं बोलशेवो जैसे किसी श्रमिक शिविर में भेजे जाने की प्रार्थना करते हैं... ... ...

सोवियत् अदालत, सोवियत जनता का बिलकुल अंग है और जनता अदालत की कार्रवाई में अपनेपन की दिलचस्पी लेती है। वह समझती है कि उसी के प्रतिनिधि न्यायासन पर बैठे हुए हैं। कभी कभी अदालत की कार्रवाई के बीच में भी, उपस्थित जनता में से कोई व्यक्ति टिप्पणी कर बैठता है और उसके लिये उसकी भर्त्सना नहीं होतीं। मैंने खुद अदालत के पीछे से यह आवाज आती सुनी है—"जोर से बोलो" और इसके लिये जज ने क्षमा प्रार्थना करते हुए अपनी आवाज को ऊँचा किया।

कोई भी मुकदमा, जिसके लिये जेल की सजा हो सकती है, अपराधी की अनुपस्थिति में नहीं सुना जा सकता, सिवाय उस अवस्था में जब कि अपराधी ने स्वयं स्वकृति दे दी हो या वह फरार हो गया हो। लेकिन ऐसी अवस्था में हुए एकतरफा फ़ैसले की फिर से नजरसानी हो सकती है। यदि अपराधी उपस्थित नहीं है और उसकी उपस्थिति आवश्यक है तो मुकदमे की तारीख बढ़ा दी जाती है। यदि अपराधी इजलास में अपने व्यवहार से औचित्य का उल्लंघन करता है तो पहले उसे चेतावनी दी जाती है। यदि उसका असर नहीं हुआ तो उसे इजलास से हटा दिया जाता है और उसकी अनुपस्थिति में अदालत की कार्रवाई जारी रहती है।

यदि अपराधी मुकदमे के वक्त जमानत पर छूटा है तो

अदालत कारण बतलाती हुई और यह दिखलाती हुई कि अपराधी की आगे की उपस्थिति को निश्चित करने के लिए वैसा करना जरूरी है, विशेष आज्ञा से उसे हिरासत में रखवा सकती है।

..........अदालत को इस बात के लिए पूरा संतोष कर लेना होगा कि मुकदमे से समबन्ध रखने वाले सभी पक्ष और गवाह मौजूद हैं। तब वह वादी और प्रतिवादी से पूछती है कि क्या और भी गवाहियों के लेने की जरूरत है। यदि वे हां करते हैं तो अदालत को उसको प्राप्त करने के लिये आवश्यक उपाय करना होगा। फिर अदालत गवाहों को उनका कर्तव्य समझाती है कि उन्हें सत्य बोलना होगा और झूठी गवाही के लिए दंड मिलेगा, फिर इस सूचना के पाने की स्वीकृति के लिए उनसे स्वीकृति की रसीद ली जाती है। साधारणतः झूठी गवाही के लिए ३ महीने की, सुधार सम्बन्धी शारीरिक श्रम की, सजा मिलती है। किन्तु यदि गुरुतर अपराध में या लाभ के अभिप्राय से .... झूठी गवाही दी जाय तो उसके लिए २ साल तक की सजा होती है। फिर गवाह अदालत से बाहर भेज दिये जाते हैं और एक दूसरे से अलग करके रक्खे जाते हैं। विशेषज्ञ गवाह अदालत में ही बैठे रह सकते हैं यदि उनकी उपस्थिति से किसी को आपत्ति न हो।.... ....

फिर एक बड़ा ही प्रशंनीय कार्य सम्पन्न होता है—अपराधी को कार्यवाही सम्बन्धी अधिकारों से परिचित किया

जाता है, उसे यह समझा दिया जाता है कि वह गवाहों, विशेषज्ञ गवाहों और और अपने सहयोगी अपराधियों से प्रश्न पूछ सकता है और मुकदमे की किसी अवस्था के बीच में वैयक्तिक सफाई, सारे मुकदमे के लिए या उसके एक अंश के लिए दे सकता है। चाहे अपराधी के लिए कोई वकील हो या न हो उसके लिए यह अधिकार मौजूँ है ··· ····

इल्जाम-पत्र आदालत के किसी सहायक द्वारा पढ़ा जाता है। अध्यक्ष न्यायाधीश को यदि आवश्यकता हो तो उसका सारांश अपराधी की भाषा में समझा देना होगा, तब मुलजिम से अपराध की स्वीकृति के बारे में पूछा जाता है। अपराधी को स्वतंत्रता है कि अपनी अपराध-स्वीकृति को किसी विशेषण के साथ कहे।

यदि अपराधी बिना किसी विशेषण के अपराध स्वीकार करता है तो यह अदालत के हाथ में है कि वह गवाहों या अपराधी की जांच करे या न करे·········

यदि मुलजिम अपराध स्वीकार नहीं करता अथवा अपराध स्वीकार के बाद भी अदालत गवाही लेना तय करती है तो दोनों पक्षों के विचारों को सुनकर वह गवाहों के क्रम को निर्धारित करती है।

गवाह एक एक करके अदालत में बुलाये जाते हैं। गवाह गवाही दे देने के बाद अदालत में मौजूद रहते हैं—शपथ

वकील रहा हो या न रहा हो और चाहे अपनी सफाई में उसने भाषण दिया हो या न दिया हो, अंतिम शब्द कहने का न्यायानुमोदित प्रबल अधिकार रखता है। यदि अन्तिम वक्तव्य में कोई नई बात जाहिर होती है तो सारा मुकदमा फिर से शुरू किया जायेगा।

यद्यपि अदालत को अधिकार है कि भाषणों में असम्बद्धता को रोके तो भी मैंने कहीं नहीं देखा कि अदालत तथा सरकारी वकील ने, चाहे जितने लम्बे और घुमाव-फिराव वाले या असम्बद्ध भाषण हीं क्यों न हों, कोई रोक लगायी। अदालत भाषण के लिये समय की कोई सीमा निर्धारित करने का अधिकार नहीं रखती ... .

कार्रवाई के बीच में जब कभी यदि कोई पक्ष अदालत को किसी रूलिंग से विरोध रखता है तो उसके बारे में नोट करना होगा।

जब अपराधी ने अपने अन्तिम भाषण को समाप्त कर दिया तब तीनों न्यायाधिकारी एक अलग कमरे में चले जाते हैं। उनके विचार-विनिमय की प्रक्रिया के कितने ही कड़े नियम हैं। जिस वक्त वह विचार कर रहे हों उस वक्त कोई उनसे बात नहीं कर सकता, यहां तक कि पेशकार भी नहीं बोल सकता। यदि यह नियम टूटा तो मुकदमे को फिर नये सिरे से करना होगा।

कानून में बतलाया गया है कि न्यायाधिकारियों को

सिर्फ उनके सम्मुख उपस्थित गवाहियों द्वारा सिद्ध घटनाओं के आधार पर ही किसी निश्चय पर पहुँचना चाहिये, और उन्हें गवाहियों के गुरुत्व का अन्दाजा स्वतन्त्र रूपेण लगाना चाहिये ... ...

अध्यक्ष न्यायाधिकारी की प्रधानता में निर्णय का काम होता है। प्रत्येक न्यायाधिकारी को हरएक प्रश्न के सम्बन्ध में अपनी राय जाहिर करनी होती है और बहुमत स्वीकार किया जाता है। फौजी अदालत को छोड़ कर सहायक न्यायाधिकारी अपनी राय पहले देते हैं। मतभेद रखनेवाला न्यायाधिकारी फैसले के साथ अपनी राय लिख कर लगा सकता है, लेकिन वह प्रकाशित नहीं की जा सकती।

सभी प्रश्नों के बारे में निर्णय हो जाने पर फैसला तैयार किया जाता है। उसे तीनों जजों में से कोई एक स्वयं अपने हाथ से लिखता है और दूसरे उसपर हस्ताक्षर करते हैं। इसके दो भाग होते हैं--एक में सिद्ध बात रहती है और दूसरे में दंड। उसमें यह भी लिखा रहता है कि कितने समय के भीतर किस अदालत में उक्त फैसले की अपील हो सकती है।

तब न्यायाधिकारी इजलास पर आते हैं और अध्यक्ष न्यायाधिकारी खड़ा होकर प्रजातन्त्र के नाम से फैसले को पढ़ता है। बाकी दो न्यायाधिकारी भी उस वक्त खड़े रहते हैं।

फैसले की एक नकल २४ घन्टे के भीतर अपराधी को

देनी होती है। सरकारी वकील और सफाई दोनों पक्ष अपील करने का अधिकार रखते हैं। हाँ, स० स० स० र० के महा न्यायालय के फैसले की अपील नहीं होती। सरकार की ओर से अपील फैसला देने के ७२ घन्टे के भीतर हो जानी चाहिये, और सफाई पक्ष फैसले की कापी पाने के ७२ घन्टे के भीतर अपील कर सकता है।

अपील की सूचना पाने पर मुकदमे की पहले की मिसिल २४ घंटे के भीतर अपील वाली अदालत में भेज देनी होती है।

अपीलवाली अदालत सभी प्रमाणों पर फिर से विचार करती है और यदि अपील को उचित समझती है तो नीचे की अदालत के फैसले को उल्टे बिना नये तौर से मुकदमा करने की इजाजत देती है।

तृतीय परिच्छेद

राजनैतिक अभियोग

अधिकांश देशों में महत्वपूर्ण राजनैतिक अभियोग का वातावरण साधारण फौजदारी मुकदमे से बिलकुल भिन्न होता है, लेकिन सोवियत्-संघ में उनमें कोई भेद नहीं देख पड़ता।

महान्यायालय में बाहरी ढंग की कुछ हल्की सी कार्यवाही के अतिरिक्त प्याताकोफ, रादेक् और दूसरों का मुकदमा—जो कि २३ से ३० जनवरी १९३७ को सैनिक विभाग के सामने देखा गया था—उसी तरह चलाया गया था जैसे कि कोई भी मुकदमा जन-न्यायालय के सामने होता है।

यह मुकदमा मास्को के केन्द्र में सोवियत् भवन (House of Soviets) के भीतर हुआ। ध्यान देने की बात है कि अधिकारियों ने उक्त स्थान के चारों ओर देखने योग्य किसी विशेष सावधानी का इन्तजाम नहीं किया था, यद्यपि एक गम्भीर देशद्रोह सम्बन्धी षड़यन्त्र का पता लगा था। ऐसी परिस्थिति में बहुत से देशों में वैधानिक अधिकार को रोक दिया गया होता और इङ्गलैण्ड (या भारत) में पुलिस का एक बहुत बड़ा जत्था अदालत की चारों ओर पहरा देता

और दर्शकों एवं प्रदर्शनकारियों का भारी भुण्ड उसे घेरे रहता; लेकिन मास्को में उस दिन सिर्फ एक तनहा पुलिस का सिपाही अदालत के बाहर खड़ा था और समय-समय पर आने जाने वालों को सूचित करता था कि ट्राम ठहरने की जगह कुछ समय के लिये सड़क की तरफ़ थोड़ा आगे की ओर बढ़ा दी गई है।

इससे यह नहीं समझ लेना चाहिये कि जनता इस अभियोग में दिलचस्पी नहीं ले रही थी। वस्तुतः कोई इसे छोड़ दूसरी बात नहीं करता था और सभी अखबार मुकदमे की कार्यवाही से भरे रहते थे।

प्रवेश के लिये टिकट था। भवन के भीतर वैदेशिक दूतावासों के सदस्यों, वैदेशिक और सोवियत् पत्र-प्रतिनिधियों के लिये स्थान सुरक्षित थे। और बाकी टिकट मास्को के कारखानों में बाँट दिये गये थे, जिनकी कमेटियों ने हर दिन की बैठक को देखने के लिये चुने हुए कर्मचारियों को भेजा था।

भवन में ५०० आदमियों के बैठने की जगहें हैं। सभी जगहें भरी हुई थीं। कितने ही राजदूत और ३० के करीब विदेशी संवाददाता मौजूद थे। ३० के करीब सोवियत् संवाददाता भी उपस्थित थे।

न्यायाधिकारियों की दाहिनी तरफ एक मेज पर सरकारी वकील (पब्लिक प्रासक्यूटर) विशिन्स्की था। न्यायाधिकारियों की बायीं ओर कठघरे में अपराधियों के बैठने की जगह बना दी

गई थी, जिनपर नौजवान सिपाही संगीन के साथ पहरा दे रहे थे। हाल में शब्द-प्रसारक यन्त्र का प्रबन्ध था।

इजलास ११ बजे से १० बजे रात तक प्रति दिन बैठता था। बीच में ३ बजे से ६ बजे तक ३ घंटे की छुट्टी रहती थी। एक बार आधे दिन की कार्यवाही बन्द कमरे में हुई थी, जिसके बारे में घोषणा निकाल कर बतलाया गया था कि राजकीय और वैदेशिक रहस्यों के सम्बन्ध में विवाद हुआ था।

"सैनिक विभाग" के तीनो जजों में अध्यक्ष का काम जज उलरिच कर रहा था। वह एक योग्य, अनुभवी और चतुर नैतिक बलयुक्त पुरुष है। दूसरे दो जज उसकी अगल बगल में बैठते थे।

कार्रवाई आरम्भ होने के पहले जज उलरिच ने हरएक अपराधी से पूछा—क्या तुम्हें अदालत के सदस्यों अथवा सरकारी वकील विशिन्स्की के रहने में कोई आपत्ति है? क्या तुम्हें इल्ज़ाम-पत्र की एक एक प्रति मिली है? फिर उसने सूचित किया कि सिर्फ ३ अपराधियों ने सफाई के वकील चुने हैं। उसने बाकी १७ अपराधियों को यह भी बताया कि यद्यपि तुमने वकील रखने के हक़ को छोड़ दिया है, तो भी तुम्हें अपने विचार बदलने का अधिकार है। यदि तुम वकील रखना चाहो तो रख सकते हो। सबने उत्तर दिया कि हम खुद अपनी पैरवी करेंगे। उनको अधिकार था कि गवाहों से जिरह करें, बीच-

बीच में व्याख्या करें और उस व्याख्या पर उन्हें अन्तिम शब्द कहने का मौका मिले।

अदालत के पेशकार ने अभियोग-पत्र पढ़ सुनाया और अपराधियों को उसे स्वीकार करने के लिये कहा गया। सबने बिना किसी शर्त के अपराध स्वीकार किया और जहां तक देखा जा सकता था, उन्होंने बिलकुल स्वेच्छापूर्वक और बिना देर के ऐसा किया।

उस मौके पर यह भी दिलचस्प बात-सोचने की थी-कि ऐसी परिस्थिति में इंगलैंड की किसी अदालत में क्या होता? अपराधियों को कहा जाता कि क्या वे अपनी स्वीकृति को हटा लेना चाहते हैं या वे अपनी अपराध-स्वीकृति पर डटे हुए हैं? सरकारी बड़े वकील ने जज के सामने सभी तथ्यों को विस्तार से कहा होता। जूरी को बुलाने की आवश्यकता नहीं होती और न गवाहियां ही ली जातीं। अपराधी-या यदि उन्होंने रखा होता तो उनके वकील—ने, किन्तु दोनों ने नहीं, अदालत के सामने दण्ड को कम करने की प्रार्थना की होती और दण्ड दे दिया जाता।

हत्या के अपराध में इंगलैंड में (यह याद रखना चाहिये कि अपराधियों ने जितने अपराध किये थे, उनमें से कितनों ही को अंग्रेजी-कानून हत्या का अपराधी समझता), चूंकि मृत्यु-दण्ड के सिवा दूसरा विकल्प था नहीं; इसलिये दण्ड को कम

करने की बात ही नहीं उठती और अपराध के स्वीकार करने पर अदालत की सारी कार्रवाई चन्द मिनटों में खतम हो जाती। और दण्ड कम करने के लिये बोलने की आज्ञा भी होती तो इंगलैंड में मुकदमा होने पर सारी कार्रवाई एक दिन से अधिक नहीं लेती।

इस सम्बन्ध में यह भी कहने की जरूरत है कि कहीं कहीं वस्तु-स्थिति से अनभिज्ञ लोगों ने समालोचना की है कि अपराधियों की स्वीकृतियां दूसरे तौर से प्रमाणित नहीं हुई हैं; अथवा अधिक से अधिक प्रमाणित करने वाली गवाहियां सिर्फ उनके सह-अपराधियों ने ही दी थीं। इंगलैंड और वस्तुतः बहुत से देशों में—किसी प्रकार की गवाही मांगी ही नहीं जाती है; और सोवियत्-संघ में, जैसा कि पिछले परिच्छेद में कहा गया है, यदि अदालत उचित समझे तो उसे गवाही छोड़ देने का अधिकार है। अदालत का यह निश्चय कि अपराध स्वीकृति के होने पर भी कुछ गवाहियां ली जायं, अंग्रेजी आदालत की उस प्रथा से कुछ समानता रखता है, जिसमें कि अपराधी को अपनी अपराध-स्वीकृति लौटा लेने की सम्मति दी जाती है।

इसमें सन्देह नहीं कि अपराधी की सविस्तर जिरह, यद्यपि कानूनी अभियुक्तता स्थापित करने के लिये अनावश्यक था, तो भी वह अदालत को उचित दण्ड प्रदान के लिये

सम्मति तैयार करने में बहुत सहायक हुआ। यदि सोवियत् की अदालती कार्रवाई ने इंगलैंड का अनुकरण किया होता और अदालत विशिन्स्की-द्वारा प्रस्तुत तथ्यों के संक्षेप से ही संतुष्ट होती तो यह बहुत संभव था कि सभी अपराधियों को मृत्यु-दंड मिला होता। उदाहरणार्थ—यह खास तौर से देखा गया कि जब स्त्रोइलोफ् उस भीषण घटना को वर्णित कर रहा था कि कैसे वह जर्मन-खुफिया पुलिस के पंजे में फंसा, उस समय जज लोग बड़ी बारीकी के साथ उसकी भाव-भंगी का अध्ययन कर रहे थे और सविस्तर नोट ले रहे थे। उसके अपराध-पूर्ण कार्य के सविस्तर लिखने की सुविधा ही थी जिसने कि संभवतः उसकी जान बचा दी। मैं नहीं भूलता कि इंगलैंड में अपराधी को अपने आचार के सबन्ध में व्याख्या करने का मौका मिलता है; किन्तु अपराध का इतिहास वादी के वकील द्वारा प्रथम स्थान ग्रहण करता है न कि खुद अपराधी के अपने मुंह से निकली बात।

अदालत को विस्तार के साथ घटनाओं की तह तक जाने के लिये मजबूर होने का दूसरा कारण यह था, कि अरंभिक अन्वेषण प्रकाश्यरूपेण नहीं हुआ था। इसलिये जनता को तथ्यों से परिचित होने का, अदालत की कार्रवाई ने ही, मौका दिया। सोवियत्-संघ में अदालत की सविस्तर कार्रवाई की विस्तृत सूचना को सबसे अधिक महत्व दिया जाता था।

यद्यपि यह सच है कि अपनी अपराध-स्वीकृति से बिलकुल स्वतंत्ररूपेण अपराधी की जिरह होती है तो भी इस विशेष मामले के सम्बन्ध में नहीं कहा जा सकता कि अपराधी अपने को अभियुक्त मानने के लिए कहे जाते थे; क्योंकि जिरह से पहले ही उन्होंने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया था। विशेषतः जब कि एक अपराधी राताइचक् ने विशिन्स्की के एक प्रश्नका उत्तर देना नहीं चाहा, जिसे कि उसने असम्बद्ध समझा तो जज उल्रिच ने साफ तौर पर उसे बतलाया कि सम्बद्ध और असम्बद्ध होने का निर्णय करना यद्यपि अदालत के अधिकार में है तथापि उसे, यदि वह उचित समझे तो, किसी प्रश्न का उत्तर न देने का अधिकार है।

विशिन्स्की ने मुकदमे को बड़ी योग्यतापूर्वक संचालित किया। वह अकेला था और साथ ही उसका कोई सहायक या परामर्शदाता भी नहीं था। वह सत्रह अपराधियों में से हर एकके कार्य्यों के सभी ब्यौरों की पूरी जानकारी रखता था और कैसी कार्रवाइयां! जिनमें से बहुतेरी पांच या छ वर्ष तक जारी रही थीं। सात दिन तक लगातार बिना नागा या बिना एक बार की भी हिचकिचाहट के मुकदमे का संचालन करना साधारण बात न थी।

यद्यपि वह बड़ी चतुराई और बारीकी के साथ जिरह करता था तथापि एक बार भी वह न तो चिढ़ा और न उसने

अपराधियों पर खीझ ही प्रकट की। उसका बर्ताव हमेशा संयत और नम्रतापूर्ण रहा और वह असंबद्ध उत्तर को रोकते वक्त "क्षमा कीजिए" कहता था।

उसका अंतिम व्याख्यान, जो कई घंटे तक होता रहा, स्पष्ट, युक्तियुक्त और विश्वासोत्पादक था। उसका पूर्वार्द्ध मुकदमे के राजनैतिक पहलू के अध्ययन में लगाया गया था और उत्तरार्द्ध में उसने सोवियन-फौजदारी-कानून को चलाने के लिए उपयुक्त गवाहियों के विवेचन में खर्च किया था। अपराधियों को मत्यु-दंड देने के लिए जदर्दस्त प्रार्थना करने के बाद जब वह अपनी जगह पर बैठा तो दो मिनट तक हर्ष-ध्वनि होती रही, जिसको रोकने के लिए अदालत ने कोई प्रयत्न नहीं किया।

अपराधियों के वकील भी योग्य और अनुभवी पुरुष थे। अपने मुवक्किल के पक्ष में तथ्य निकालने के लिए वे दूसरे अपराधियों की जिरह करने में आनाकानी नहीं करते थे। उनमें महाशय ब्राउदे भी थे जो अपराधियों के एक बारिष्टर थे और क्रान्ति से पहले भी बारिष्टरी करते थे। मैंने सुना है, कि मास्को की अदालत में उनकी बड़ी ख्याति थी।

अपराधियों के तीनों वकीलों के सामने बहुत बड़ी कठिनाई थी इस बात की कि उनके मुवक्किलों ने अपराधको स्वीकार कर लिया था; इसलिये अदालत के सामने बहस करते हुए परिस्थितियों के कारण अपने मुवक्किलों की

लाचारी की ओर ध्यान दिलाना ही अधिकतर उनका काम था। कोई भी वकील इससे अधिक नहीं कर सकता था। कजनचेयेफ़, अपराधी अर्नोल्द के वकील थे और वह अपने मुवक्किल को मृत्यु-दंड से बचाने में सफल हुए।

जनता का व्यवहार बहुत ही अच्छा था। बहुत ही घृणित तथा भयंकर अपराध का जिक्र होते समय कभी कभी कुछ बोलचाल भले ही हो जाती थी, लेकिन अपराधियों के प्रति घोर असन्तोष रहते हुए भी उसने उसका प्रकाशन नहीं किया।

अपराधियों का व्यक्तित्व भिन्न भिन्न प्रकार का तथा अधिकांश प्रभावशाली था। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है जो कि उन्होंने अपने मुकद्दमे की पैरवी खुद करनी चाही, क्योंकि वे सजीव बहस और प्रभावशाली व्याख्यान देने में पूर्णतया समर्थ थे। यह ध्यान देने लायक बात है कि उनमें कोई नौजवान नहीं था। सबसे कम उम्र वाला ३७ साल का था और उनकी औसत आयु ४० साल की थी।

प्यातोकोफ् दुबला-पतला था, भूरे रंग की बकरी-जैसी दाढ़ी, भूरे बाल, जो कि कंघी से पीछे की ओर सवाँरे हुए थे, वह मोटे कचकड़े की फ्रेम का चश्मा लगाये किसी विश्वविद्यालय का प्रोफेसर जैसा मालूम पड़ता था। वह अपनी गवाही शान्त और निःसंकोच भाव से बीच-बीच में हाथ को एक

खास अदा से हिलाते हुए सारे संसार के के लिए दे रहा था। मालूम होता था जैसे कुछ विशेष प्रभावशाली तीन विद्यार्थियों को देख क्लास में व्याख्यान दे रहा हो। बहस में वह विशिन्स्की के बिल्कुल तो नहीं, किन्तु करीब करीब बराबर था और उसके कहने के ढंग से मालूम पड़ता था कि वह जो कुछ जानता है उसके बहुत थोड़े भाग को प्रकट कर रहा है। वह भीषण अपराधियों के दल का संचालन करने वाला दिमाग था और किसी सिद्धहस्त नाटककार के लिये एक उपयुक्त पात्र की सामग्री बन सकता था।

राडेक् की नेत्र-शक्ति कुछ क्षीण थी, उसके बाल अस्त-व्यस्त और मूंछें बगल में थीं। एक चमड़े का कोट पहने हुए अभिनयकर्त्ता सा मालूम होता था। अपराधियों में वही एक ऐसा था जो अक्सर जनता के ऊपर दृष्टिपात करता था, जिसके मनोभाव को कि वह जरूर परख रहा होगा। पहले एक या दो दिन तक तो वह कुछ बेपरवाही का भाव रखता था, लेकिन पीछे उसका वह भाव नष्ट हो गया और अंत में तो अक्सर वह कुछ-कुछ भावुकता प्रदर्शित करने लगा था।

सोकल्‌निकोफ् बड़ा ही महत्वाकांक्षी और अभिमानी बतलाया जाता था। वह सुसज्जित वस्त्र पहने, अपरिचित सा बैठा था। जिरह के आरम्भ में काफी हिचकिचाहट दिखलाने के अतिरिक्त, उसने किसी प्रकार की

भावुकता के चिह्न नहीं प्रकट किये।

मुरालोफ् एक पुराना सैनिक था। सभी अपराधियों में वही सब से बूढ़ा, साठ वर्ष का था, तो भी उसकी कमर झुकी नहीं थी। त्रोत्स्की के अनुयायियों मे उसी को यह श्रेय प्राप्त है कि एक बार निकाल देने पर उसने फिर साम्यवादी दल में दाखिल होने की दर्खास्त न दी और न त्रोत्स्की के प्रति अपनी श्रद्धा को छिपाने की कोशिश ही की।

अपराधियों में तीन सहायक राजमंत्री (रेलवे, भारी उद्योग और परराष्ट्र-विभाग) एक मास्को नगर की सोवियत् का भूतपूर्व चेयरमैन, एक रसायन-उद्योग का प्रमुख और एक रेलवे डाइरेक्टर था।

चतुर्थ परिच्छेद

अभियोग

अभियोग-पत्र पर विशिन्स्की का हस्ताक्षर था। यह एक सुविस्तृत, लम्बा दस्तावेज था जिसके कि पढ़ने में पूरे २० मिनट लगते थे। इसमें आरंभिक अन्वेषण के बहुत से वाक्य उद्धृत किये गये थे। आरंभिक अन्वेषण को ३२ जिल्दों में जमा किया गया था जो कि उसी प्रकार के इङ्गलैण्ड के किसी अभियोग सम्बंधी कागज़ों से बहुत अधिक था।

उसमें विशेष तौर से प्याताकोफ्, रादेक्, सोकोल्निकोफ् और सेरेब्र्याकोफ् पर अभियोग लगाया गया था।

(१) त्रोत्स्की से मिलकर एक देश-द्रोहपूर्ण षड्यंत्र कर के बलपूर्वक सोवियत्-सरकार को उलट देना और सोवियत्-संघ के सैनिक-पराजय का प्रबन्ध करना। इन चारों अभियुक्तों पर अभियोग था कि उन्होंने ज़िनोवियेफ् के संगठन को दोहरा करने के लिये एक संगठन किया था, जिसका काम था कि वह ज़िनोवियेफ् के संगठन का भंडाफोड़ हो जाने पर उसका स्थान ले तथा स्वतंत्र रूपेण भी काम करे।

(२) उन्होंने सोवियत्-संघ में जर्मनी और जापान की तरफ से राजकीय रहस्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिये

संस्था कायम की। इन चारों अभियुक्तों पर यह भी अभियोग था कि उन्होंने त्रोत्स्की के द्वारा जर्मनी और जापान से सौदा पटाया था कि यदि वे राष्ट्र आगे चलकर सोवियत-संघ में कोई सरकार कायम करने में त्रोत्स्की को मदद पहुंचायेंगे तो पहले ये राजकीय रहस्यों को अवगत करायेंगे और युद्ध के समय सेना में अव्यवस्था एवं अस्त-व्यस्तता पैदा करके वर्तमान सोवियत् सरकार को पराजित करायेंगे और युद्ध के बाद के उन दोनों राष्ट्रों को आर्थिक सुविधा प्रदान करेंगे, साथ ही जर्मनी के लिए उक्रइन और जापान के लिए पूर्वी-साइबेरिया के समुद्र तटवर्ती प्रदेश छोड़ देंगे।

(३) सामरिक महत्व की रेल की सड़कों और कारखानों में अव्यवस्था और अस्तव्यस्तता को संगठित करना।

(४) सोवियत्-सरकार के नेताओं की हत्या करने की कोशिश करना।

बाक़ी तेरह अभियुक्तों पर अभियोग था कि उन्होंने उपरोक्त चारों आदमियों को सहायता और सहयोग दिया था और पहले चारों अभियुक्तों की हिदायत के अनुसार राजकीय रहस्यों के खोलने और अव्यवस्था और अस्तव्यस्तता पैदा करने का तथा हत्या-संबंधी प्रयत्न किया।

म्रशे, पुशिन, रातइचक्, शिस्तोफ् और स्त्रोहलोफ् के ऊपर अभियोग था कि वे जर्मन-भेदिया-विभाग के एजेन्ट थे;

क्नयाजेफ् और तुरोक् पर जापान की ओर से भेदिया होने का अभियोग था।

द्रोग्निस, नोर्किन् और स्त्रोह्लोफ् पर कारखानों में और बोगुस्लाव्स्की, लिर्वाशित्ज़्, क्नयाजेफ् और तुरोक् के ऊपर रेलों में अव्यवस्था और अस्त-व्यस्तता पैदा करने का अभियोग था।

अर्नोल्द् के ऊपर अभियोग था कि उसने भारी उद्योग के राजमंत्री ओर्द्‌जोनिकिद्‌ज़े और प्रधानमन्त्री मोलोतोफ् की हत्या करने की कोशिश की। मुरालोफ् और शिस्तोफ् ने उसे इस काम के लिये उत्तेजित किया।

अभियोग-पत्र में सोवियत्-फौजदारी कानून की उपयुक्त धाराओं को उद्धृत किया गया था और अन्त में कहा गया था कि आरंभिक अन्वेषण के खतम होते समय सभी अपराधियों ने पूर्णतया अपराधों को स्वीकृत किया।

पंचम परिच्छेद

भीषण देश-द्रोह

"भीषण देश-द्रोह अर्थात् किसी सोवियत् नागरिक का सोवियत् संघ की सैनिकशक्ति अथवा एक स्वतन्त्र राष्ट्र के तौर पर उसके स्वातंत्र्य अथवा उसके अधिकृत प्रदेश की अक्षुण्णता के खिलाफ हानि पहुंचाने का काम करना। जैसे कि—रहस्य खोलना, सैनिक या राजकीय भेदों को दुश्मन के पास पहुंचाना......... । इसके लिए अपराधी का अंतिम दंड गोली से मारा जाना, सम्पत्ति को ज़ब्त करना अथवा यदि परिस्थितियों के कारण अपराध का गुरुत्व कम हो जाता है तो दस साल तक स्वतन्त्रता का अपहरण और सम्पत्ति की जब्ती।"

सोवियत दंड-विधान, धारा ५८ (१) (क)

"इस धारा में उल्लिखित अपराधों के पूरा करने या तैयारी करने के लिये सभी तरह की संगठित कार्रवाइयों को करना और उपर्युक्त अपराधों में से किसी एक के पूरा करने या तैयारी करने के लिए बने संगठन का सदस्य होना। इसके लिए इस धारा की दूसरी उपधारा में वर्णित दंड होगा।"(अर्थात् मृत्यु-दंड या सर्वत्रवध्यता और सभी संपत्ति की ज़ब्ती; अथवा

परिस्थिति के कारण अपराध के गुरुत्व के कम होने पर सभी या आंशिक सम्पत्ति की जब्ती के साथ कम से कम तीन साल की जेल)।

सोवियत-दंड-विधान, धारा ५८ (२)

प्याताकोफ् और रादेक् ने षड्यन्त्र का इतिहास बतलाया। पहली तारीख़ का सारा दिन प्यातोकोफ् के इजहार में लगा और दूसरे दिन का अधिकांश रादेक् के इजहार में।

षड्यंत्र का आरम्भ बर्लिन के एक काफे (चाय खाना) में १९३१ ई० में प्यातोकोफ़ और त्रोत्स्की के पुत्र सेदोफ़् के वार्तालाप से हुआ था। तो भी षड्यन्त्र के पिछले कार्य-कारण को जानने के लिये जरूरी है कि हम थोड़ा और पीछे जायं।

१९२३ ई० से या उसके आस पास यह प्रश्न, कि अब जब कि देश में एक प्रकार की व्यवस्था स्थापित हो गई है, हमें सोवियत्-संघ में तुरन्त एक समाजवादी राज्य निर्माण करने का काम शुरू कर देना चाहिए, या हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए और मौजूदा राजनैतिक शक्ति को कायम रखना चाहिये तथा उस समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए जब कि दूसरे बहुत से उद्योग-प्रधान देशों में भी क्रान्ति हो जावे और तब सब मिलकर पूंजीवादी अर्थ नीति में परिणत करने का काम शुरू करना चाहिए? यह प्रश्न पहले भी साम्यवादी दल के भीतर शास्त्रीय वाद-विवाद का विषय था। लेकिन सन १९२३ में तुरन्त कार्य में आने वाले प्रोग्राम का अंश बन गया।

जैसा कि सब लोग जानते हैं, त्रोत्स्की और उसके अनुयायी एक निराशापूर्ण विचार रखते थे। उनको यह विश्वास न था कि विरोधी पूंजीवादी राष्ट्रों से घिरे किसी एक देश में सोवियत जनता समाजवाद को निर्मित करने की योग्यता रखती है। उनका विचार यह था कि ऐसा उद्योग करना विरोधियों को हथियारबंद हो कर हमला करने के लिए निमंत्रण देना है और जिसका आवश्यक परिणाम होगा पराजय। रादेक् ने अवहेलना-पूर्वक "एक देश में समाजवादी निर्माण" के प्रस्ताव का जिक्र किया।

त्रोत्स्की के अनुयायी अपने विचारों को खुले तौर से और स्वतंत्रतापूर्वक प्रगट करते थे जिसके लिये उन्हें कोई रुकावट नहीं थी। समाजवादी दल के भीतर और बाहर इस प्रश्न के सम्बन्ध में खूब बारीकी के साथ वाद-विवाद हुआ था। अन्त में एक ओर या दूसरी ओर कोई निश्चय करना जरूरी था। और एक भारी बहुमत स्तालिन् की ओर से सुझायी अधिक गरम नीति के पक्ष में हुई जो कि कठिनाइयों की कुछ भी परवाह न करके सोवियत संघ में साम्यवादी निर्माण के काम को आगे बढ़ाये ले जाने के पक्ष में थी। त्रोत्स्की और और उसके अनुयायियों की हार हुई।

तो भी उन्होंने प्रजासत्ताक रीति से बहुमत के निर्णय को बिल्कुल स्वीकृत न किया, जिसके बारे में विश्वासपूर्वक

अनुसरण करना उनका कर्त्तव्य था, चाहे वे इससे सहमत होते या न होते। यह संभव है कि उनमें से कुछ हृदय से समझते थे कि जिस नीति को स्वीकार किया गया है वह नाशकारी है; यह भी संभव है कि उनमें बहुत से हार खाने के कारण विरोध-भाव, ईर्षा और वैयक्तिक महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर ऐसा करने के लिए उतारू हुए थे।

चाहे जो कुछ हो, उनमें से कुछने तै कर लिया कि भले या बुरे जैसे भी तरीके से हो, उस निश्चय को बदल दिया जाय। त्रोत्स्की, जिनोवियेफ्, कामेनेफ्, प्याताकोफ्, रादेक्, सोकोलनिकोफ्, सेरेब्रयाकोफ्, बोगुस्लोव्स्की और मुरालोफ् ये उन विरोधियों में से थे। उन्होंने साम्यवादी दल और सोवियत् सरकार के ख़िलाफ गैरकानूनी आन्दोलन आरम्भ किया। उन्होंने दल की नीति पर आक्षेप करते हुए छापकर पुस्तिकाएं बाँटी। उन्होंने विरोध में प्रदर्शन संगठित किये। यहाँ तक जनता का कुछ भाग इस आन्दोलन के साथ सहानुभूति रखता था, तो भी यह अधिक आदमियों को अपनी ओर खींचने में सफल न हो सका।

अपने इन गैरकानूनी कामों के लिए निःसन्देह उनपर मुकद्दमा चलाया जा सकता था और शायद उन्हें मृत्यु-दंड भी मिल जाता। किन्तु, उनके साथ नर्मी से बर्त्ता गया और वे इसके पात्र न थे, जैसा कि पीछे मालूम हुआ; अधिकांश सिर्फ

यही दंड उन्हें मिला कि वे साम्यवादी दल से निकाल दिये गये; और, कुछ को सोवियत संघ के दूरवर्त्ती भागों में भेज दिया गया। त्रोत्स्की विदेश चला गया।

थोड़े समय के लिए उनके गैरकानूनी काम बंद हो गये। लेकिन पंचायती खेती की व्यवस्था करते वक्त जब कठिनाइयां आईं तो उन्होंने मौका देखा। त्रोत्स्की की हिदायत के अनुसार एक-एक करके उन्होंने घोपित किया कि उन्हें अपनी गलती मालूम हो गई और वे साम्यवादी दल में फिर प्रविष्ट होना चाहते हैं। उनके पश्चात्ताप को सच्चा समझ कर साम्यवादी दल ने फिर उन्हें ले लिया और जल्द ही उनमें से कितने ही बहुत महत्वपूर्ण पदोंपर पहुँच गये।

यह है वह समय, जब से कि उक्त देशद्रोही षड्यन्त्र के इतिहास का आरंभ होता है।

१९३१ की गर्मियों में भारी उद्योग का सहायक राजमंत्री प्याताकोफ सरकारी काम से बर्लिन गया था। स्मिर्नोफ—त्रोत्स्की का एक दूसरा अनुयायी, जिसे कि मुकद्दमा चला कर अगस्त १९३६ में ज़िनोवियेफ़ के साथ प्राणदंड दे दिया गया—भी उस वक्त वहीं था। स्मिर्नोफ ने प्यातकोफ़ को बतलाया कि त्रोत्स्की का लड़का सेदोफ़ बर्लिन में है। प्यातकोफ़ ने इस ख्याल से स्मिर्नोफ़ को अपने टेलीफोन का नम्बर दिया, जिसमें कि सेदोफ़ फोन करके मिलने का समय निश्चित कर ले। त्रोत्स्की

के पुत्र सेदोफ् ने वैसा किया और प्याताकोफ् ने चिड़ियाखाने के नजदीक अम्जू-चायखाने (काफे) में मिलने का इन्तजाम किया।

दोनों उक्त काफे में मिले। प्याताकोफ् के अब भी त्रोत्स्की के अनुयायी बने रहने को युक्तिपूर्ण प्रश्नों द्वारा जानकर सेदोफ् ने उसे बतलाया कि उसके पिता के विचार में यही सब से उपयुक्त मौका है जब कि सोवियत् सरकार को उलट दिया जा सकता है। लेकिन साथ ही वह यह भी समझता है कि वैसा कानूनी या गैरकानूनी सार्वजनिक आन्दोलन द्वारा नहीं किया जा सकता; क्योंकि त्रोत्स्की के शब्दों में सोवियत् जनता "समाजवादी निर्माण के जादू" के असर में है, इसलिए यह जरूरी है कि दूसरा तरीका अख्तियार किया जाय।

त्रोत्स्की ने सोचा था कि यदि देश का औद्योगिक जीवन इस प्रकार अस्त-व्यस्त हो जाय जिससे कि चारों ओर जनता में असन्तोष फैले, और यदि उसी समय सोवियत् सरकार के बड़े बड़े नेताओं की हत्या कर दी जाय तो उक्त बात संभव हो सकती है। इसलिए उसका कहना था कि उद्योग और यातायात के अत्यन्त मर्मस्थलों पर इस प्रकार की अव्यवस्था और अस्तव्यस्तता करने तथा सोवियत नेताओं की हत्या के प्रबन्ध के लिए सोवियत संघ के भीतर उससे सहानुभूति रखने वाले समुदायों का संगठन किया जाय।

सेदोफ़् बहुत संतुष्ट हुआ जब कि प्याताकोफ़् ने उसकी योजना का समर्थन किया और सोवियत् संघ में इस तरह की तैयारी करने का भार अपने ऊपर लिया।

मास्को लौटने से पहले प्याताकोफ् फिर एक बार, चंद मिनटों के लिए सेदोफ़् से मिला और उसने अपेक्षित धनके सम्बन्ध में बातचीत की। सेदोफ् ने बतलाया कि भारी उद्योग के सहायक राजमन्त्री के पद का उपयोग करके तुम जर्मन-व्यापारी कम्पनी बोर्सिग् और डेमग् को माल के लिए आर्डर भेजो। त्रोत्स्की ने उनके साथ बातचीत कर ली है। वह कीमत अधिक बढ़ाकर अतिरिक्त मूल्य इस काम के लिए दे देगी। प्याताकोफ् ने और सविस्तर हिदायत पाने के लिए कहा, जिस पर सेदोफ् ने वचन दिया कि वह अपने बाप से पूछ कर इसके बारे में लिखेगा। प्याताकोफ् ने उसे बतलाया कि शेस्तोफ्—जो इस वक्त बर्लिन में काम कर रहा है—को पत्र देना।

१९३१ के नवम्बर में सेदोफ् ने त्रोत्स्की से और हिदायतें पायीं और पहले से ते करके वह बाल्टीमोर-भोजनालय में शेस्तोफ् से मिला और एक जोड़ा जूता दिया। उसी के भीतर प्याताकोफ् और मुरालोफ् के लिए "प" "म" अक्षरों द्वारा अंकित दो पत्र छिपाये हुए थे। शेस्तोफ् ने उन दोनों को ठीक से पहुंचा दिया।

प्याताकोफ् को ताज्जुब हुआ जब कि उसने देखा कि

उसे तो सेदोफ् के पत्र के मिलने की उम्मीद थी, लेकिन जो पत्र उसे मिला वह खास त्रोत्स्की के हाथ का था। पत्र में बतलाया गया था कि मुख्य कार्य है चाहे किसी तरह से 'स' (स्तालिन्) को हटाना और सोवियत् संघ में स्तालिन्-विरोधी सब शक्तियों को एक सूत्र में बाँधना। पत्र जर्मन भाषा में लिखा गया था।

प्याताकोफ् ने अपने पुराने साथियों की तलाश शुरू की।

१९३२ के आरम्भ में त्रोत्स्की ने रादेक् को अपनी ओर किया। जिस वक्त रादेक् जेनेवा में था, उसने तास्स् (सोवियत-समाचार-एजेन्सी) के संवाददाता शेम्म्—जिसने कि मुकद्दमे में गवाही दी—की मार्फत एक पत्र पाया। इस पत्र में भी बहुत कुछ वेही बातें थीं जो कि प्याताकोफ् के पत्र में थीं।

१९३२ की गर्मियों में प्याताकोफ् फिर एक बार बर्लिन गया। वहां उसने सेदोफ् को अपने काम की सूचना दी। सेदोफ् ने उसे बताया कि उसका पिता अधीर हो रहा है।

शरद् काल में प्याताकोफ् की कामेनेफ़् से बात हुई और फिर प्याताकोफ् और रादेक् ने अपना केन्द्रीय समूह स्थापित किया। इसका उद्देश्य था ज़िनोवियेफ् और कामेनेफ् के नेतृत्व में संगठित हुए समूह से बिलकुल स्वतंत्र रहना, किन्तु साथ ही साथ उसके ऊपर किसी भीषण प्रहार के होने पर उसके स्थान को ग्रहण करने के लिये तैयार रहना। रादेक् इससे असन्तुष्ट था कि जिनोवियेफ् और कामेनेफ् को साथ लेना

आवश्यक समझा जाय। वह सहयोगी के तौर पर उनमें विश्वास नहीं रखता था। उसने इसके बारे में त्रोत्स्की को भी लिखा। लेकिन त्रोत्स्की का जोरदार उत्तर था कि स्तालिन्-विरोधी सभी शक्तियों में सहयोग स्थापित किया जाय। ये पत्र शेम्म् द्वारा पहुंचाये गये थे।

प्याताकोफ् चुप न था। उसने अपने सह-अपराधियों में से बोगुस्लाव्स्की, द्रोब्निस् लिव्शित्ज्, नोर्किन और राताइचक् तथा बहुत से दूसरे व्यक्तियों को स्वयं भर्ती किया।

१९३३ के अंत में उसने गग्री में सेरेब्रयाकोफ से भेंट की और उसे काकेशस् के समूह का प्रधान मुकर्रर किया तथा उसके ऊपर रेलों की तरफ विशेष ध्यान देने का भार दिया।

अपने भारी उद्योग के राजमंत्री के पद को उसने रंगरूटों की नियुक्ति में लगाया। द्रोब्निस् को उसने नोर्किन को "सहायता" देने के लिये केमेरोओ-खान में भेजा। कुज्बास् में उसने शेस्तोफ् को भेजा। खरकोफ्, कियेफ्, ओदेसा और द्नयेप्रोपेत्रोव्स्क नगरों में त्रोत्स्की-अनुयायी-समूह बनाये गये। कोयला, रसायन और तांबे की खान के उद्योगों में नाशकारी काम किये गये।

जैसा कि प्यातकोफ् ने गवाही देते हुए कहा, नाश करने का काम आसानी से नहीं चलाया जा सका। उसके बहुत से समर्थक इसके विरोधी थे। उसने कहा—"इस काम

ने लोगों में कर्त्तव्य-विमूढ़ता और असन्तोष पैदा किया। उसने त्रोत्स्की को राय बदलने के लिए लिखा, लेकिन वह दृढ़ था कि नाश को जारी रखना चाहिये।

१९३४ के अप्रैल में रादेक् ने और अधिक हिदायत के साथ त्रोत्स्की का एक पत्र पाया। उसमें त्रोत्स्की ने कहा था कि हिटलर का अधिकारारूढ़ होना मेरी उस बात को सच्ची कर रहा है जिसे मैं बराबर कहा करता था अर्थात् सोवियत् संघ एक युद्ध में फँसने वाला है जिसमें कि उसे हार खानी पड़ेगी। इसलिए त्रोत्स्की-अनुयायियों द्वारा सरकार के स्थापित होने की एक मात्र आशा यही है कि विजेताओं से आगे से ही कुछ शर्तें तै करा ली जायं। उसने लिखा था कि मैं जर्मन और जापानी सरकारों से इसके बारे में समझौता कर रहा हूं।

१९३४ के दिसम्बर में लेनिनग्राद के साम्यवादी दल के नेता किरोफ् को ज़िनोवियेफ् और कामनेफ् के दल ने मार डाला। जल्द ही वह दल गिरफ्तार कर लिया गया। प्याताकोफ् का दल उक्त हत्या के प्रभाव पर विचार करने के लिए एकत्रित हुआ और उसने निश्चय किया कि हत्या का छिटपुट काम व्यर्थ ही नहीं, बहुत बुरा भी है। आतंकवाद को या तो हमें एक बार ही छोड़ देना चाहिये या उसे बड़े पैमाने पर चलाना चाहिये। उन्होंने तै किया कि

उसे बड़े पैमाने पर चलाया जाय। साथ ही, चूंकि, अब जिनोवियेफ् का दल पकड़ लिया गया था, इसलिये प्याताकोफ़् के दल ने उसके स्थान पर काम करना शुरू किया। सोकोल्-निकोफ् अब तक निष्क्रिय रूप से भाग ले रहा था और उसने मुख्यतया कुछ राजदूतों से पत्र-व्यवहार का ही काम किया था। उसने अब और भी अधिक मात्रा में काम करने पर ज़ोर दिया।

१६३५ के दिसम्बर में रादेक् को हिन्दुस्तानी कागज पर त्रोत्स्की का आठ पृष्ठों में लिखा पत्र मिला। उसमें उसने सोवियत्-संघ के पराजय के संबन्ध में अपने विकसित विचार प्रकट किये थे।

उसके उन विचारों को समझना मुश्किल है। लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि उनमें युक्तियों की कुछ श्रृंखला दिखलाई पड़ती थी; संक्षेपतः वे निम्न प्रकार की थीं— उसने पहले ही कहा था कि यह उनके लिये संभव हो सकता है कि उद्योग-धंधे को लगातार अस्तव्यस्त करके तथा आतंक फैला कर शक्ति प्राप्त की जाय। लेकिन सब से अधिक संभव यह है कि सोवियत्-संघ जर्मनी और जापान के साथ एक युद्ध में फंस जाय। ये दोनों शक्तियां १६३७ में युद्ध की तैयारी कर रही हैं; ऐसी अवस्था में दल के लिए अधिक संभावना है कि वह राजशक्ति पर अधिकार जमा ले; हां, यदि वह

विजेताओं की सहायता प्राप्त कर सकें। त्रोत्स्की को पूर्ण विश्वास था कि जर्मनी और जापान विजयी होंगे। यदि आगे से ही उन शक्तियों के साथ मित्रता कर ली जाय तो बहुत ही अच्छा होगा। इसलिये मैं उनके साथ समझौते की बातचीत कर रहा हूं और मैं उन्हें "५वें दल" की सहायता को सोवियत्-संघ के भीतर कर देने के लिए तैयार हूं। लड़ाई शुरू होने से पहले जर्मनी और जापान के लिए सूचना इकट्ठी की जा सकती है, उनके भेदिया-विभाग के साथ सहयोग किया जा सकता है और महत्वपूर्ण सैनिक कारखानों तथा युद्ध के महत्व की रेलों में अव्यवस्था एवं अस्तव्यस्तता पैदा की जा सकती है। जब लड़ाई छिड़ जाय, तो अव्यवस्था पैदा करने में हमें दुगुने उत्साह से काम लेना चाहिये। लड़ाई के बाद जर्मनी और जापान हमको अधिकारारूढ़ करेंगे तो हमें उक्रइन् की स्वतंत्रता कबूल करनी चाहिये और साइबेरिया के पूरब समुद्र-तटवर्ती प्रान्तों को जापान के हाथ में सौंप देना चाहिए। जर्मनी को सोने की खान, तेल, मगनेशिया, लकड़ी, खनिज-खाद्य तथा जापान को सखालिन् का तेल देना होगा। त्रोत्स्की ने सोचा था कि किस प्रकार वह एक किस्म की व्यापारी, औद्योगिक, ठीकेदार और पूंजीपति श्रेणी का निर्माण करेगा जो कि उसके शासन के पक्ष में होगी, जिस शासन में कि वह नेपोलियन का पद ग्रहण करेगा। त्रोत्स्की ने सूचित किया था कि

मैं हिटलर के प्रतिनिधि हेस्स् से इस विषय में बात तै भी कर चुका हूं और जापान हमारी योजना से सहमत है। त्रोत्स्की ने रादेक् को जो पत्र लिखा था, उसका भाव संक्षेप में यही था।

इस सम्बन्ध में किसी पाठक के दिल में जो जिज्ञासा उठेगी, उसके लिए विशिन्स्की का सोकोल्निकोफ् से पूछा गया निम्न प्रश्न कुछ जानकारी प्रदान करेगा :—

विशिन्स्की—"क्या तुमने सोचा था कि वैसा करके तुम अपनी स्वतन्त्रता का कुछ भाग कायम रख सकते?"

सोकोल्निकोफ् ने उत्तर दिया—"हमने सोचा था कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता से लाभ उठाकर हमें ऐसा करने का मौका मिल जाता। उदाहरणार्थ—हमने सोचा था कि जर्मनी का फासिस्तवाद सोवियत्-संघ के ऊपर पूर्ण कब्ज़ा नहीं कर पायेगा; क्योंकि दूसरी साम्राज्यवादी शक्तियां उसे वैसा करने की इजाज़त नहीं देंगी और अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े उठ खड़े होंगे।"

उसी प्रश्न का दूसरा पहलू है, जिसे कि हिटलर ने एक ऐसे आदमी—जो कि 'विश्वक्रान्ति' के प्रचारक होने का दम भरता है—के सहयोग से करना चाहा था। सम्भवतः हिटलर समझ रहा था कि त्रोत्स्की के कल्पनापूर्ण विचारों की फ़िक्र किये बिना वह उसके द्वारा सोवियत् संघ से अपना मतलब गांठने में लाभ उठा सकता है।

जिस ओर त्रोत्स्की का दिमाग काम करता था, उसका पता उसके अपने लिखे तथा छापे उन लेखों से मालूम हो जाता है, जिन्हें कि उसने अक्तूबर १६३३ में "विरोधी-दल की सूचना" (Bulletin of opposition) की ३६—३७ वीं संख्याओं में प्रकाशित किया था। "चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय (International) की समस्याएं" नामक लेख में निम्न वाक्य मिलते हैं।

"क्या शान्तिमय तरीकों से नौकरशाही को हटाया जा सकता है ? यह बच्चों की सी बात होगी, यदि सोचा जाय कि स्तालिन् की नौकरशाही किसी एक पार्टी या सोवियत् कांग्रेस द्वारा हटायी जा सकती है। साधारण वैधानिक तरीके शासकों की गुट को हटाने के लिए उपलभ्य नहीं रह गये हैं। **शक्ति के उपयोग** से ही अग्रगामी श्रमिक-जनता के हाथ में शासन-सूत्र देने के लिये मजबूर किया जा सकता है। इसपर भी यदि स्तालिन् की मशीन समाना करती है तो उसके खिलाफ **खास तरीकों के वर्तने** की आवश्यकता होगी।"

प्यातोकोफ् और रादेक् ने त्रोत्स्की के पत्र को लेकर विचार-विनिमय किया, और जैसा कि उन्होंने कहा, उन्हें बहुत परेशानी हुई। उन्होंने सोचा कि लाल सेना की शक्ति को कूतते वक्त त्रोत्स्की भारी गलती कर रहा है। उन्होंने निश्चय किया कि हममें से एक को त्रोत्स्की से मिलना चाहिये। उनको

डर लग रहा था। उनके साथियों में से अधिकांश सोवियत संघ के हिस्से-बखरे करने की योजना को सह न सकेंगे और त्रोत्स्की की योजना को प्रगट करने पर दल में जरूर फूट पड़ जायगी। उन्होंने (जैसा कि रादेक् ने कहा) दल का एक सम्मेलन इसलिए करना चाहा कि यदि संभव हो तो त्रोत्स्की की नई हिदायतों पर स्वीकृति ली जाय, अन्यथा जो स्वीकार नहीं करते, उन्हें अलग होने का मौका दिया जाय।

ओस्लो के विद्यार्थियों ने रादेक् को व्याख्यान देने के लिये निमंत्रित कर रखा था। और, वह तैयारी कर रहा था कि जिस वक्त सरकारी काम से प्याताकोफ् बर्लिन् बुलाया जाय उस वक्त त्रोत्स्की से मिले।

त्रोत्स्की से मुलाकात करने का काम प्याताकोफ् पर छोड़ा गया; क्योंकि इस मुलाकात के सम्बन्ध में संदेह प्रकट किये गये हैं, इसलिए इस घटना के बारे में कुछ विशेष कहने की जरूरत है।

प्याताकोफ् १० दिसम्बर, १९३५ को बर्लिन पहुंचा। १० या ११ तारीख को वह *इज़्वेस्तिया* के संवाददाता बुखार्चेफ् (जिसने कि मुकदमे में गवाही दी) से बर्लिन में मिला। उसने उसे बतलाया कि त्रोत्स्की ने उसके लिए एक पत्रवाहक बर्लिन भेजा है। दूसरे दिन बुखार्चेफ् ने पत्रवाहक से टीगार्टेन में सीगेसाल स्थान में परिचय कराया। बुखार्चेफ्

जानता था कि पत्रवाहक का नाम है गुस्ताव् स्टिर्नर लेकिन उसने सिर्फ गुस्ताव् के नाम से उसका परिचय कराया। गुस्ताव् ने त्रोत्स्की का लिखा हुआ एक पुर्जा प्याताकोफ् को दिया। उसमें लिखा था—"उ० ल० इस पुर्जे के वाहक पर पूर्णतया विश्वास किया जा सकता है।" उसने प्याताकोफ् से कहा कि त्रोत्स्की मिलने को बहुत उत्सुक हैं। क्या हवाई जहाज से चलने के लिए तैयार हो? प्यातकोफ् ने 'हां' कहा, यद्यपि वह समझ रहा था, जैसा कि अदालत में उसने बतलाया, कि मैं भेद खुल जाने का भारी खतरा अपने ऊपर ले रहा था। गुस्ताव् ने दूसरे दिन सवेरे टेम्पेलहोफ् के हवाई अड्डे पर मिलने को कहा। बात यहीं समाप्त हो गई। इसमें एक या दो मिनट ही लगे थे।

प्यातकोफ् ने कहा—"दूसरे दिन बड़े सवेरे मैं सीधा हवाई अड्डे के द्वार पर गया। वह (गुस्ताव्) मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मैं उसके साथ हो लिया। उसने मुझे एक पासपोर्ट दिखलाया जो कि मेरे लिए तैयार किया गया था। पासपोर्ट जर्मन था। गुस्ताव् ने कस्टम के सारे शिष्टाचारों को स्वयं अदा किया और मुझे अपना हस्ताक्षर भी करना पड़ा। हम एक हवाई जहाज में बैठे और चल पड़े।"

गवाही देते हुए बुखार्चेफ् ने कहा था कि मैंने गुस्ताव् से पूछा कि तुमने कैसे पासपोर्ट और हवाई जहाज का प्रबन्ध

किया ? उसने उत्तर दिया था कि मेरे काफी सम्बन्ध हैं और वह हवाई जहाज एक खास विमान था। अदालत में उस वक्त जो लोग उपस्थित थे, बुखारेफ् के उक्त कथन से उनके मन में यही धारणा हुई कि उक्त विमान सैनिक विमान था।

प्याताकोफ् ने आगे कहा—"हम कहीं नहीं ठहरे और सवेरे तीन बजे ओस्लो के पास हवाई अड्डे पर उतरे। वहां एक मोटर हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। हम उसमें बैठ कर रवाना हुए। कोई तीस मिनट चलने के बाद हम एक गांव में पहुंचे। बाहर निकल कर एक छोटे घर में प्रविष्ट हुए। घर की सजावट बुरी न थी। वहां मैंने त्रोत्स्की को देखा जिसे कि १९२८ के बाद फिर नहीं देखा था।"

यह पूछने पर कि नार्वे में भूमि पर उतरते वक्त हवाई जहाज को कोई कठिनाई तो नहीं हुई थी; प्यातकोफ् ने जवाब दिया कि इस अस्वाभाविक यात्रा के कारण मेरे दिल में इतनी उत्तेजना थी कि मैंने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया।

मैंने कुछ वक्तव्य पढ़े हैं जिनमें कहा गया है कि दिसम्बर, १९३५ में जर्मनी से नार्वे को कोई हवाई जहाज नहीं गया। इसपर विश्वास करना कठिन है और वक्तव्य से यह भी नहीं मालूम होता कि यहां विमान से मतलब साधारण व्यापारिक

हवाई जहाज़ से है या सैनिक से भी । जो भी हो, यह तो स्पष्ट है कि इस यात्रा को छिपाने के लिए सभी लोग उत्सुक थे और यात्रा के प्रबन्ध करने में ऊंचे अधिकार रखने वाले व्यक्तियों का हाथ था । इसलिए हो सकता है कि उक्त उड़ान को कागज में दर्ज न किया गया हो ।

मुलाकात के दौड़ान में त्रोत्स्की ने अपनी भेजी हुई हिदायतों की पुष्टि की और तीन घंटे की बातचीत के बाद, उसी शाम को प्याताकोफ़् बर्लिन की ओर उड़ पड़ा ।

जनवरी, १६३६ में त्रोत्स्की ने एक दूसरा पत्र दल के नाम भेजा और गवाही के अनुसार वही उसका अंतिम पत्र था । त्रोत्स्की और रादेक् के बीच पत्र-व्यवहार शेम्म् की मार्फत् होता था । शेम्म् पहले जेनेवा में तास्स् का संवाददाता था, पीछे न्यूयार्क में इज़्वेस्तिया का संवाददाता रहा । अपने संवाददाता के काम के कारण उसे सोवियत् संघ में बराबर आने-जाने का काम पड़ता था, और इस तरह संदेश-वहन के लिए वह सबसे अधिक उपयुक्त आदमी था । उसने मुकद्दमे में गवाही देते हुए कहा कि मैं पांचों पत्रों को पुस्तकों के गत्तों के बीच में छिपा कर लाया था । उसने उन किताबों में से दो का नाम *चुसिमा* और अंग्रेजी-रूसी यान्त्रिक कोश बतलाया ।

रादेक् ने कहा कि पत्रों को पढ़ कर तुरंत ही मैं सावधानी के साथ उन्हें जला देता था ।

६ठा परिच्छेद

भेद बताना

अपराधियों की भेद खोलने सम्बन्धी कार्रवाइयों का विवरण अधिकतर एकान्त कमरे में लिया गया था, तो भी खुली अदालत में दी गई गवाहियों से मालूम होता है कि जर्मनी और जापान के फ़ायदे के लिए राजकीय रहस्यों के पता लगाने का जाल-सा बिछा था। बहुत से जर्मन-भेदियों का नाम लिया गया और पता लगा है कि उक्त दोनों देशों के बहुत से राजदूत तथा उनके सहायक इन कार्रवाइयों में खास हाथ रखते थे। जब किसी राजदूत का नाम लेना होता तो 'महाशय क' 'महाशय ख' कह कर पुकारा जाता। तो भी एक अवसर पर अपराधियों में से एक की ज़बान से एक जापानी अफ़सर का नाम निकल आया और अदालत में उपस्थित विदेशी पत्रों के संवाददाताओं ने झट से उसे पहचान लिया। अपराधी ने नाम लेने के लिए क्षमा माँगी और बतलाया कि नाम अवश्य उसी अक्षर से आरम्भ होता है लेकिन मैं आज्ञा चाहता हूँ कि कोई दूसरा अक्षर, नाम के लिए, लिया जाय जिसमें कि नाम के निकल आने की भूल फिर न दुहरायी जाय। दलकी और दूसरी कार्रवाइयों की

भांति भेदिये का काम भी प्याताकोफ् के नेतृत्व में किया जाता था।

जापानी-भेदिया-विभाग को क्न्याजेफ् और तुरोक् इन दो अपराधियों से मदद मिलती थी। क्न्याजेफ् दक्षिणी उराल-रेलवे के प्रधान पद पर अधिष्ठित था। वह जानने योग्य बातों को जमा कर जापानी-भेदिया-विभाग को सूचित करता था। ये भेद अधिकतर सभी पूर्वी रेलों के एक साथ संचालन-सम्बन्धी हिदायतों तथा १६३४ में पूर्वी-साइबेरिया की ओर गई हुई सैनिक ट्रेनों की संख्या के बारे में थे। जापान ने उसे हिदायत दी थी कि जब लड़ाई छिड़े तब वह सैनिक गुदामों में आग लगा देने की तैयारी करे और सेना ले जानी वाली गाड़ियों में भयंकर रोग-कीटाणु—जिन्हें कि उसने देना स्वीकार किया था—छोड़ दे। जापान की हिदायत के अनुसार सचमुच ही उसने कितनी ही ट्रेनों को नष्ट करने का काम किया, जिसमें कि बहुत से आदमियों की जान चली गई। ये बातें अगले परिच्छेद में बतलायी जायंगी।

तुरोक् क्न्याजेफ़ को सहयोग दे रहा था। उनकी सेवाओं के लिए उन्हें जापान ने भारी पारितोषिक दिया। तुरोक् ने २०००० रूबल (करीब ८०० पौंड साढ़े दस हजार रुपये) और क्न्याजेफ् ने १५००० रूबल (करीब ६०० पौंड या ८००० रुपये) पाये।

जापानी राजदूत-विभाग के एक अधिकारी का एक पत्र

क्न्याजेफ् के पास मिला। जो कि अगस्त, १६३६ में लिखा गया था। उसे अदालत में पेश किया गया था और क्न्याजेफ् ने इसकी पहचान की। उस वक्त अदालत में बड़ी दिलचस्पी बढ़ी जब कि रेलवे-विभाग के सहायक राजमंत्री लिवृशित्ज़्-जो कि कुछ कुछ तुतलाता था—ने निम्न रहस्योद्घाटन सर्वप्रथम, किया:—

"मैं अदालत को निम्न बातें बतलाना चाहता हूं— आरम्भिक अन्वेषण में मैंने इनकार किया था...... मैंने एक बहुत ही जघन्य घटना से इन्कार किया था—"

विशिन्स्की—"वह क्या थी ?"

लिवशित्ज़ —"भेदिया-कार्य सम्बन्धी प्रश्न"।

विशिन्स्की—"क्या तुम उसे अब खोलोगे ?"

लिवशित्ज़्—उसी कारण से मैंने आरंभिक अन्वेषण के समय तुरोक् के साथ कोई सम्बन्ध होने से इन्कार किया। लेकिन अब मैं सभी बातें अदालत में खोलना चाहता हूं, यद्यपि यह एक बहुत ही भयंकर अपराध—पितृभूमि के साथ द्रोह—है। मैं अदालत को बतलाना चाहता हूं... .... कि विदेशी शक्तियों के एजेन्टों के साथ क्न्याजेफ् और तुरोक् के सम्बन्धों की सारी बातें मैं जानता हूं।"

विशिन्स्की—"कौन से समय में तुम इसे जानते थे ?"

लिवृशित्ज़्—"१६३५ से मेरी गिरफ्तारी के समय तक। विशेष

कर क्न्याजेफ् के माँगने पर मैंने उसे भेजने के लिये कुछ पते की बातें बतलाईं—

विशिन्स्की—"जब कि तुम······?"

लिव्शित्ज्—"सहायक जन-मन्त्री था।"

यह उन बहुत से वार्तालापों में से एक था जो कि सभी उपस्थित जनता में घटनाओं के प्रति पूर्ण विश्वास पैदा करते थे। लिवशित्ज् अलग नहीं रह सकता था, जैसा कि उसने सह-अपराधियों की भेदिया-सम्बन्धी कार्रवाइयों की अपनी जानकारी को पहले पहल शर्माते हुए प्रकट किया। उस वक्त वह आवेश में आकर बुरी तरह तुतला रहा था और अदालत में उपस्थित सभी लोग उत्सुक हो रहे थे कि वह क्या कहने जा रहा है।

अपराधी राताइचक् को प्याताकोफ् ने जर्मन-भेदिया-विभाग से सहयोग करने का काम सौंपा था। राताइचक् सोवियत के रासायनिक उद्योग के केन्द्रीय विभाग का प्रधान था और इस प्रकार वह बहुत ही मूल्यवान् सूचना दे सकता था। उसने एक जर्मन-भेदिया—लेन्ज़् को १९३४ में सैनिक-रसायन-सम्बन्धी कारखानों की उपज तथा १९३५ के योजनानुसार आनेवाले आँकड़े को दिया था। उसने पुशिन और प्रशो, दोनों अपराधियों को अपने इस काम में सहायता देने के लिए भर्ती किया था। पुशिन् ने लेन्ज़् को सभी

रासासायनिक उद्योग की १६३४ की उपज तथा १६३५ की योजना के आँकड़े दिये। उसने १६३८ तक नाइट्रोजन-कारखानों के निर्माण के लिये योजना का काम रुकने तथा प्रोग्राम के टूट जाने के सम्बन्ध में नियमित सूचना दी।

ग्रशे, जिसे कि राताइचक् ने रासायनिक उद्योग के वैदेशिक विभाग का प्रधान नियुक्त किया था, अदालत में अपनी स्वीकृति के अनुसार साफ साफ भेदिया था। उसका जन्म आस्ट्रिया-हंगरी परिवार में हुआ था। वह १६२० में जेकोश्लोवाक्-भेदिया-विभाग के एजेन्ट के तौर पर झूठे पास-पोर्ट के साथ सोवियत् संघ में आया था। वह १६३२ में जर्मनी की नौकरी में दाखिल हुआ और जर्मन मेयेरोवित्ज् की हिदायत के अनुसार काम करता था। उसके द्वारा मेयेरोवित्ज् का राताइचक् से सम्बन्ध हुआ था। उसने और राताइचक् ने मेयेरोवित्ज् के फोटो को पहचाना। ग्रशे को अपने काम के लिए पैसे मिलते थे। उसके अपने कोई निजी राजनैतिक विचार न थे ("मैं एक भेदिया के तौर पर कोई विचार नहीं रख सकता था") उसने आतंकवाद या अस्तव्यस्तता-सम्बन्धी कोई काम नहीं किया था।

स्त्रोइलोफ् जर्मनी के लिए दूसरा एजेन्ट था। वह अपने सह-अपराधियों से बिल्कुल भिन्न ही धातु का बना आदमी था। किस तरह वह इस अपराधपूर्ण चक्कर में फँसा,

इसे देख कर उसके प्रति सहानुभूति पैदा होती थी। वह सिर झुकाए कठघरे में बैठा था। यह साफ़ था कि अपने किये अपराधों को महसूस करके वह शोकमग्न हो रहा था। उसका अफ़सोस ज़ाहिर करना बिल्कुल सच्चे दिल से था और प्रायः सारे अपराधियों के बीच वही अकेला था जो कि अपने किए अपराधों के प्रति स्पष्टवादिता से काम लेता था।

जैसा कि पहले कहा गया है, जैसे ही धीमी आवाज़ से उसने बयान करना शुरू किया, कि किस तरह वह पहले पहल जर्मन पुलिस के जाल में और पीछे त्रोत्स्की के अनुयायियों के फंदे में फँसा, वैसे ही तीनों जजों के कान खड़े हो गये और उन्होंने अत्यन्त सावधानी के साथ उसकी भाव-भंगी का अध्ययन करना आरंभ किया। और, वह जो कुछ कह रहा था, उसपर वे पूरा नोट लेते जा रहे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे सब से कम सज़ा—आठ वर्ष की कैद—हुई।

उसकी कही हुई कथा इस प्रकार थी—"मेरा व्यवसाय इंजीनियर का है। मैं न तो कभी साम्यवादी दल का मेम्बर रहा, न कभी त्रोत्स्की-पंथियों के साथ मेरी कोई राजनैतिक सहानुभूति ही रही।" स्त्रोइलोफ़ अपने व्यवसाय में बहुत ऊंचे पद पर पहुँच चुका था। उसने कई उपयोगी आविष्कार किये थे जिनके लिए उसे सोवियत् संघ का सर्वोच्च पदक—

'लेनिनपदक'—पुरस्कृत किया गया था । अपने इज़हार के अंत में उसने कहा था—"(साम्यवादी) दल और सरकार ने मेरे साथ बहुत ही उत्तम बर्त्ताव किया ।

१६३१ में सरकार ने उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिये जर्मनी भेजा । उस समय सोवियत् संघ औद्योगीकरण और पंचायतीकरण की प्रथम ड्योढ़ी के भीतर प्रवेश कर रहा था। स्त्रोइस्त्रोफ् के माता-पिता एक ऐसे गांव में रहते थे जहां कि खेती के पंचायतीकरण में बहुत जल्दी की गई थी । और, उसके कारण उन्हें बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा था। इस बात का असर स्त्रोइलोफ पर पड़ा । साथ ही सोवियत् संघ की साधारण स्थिति उस वक्त बहुत अच्छी न थी । भोजन नाप-तौल कर मिलता था और लोग प्रथम पंचवार्षिक योजना की सफलता के उद्योग में कमर कसे हुए थे । इन ख्यालों को, अपने दिमाग में लेते हुए, स्त्रोइलोफ् जर्मनी गया । वहां एक इञ्जीनियर के तौर पर वह मध्यम-श्रेणी के लोगों में घूमता था और जर्मनी की तत्कालीन अधिक समृद्धावस्था को देख कर वह प्रभावित हुआ था ।

बाहर भेजे जाते वक्त उसे कड़ी हिदायत दी गई थी कि वह किसी राजनैतिक प्रचार के काम में भाग न ले जिससे कि उसे देश लौटा दिया जाय । जर्मन साथियों के साथ बातचीत करते वक्त अक्सर सोवियत् संघ की अवस्था के सम्बन्ध में

प्रश्न उठ जाते थे और स्त्रोइलोफ् अपनी राय देते हुए कहता था कि यद्यपि इस समय अवस्था उतनी अच्छी नहीं है, तो भी, उसमें सुधार अवश्य होगा। जर्मन पुलिस के कानों तक स्त्रोइ-लोफ् की बातें पहुंचीं और उसने उसे धमकाया कि तुम्हें देश से निकाल दिया जायगा; क्योंकि तुम इस तरह का राजनैतिक प्रचार कर रहे हो या देश की अवस्था को असन्तोषजनक बतलाने की बात को सोवियत् अधिकारियों के पास पहुंचा दी जायगी और फिर निःसन्देह तुम्हें सोवियत संघ की जेल में डाल दिया जायगा।

उन्होंने उसे त्रोत्स्की की पुस्तक—"मेरा जीवन" पढ़ने को दिया और कहा कि इसके पढ़ने से तुम्हारे विचार बदल जायेंगे। स्त्रोइलोफ् ने कहा—"मैंने उस पुस्तक को बहुत महत्व नहीं दिया।" तो भी अन्त में देखने में जर्मनी की अधिक समृद्धावस्था ने उस पर ज्यादा प्रभाव डाला और वह पुलिस की धमकियों में आ गया। उन्होंने उससे एक कागज पर हस्ताक्षर कराया कि मैं सोवियत संघ को नहीं लौटूंगा। बल्कि जर्मनी में रहूंगा और काम करूंगा। इसके बदले में पुलिस ने उसे वचन दिया कि हम तुम्हें फ्रांस और जेकोश्लोवाकिया में पढ़ने को भेजेंगे। जब कि उसने एक बार हस्ताक्षर कर दिया तो पुलिस वाले हंसने लगे और उन्होंने उससे कहा कि फ्रांस या जेकोश्लो-वाकिया भेजने का न कोई बात है और न जर्मनी में रहने की;

तुम्हें सोवियत् संघ में जाना होगा और वहां हमारे लिये काम करना होगा । उसने अदालत में कहा—"मैं अवश्य स्वीकार करता हूं, कि मैं अवाक् रह गया ! मैंने कहा कि यह सरासर बेईमानी है ।

जर्मन पुलिस के कहे अनुसार वह सोवियत् संघ में लौट आया और भेद खोलने की धमकी से डर कर उसने बहुत सी मूल्यवान् सूचनाएं जर्मन-भेदिया विभाग को दीं । जर्मनों ने स्त्रोइलोफ् की स्थिति त्रोत्स्की-पंथियों को सूचित की और शेस्तोफ् त्रोत्स्की-पंथियों की ओर से उससे मिलने आया । "मेरे कर्त्तव्यविमूढ़ जैसे प्रश्न—मेरे जैसे किसी भी दल से सम्बन्ध न रखने वाले एक इंजीनियर और त्रोत्स्की-पंथियों के संगठन से क्या सम्बन्ध हो सकता है—के उत्तर में शेस्तोफ् ने कहा कि त्रोत्स्की-पंथियों ने मुझे भी वही काम दिया है जिसे कि जर्मनों ने तुम्हें दिया है । इसलिए हम दोनों में कोई भेद नहीं ।"

विशिन्स्की—"क्या इससे तुम्हारा समाधान हुआ ?"

स्त्रोइलोफ्—"नहीं । लेकिन, उसके व्यवहार ने मेरा समाधान कर दिया ।'"

विशिन्स्की—"क्या व्यवहार ?"

स्त्रोइलोफ्—"वह चाहता तो मुझे अपराध-विभाग की पुलिस (G. P. U.) के सिपुर्द कर देता—मैं बहुत ही डर गया था ।"

उसके बाद स्त्रोइलोफ़ ने शेस्तोफ् के कहे अनुसार कोयले के उद्योग में अव्यवस्था और नाश सम्बन्धी बहुत से काम किये। शेस्तोफ् के अहंकारपूर्ण बर्ताव (कठघरे के भीतर भी) को देखते हुए यह विश्वास करना आसान था कि वह बहुत ही प्रभावशाली और संकोचरहित धोखेबाज बन गया था; वस्तुतः उसने स्त्रोइलोफ़् पर ही आतंक नहीं जमा रक्खा था बल्कि अर्नोल्द् पर भी, जिससे कि वह दो भयंकर कांड करवाना चाहता था। इन कांडों का वर्णन आगे आवेगा। यदि स्त्रोइलोफ् को इसमें सफलता मिली होती तो अर्नोल्द को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता।

स्त्रोइलोफ् की अपराधपूर्ण कार्रवाइयां दूसरे कितने ही अपराधियों की कार्रवाइयों से कम भयंकर न थीं, लेकिन अदालत ने दंड देते समय इस बात का खयाल रखा कि वह काम करने में पूर्णतया स्वतंत्र नहीं था। जेल में निःसन्देह उसे अपने खान-सम्बन्धी इंजीनियर के काम में लगाया जायगा, और बहुत संभव है कि चंद सालों के भीतर ही वह अपने पुराने विचारों को बदल दे।

सातवां परिच्छेद

हानि पहुँचाना

"क्रान्तिविरोधी अभिप्राय से बारूद के सहारे या अन्य प्रकार से आग लगाना या रेलवे ...सार्वजनिक गुदाम या दूसरी इमारतें, या राज्य अथवा सार्वजनिक सम्पत्ति के नाश करने या हानि पहुंचाने के लिये इस धारा की दूसरी उपधारा के अनुसार सज़ा होगी।" (अर्थात् मृत्यु-दंड, सर्वत्रबध्यता और सभी सम्पत्ति की जब्ती, अथवा परिस्थिति के कारण अपराध के गुरुत्व के कम होने पर सभी या आंशिक सम्पत्ति की ज़ब्ती के साथ अन्ततः तीन साल की जेल)। **सोवियत् दंड-विधान धारा ५८ [२]**

जैसा कि प्याताकोफ् ने कहा—"हमने अनुभव किया कि यदि हमें अपनी ध्वंसकारिणी योजना की पूर्ति के लिए नाश या हानि का काम करना पड़े तो आदमियों के प्राणों की हानि आवश्यक है। हमने इसे समझा था और अनिवार्य समझकर इसे स्वीकार किया था।"

यहां गवाहियों से पता लगने वाले मृत और आहत व्यक्तियों की एक अपूर्ण सूची दी जाती है :—

तारीख	जिम्मेवर	प्रकार	मृत	आहत
१९३५	क्न्याजेफ्	ट्रेन उलटना	४६	५१
१९३६	,,	,,	१७	१०३
मार्च, १९३६	तुरोक्	,,	बहुत से रेल-यात्री	
२४-४-१९३६	,,	,,	१	२०
२३-९-३६	द्रोब्निस्	धड़ाका	१०	१४
	राताइचक्	,,	३	—
नवम्बर, १९३४	,,	,,	२	—
१-८-३६	,,	अनावश्यक खतरे की हिदायत	१७	१५
१५-४-३४	शेस्तोफ्	हत्या	१	—
	,,	बारूद का धड़का	अनेक बचे	
			९७	२०३

ध्वंस और हत्या का काम दल के सदस्यों ने अपने नेताओं या कभी कभी जर्मन और जापानी भेदिया-विभाग की आज्ञा से किया था।

पहली घटना कारखानों के सम्बन्ध में है। २३ सितम्बर, १९३६ को केमेरोओ की कोयला-खान के केन्द्रीय सिलिंडर में गैस के निकलने का रास्ता रोक कर एक बड़ा विस्फोट किया गया, जिसके कारण १० खनक मरे और १४ बुरी तरह घायल हुए। द्रोब्निस् ने स्वीकार किया कि इस काम का जिम्मेवर वही था और ऐसे ढंग से काम किया गया था कि

जिसमें कि दोष विशेषज्ञों के मत्थे मढ़ा जा सके। अपनी घनी-काली दाढ़ी के कारण अपराधी की अपेक्षा ज्यादा वह मौलवी जैसा मालूम हो रहा था। जरा सी हिचकिचाहट के साथ उसने बहुत शान्तिपूर्वक धीरे धीरे इजहार दिया कि जब मेरे सह-अपराधियों में से एकने मुझसे कहा कि विस्फोट से आदमी की जान जानी जरूरी है, तब मैंने उत्तर दिया कि जितनी ही अधिक मृत्यु हो उतना ही अच्छा; क्योंकि इसके कारण सोवियत् सरकार के प्रति खनकों की घृणा बढ़ जायगी।

जब विस्फोटन हुआ, उस समय से कुछ सप्ताह पहले ही, ६ अगस्त को द्रोब्निस् को पकड़ कर हवालात में रक्खा गया था। जब विशिन्स्की ने निम्न प्रश्न किये तब अदालत में बहुत हलचल थी—

"लेकिन, तुम्हारी स्वीकृति से विस्फोटन के काम का प्रबन्ध किया गया था न?"

द्रोब्निस्—"मैंने जुलाई के मध्य या अन्त में अपनी स्वीकृति दी थी।"

विशिन्स्की—"तो चूंकि तुम्हारा सहयोगी नोस्कोफ़् खान में रह गया था; इसलिए तुम्हारी गिरफ्तारी से विस्फोटन में कोई रुकावट नहीं पड़ी?"

"नहीं।"

"क्या उसे रोका जा सकता था?"

"क्यों नहीं ? जरूर रोका जा सकता था।"

"कौन रोक सकता था ?"

"मैं रोक सकता था।"

"क्या तुमने रोका ?"

"नहीं।"

"क्या विस्फोटन हुआ ?"

"हां।"

"यद्यपि तुम जेल में थे, तो भी विस्फोटन हुआ ?"

"हां।"

अदालत में जब ये सवाल–जवाब हो रहे थे तब लोग चुपचाप सांस बन्द कर सुन रहे थे। यह एक ऐसी बात थी जो कि अत्यन्त संदेह रखने वाले दर्शक को भी यह मानने के लिये मजबूर करती कि उसके सामने एक बने-बनाए नाटक का अभिनय नहीं हो रहा है; बल्कि दिल दहलाने वाली सच्ची घटना सुनायी जा रही है।

× × × ×

शेस्तोफ् बड़ा ही धूर्त, बेशर्म तथा पेशेवर बदमाश और धोखेबाज़ था। गवाही देते वक्त वह बड़े आवेश में आकर उखड़-उखड़ कर बोलता था। शेस्तोफ़ ही था जिसने कि भेद खोलने की धमकी देकर स्त्रोइलोफ् को और बदला लेने की धमकी देकर अर्नोल्द को (इस धमकी को कार्य-रूप में परिणत

करने में वह कोई आनाकानी नहीं करता) उन्हें अपने इच्छा-नुसार अपराध करवाने के लिये मजबूर किया ।

दाँत पीसते हुए उसने बयान किया कि कैसे विस्फोटन के लिए उसने डिनामाइट् जमा किया था । उसने कहा—"खनकों के लड़के खेल रहे थे, शायद जमीन खोद रहे थे, उसी वक्त डिनामाइट पर चोट पहुंची । एक भयंकर धड़ाका हुआ ।"

विशिन्स्की—"और लड़कों का क्या हुआ ?"

शेस्तोफ्—"सभी नष्ट हो गये ।"

शेस्तोफ् एक इंजीनियर की हत्या का जिम्मेवर हुआ; क्योंकि उक्त इंजीनियर ने उक्त दुर्घटना का कारण ढूँढ़ निकाला था । १५ अप्रिल १६३४ को जब वह इंजीनियर सवारी से घर जा रहा था तब एक माल की लौरी दौड़ कर उसके ऊपर से निकल गई और वह मर गया । शेस्तोफ् ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है—

"बोयरशिनोफ् मेरी आज्ञा से मारा गया । उसने मुझे रिपोर्ट दी थी कि खान के निर्माण में कुछ गलती हुई है । मैंने उसका धन्यवाद किया और वचन दिया कि मैं उसे देखूंगा । पीछे मैंने चेरेपुखिन् को बुलाया और उसे आज्ञा दी कि उस आदमी को मार डाला जाय और ऐसा किया गया ।"

विशिन्स्की—"और वह मार डाला गया ?"—"हां"

"एक सच्चा इंजीनियर !"——"हाँ"

प्रसंगवशात् यह भी लिख देना जरूरी है कि चूंकि एक विशेषज्ञ गवाह की जिरह मुश्किल बात है, इसलिए जज उलरिच्ने सफ़ाई के वकील से कहा कि अपराधियों के खुद पूछे हुए प्रश्नों के अतिरिक्त भी उनकी तरफ से कृपया आप भी जिरह करें।

प्याताकोफ् ने १९३३ में नोर्किन को केमरोओ में कारखाना–निर्माण-विभाग का प्रधान बनाकर भेजा। उसने आज्ञा दी थी कि सैनिक-महत्व के कारखानों के बनाने में जितनी हो सके उतनी देर की जाय। पीछे फरवरी १९३६ में ईंधन–सम्बन्धी कायदे के खिलाफ़ कार्रवाई करके बिजली पैदा करने वाले कारखाने में उसने तीन धड़ाके कराये।

प्याताकोफ् ने नोर्किन् को यह भी आदेश दिया था कि जैसे ही लड़ाई छिड़े, केमेरोओ के रासायनिक कारखाने में आग लगाने के लिए तैयार रहना। जब नोर्किन् ने आदमियों की जान जाने की बात का विरोध किया तो प्याताकोफ़् ने कहा—"तुम अपनी दया का अपव्यय कर रहे हो।"

क्न्याजेफ़् एक खूनी अभियुक्त था। ब्राउदे उसके लिए गवाह था, लेकिन उसकी स्थिति दयनीय थी। क्न्याजेफ़् के कार्यों की विशेषता थी ट्रेनों को नष्ट करना। उसने रेलवे के सहायक राजमंत्री लिवशित्ज़् और जापानी भेदिया-विभाग के आज्ञानुसार काम किया। वह दक्षिणी उराल–रेलवे के

अध्यक्ष की हैसियत से कोशिश रखता था कि रेलवे-लाइन और इंजिनों की ठीक से मरम्मत न होने पावे। लेकिन वह इतने से ही सन्तुष्ट नहीं था। उसने आदेश दिया था, कि ट्रेनें लड़ाई जायँ, और यदि सम्भव हो, तो इस तरह की प्राण-हानि हो, जिसमें कि सरकार के विरुद्ध जनता में घृणा फैले और लोगों के मन पर यह प्रभाव पड़े कि सरकार दोषी है।

२० अगस्त, १९३५ को शूमिखा में उसने स्थानीय कुछ स्टेशन-अधिकारियों की सहायता से ५०४ नंबर की सैनिक ट्रेन नष्ट करा दी, जिसमें २९ लाल सैनिक मरे और २९ घायल हुए। प्रधान पैट्मैन किसी काम के लिए अन्यत्र भेज दिया गया और ट्रेन को लेने का काम चुदिनोआ नामक एक उम्मीदवार लड़की को दिया गया, जिसको काम करते सिर्फ दो ही हफ्ते हुए थे। उससे कहा गया था कि ट्रेन के आने पर अमुक स्विच् दबा देना। इसके कारण ट्रेन एक ऐसी लाइन पर चली गई जिसपर पहले से ही दूसरी ट्रेन खड़ी थी। चुदिनोआ को कुछ मालूम नहीं था और उसने वैसा ही किया।

ट्रेन तीस मील घंटे की चाल से चल रही थी और एक भारी मालगाड़ी से टकरा गई। रेलवे के अध्यक्ष की हैसियत से क्न्याजेफ् स्वयं घटना-स्थल पर पहुंचा और जब बतलाया गया कि दुर्घटना तुम्हारे ही आदेश के कारण हुई

तो उसने जो लोग वस्तुतः जिम्मेवर थे उन्हें बचा लिया और सारा दोष अनुभवहीन उम्मीदवार लड़की के मत्थे मढ़ा गया।

क्न्याजेफ् ने स्वीकार किया कि वह निम्न दुर्घटनाओं का भी जिम्मेवर है—(१) दिसम्बर १९३५ में याचिनो और इस्त्कताव् के बीच की दुर्घटना; (२) १९३६ में रोसा और बर्गाशी के बीच की दुर्घटना, जिससे कि बायलर के फट जाने से ड्राइवर का सहायक और कोयला झोंकने वाला मारा गया और ड्राइवर फेंका जाकर तीस गज पर गिरा; (३) १८ जनवरी १९३६ को चिस्तयाचुमलक् में ९१० नम्बर की ट्रेन-दुर्घटना; (४) ७ फरवरी १९३६ को येदिनोवेर और वेर्ग्राउश् के बीच की दुर्घटना, जिसमें कुछ गार्ड मरे थे; (५) २७ फरवरी १९३६ को चिस्तयाचुमलक् को एक दुर्घटना; और कुछ और भी दुर्घटनाएं।

क्न्याजेफ् ने कहा कि सब मिला कर १३ या १५ दुर्घटनाओं की सीधी जिम्मेवरी उस पर है। इन दुर्घटनाओं में ५३ आदमी मरे और १५४ घायल हुए। रेलवे का अध्यक्ष होने के कारण वह इन दुर्घटनाओं की जिम्मेवरी को छिपाने में सफल हुआ और जहां स्वाभाविक कारणों से आकस्मिक घटना सिद्ध करना असम्भव था, वहां उसने निरपराध व्यक्तियों के खिलाफ अपराधपूर्ण बेपरवाही का मुकदमा चलाया।

तुरोक् पेर्म और ऊराल् रेलवे के ट्राफिक् विभाग का सहायक मैनेजर था। वह क्न्याजेफ से मिलकर काम करता

रहा। १६३४ से अगस्त १६३६—अपनी गिरफ्तारी के समय तक उसने चालीस दुर्घटनाएं कीं। अधिकांश दुर्घटनाएं माल-गाड़ियों से सम्बन्ध रखती थीं, जिनमें कि इंजिन के कितने ही आदमी मरे। २६ अप्रिल, १६३६ को स्वेर्द्लोव्स्क—पैसेंजर स्टेशन और स्वेर्द्लोव्स्क-जंक्शन् के बीच एक पैसेंजर-ट्रेन नष्ट की गई, जिसमें १ मरा और २० घायल हुए।

इन दोनों अपराधियों का सम्बन्ध जापानी-भेदिया विभाग से था, यह हम पूर्व परिच्छेद में कह आए हैं।

× × × ×

कुबड़े बोगुस्लाव्स्की, पहले के एक आवारे, को नवजीवन देकर एक उत्तरदायित्वपूर्ण पद प्रदान किया गया। रेलों के नाश करने में उसे भी सम्मिलित किया गया था। उसकी गवाही में खास महत्व की बात यह थी कि वह क्रोधान्ध हो कर प्याताकोफ् और रादेक् पर यह कह कर कठोर हमले करने लगा कि इन्होंने सोवियत् भूमि के बँटवारे के सम्बन्ध में मोल-तोल की बात छिपा रक्खी। उसने तहे-दिल से शिकायत की कि अपराध-पत्र के पढ़े जाने से पहले वह यह रहस्य नहीं जानता था और यदि मालूम हुआ होता तो वैसा करने से वह इन्कार कर देता।

जब विशिन्स्की ने पूछा कि तुमने क्यों अपराध स्वीकार किया तो भावावेश से काँपते हुए उसने घोषित किया—

"पिछले चन्द वर्षों में जब कि मैंने अपने को इस अपराध-पूर्ण जीवन में मग्न पाया तो मैं उससे ऊब ही नहीं रहा था बल्कि वह मेरे कलेजे पर भारी बोझ-सा मालूम हो रहा था। इस सम्बन्ध में मैं बतलाना चाहता हूं कि त्रोत्स्की-पंथियों के संगठन में भीतर से कितनी अत्यन्त असह्य और भयंकर सड़ांध आ गई थी, जिसे कि मैं पग-पग पर अनुभव कर रहा था। मैं बतला देना चाहता हूं कि इस सम्बन्ध की बहुत सी बातें मुझे पहले अज्ञात थीं जो कि मुकदमे की दौरान में मुझे मालूम हुईं।

"मैं यहां अदालत में बतला देना चाहता हूं कि मुझे कितनी कड़ी नफरत हो उठी जब कि रादेक् यहां कह रहा था:—(यहां बोगुस्लाव्स्की ने रादेक् की तरफ मुंह करके चिल्लाना-सा शुरू किया) "कैसे जिनोवियेफ् के अनुयायियों के साथ गंठजोड़ा होते ही कितनों ने एक दूसरे को ठगने की बात शुरू कर दी।

"हम लोग जो कि अपनी अपनी जगहों पर काम कर रहे थे, यह नहीं जानते थे कि पीठ पीछे हमारा देश विदेशी पूंजीपतियों के हाथ बेंचा जा रहा है। मुझे इसका पता तब लगा, सो भी अंशतः, जब कि मैंने अपराध-पत्र पाया। लेकिन, सब बात साफ मालूम हुई यहां अदालत में आकर जब कि मैंने प्याताकोफ् और रादेक् की गवाहियों को सुना।

आठवां परिच्छेद

आतंकवाद

"सोवियत् शासन के प्रतिनिधियों का क्रान्तिकारी मजदूर और किसानों की संस्थाओं के सदस्यों के खिलाफ आतंकवादी—कार्रवाई का करना अथवा ऐसी कार्रवाई के करने में भाग लेना, चाहे कार्रवाई करने वाले व्यक्ति किसी क्रान्तिविरोधी संस्था के सदस्य न हों, तो भी इस धारा की दूसरी उपधारा में वर्णित दंड के भागी होंगे अर्थात् मृत्यु-दंड, सर्वत्रबध्यता और सभी सम्पत्ति की जब्ती अथवा परिस्थिति के कारण अपराध के गुरुत्व के कम होने पर सभी या आंशिक सम्पत्ति की जब्ती के साथ कम से कम तीन साल की जेल । **सोवियत् दंड-विधान धारा ५८ [२]**

आरंभ से ही सोवियत् सरकार के प्रधान सदस्यों की हत्या दल के प्रोग्राम में एक ख़ास स्थान रखती थी। तथापि दूसरी कार्रवाइयों में कुछ सफलता होने पर भी यहां वह बिलकुल ही असफल रहा । यह सच है कि किरोफ़् की हत्या की योजना उन्हें मालूम थी, लेकिन वह काम जिनोवियेफ के दल ने किया।

उनकी इच्छा यद्यपि इसके लिये बलवती थी, फिर भी वे असफल रहे। गवाही से मालूम होता है कि प्याताकोफ् और रादेक् उस योजना को जानते और अनुमोदन करते थे जो कि स्तालिन मोलोतोफ, कागानोविच् कोसियोर्, कोस्तिचेफ् , बेरिया और येजोफ् की हत्या के सम्बन्ध में थी। अधिकांश अपराधी एक या अधिक ऐसी योजनाओं को जानते थे ।

विशेष करके किरोफ् की हत्या—जो कि दल की मन्शा के खिलाफ सारे सोवियत्-संघ में क्रोध और घृणा संचारित करने में कारण हुआ—के परिणाम को विरुद्ध जाते देख दल ने अन्त में निश्चय किया कि सोवियत् संघ के सभी या अधिकांश नेताओं की एक साथ ही हत्या करने से अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सकता है।

इसमें संदेह नहीं कि योजनाएं तैयार की गईं और जहां तक दल के बूते की बात थी वह उन्हें काम में लाने को प्रयत्नशील भी हुआ। उदाहरणार्थ—अगस्त, १९३६ में बोगुस्लाव्स्की का एक सहयोगी तीन पिस्तौल और अस्सी कारतूस ले आ रहा था, जब कि वह रास्ते में ही गिरफ़्तार कर लिया गया।

लेकिन दल के सामने कठिनाई यह थी कि वहां काम करने में आने वाले खतरे का सामना करने के लिए कोई आसानी से मिल न रहा था। अधिकांश अपराधी इस प्रकार

के आदमी न थे कि अपनी जान को फेंकते फिरें इसीलिए वे जाल में फांसे गये थे।

आतंकवादी काम में यह कठिनाई हमेशा ही आ मौजूद होती है। जो व्यक्ति वस्तुतः आतंकवादी काम करते हैं, वे आम तौर से, या तो कुछ पागल होते हैं या आदर्शवादी होते हैं और अपने उद्देश्य के न्याय्य होने में दृढ़ विश्वास करके उसकी सफलता के लिए अपने को न्यौछावर करने के लिए तैयार रहते हैं। ज़ारशाही रूस के आतंकवादी उसी श्रेणी के व्यक्ति थे।

एक तीसरी श्रेणी के आदमी हैं जो कि अपनी जान को खतरे में डाल कर साहसपूर्ण काम कर सकते हैं और यह वह व्यक्ति होते हैं जो धमकी और बदनामी के ख्याल से हताश हो जाते हैं।

दल में न पागल थे और न आदर्शवादी। लेकिन उन्हें एक ऐसा आदमी मिल गया जिसे कि वह अपने फंदे में फाँस सकते थे—और वह आदमी था अर्नोल्ड्।

अर्नोल्ड् एक निकम्मा, तुच्छ आदमी था। वह सेना का भगोड़ा था। उसने कई नाम बदले थे और चोरी के अपराध में अमेरिका में जेल की सजा पाये हुए था। अमेरिका में वह सामाजिक उन्नति के लिए फ्रीमेसन-सम्प्रदाय में दाखिल हुआ था। सोवियत् संघ में लौटने के बाद वह साम्यवादी दल में शामिल हुआ, और उसी गरज़ से। आवेदन-पत्र में उसने

अपने पुराने जीवन को छिपाया था, लेकिन किसी न किसी तरह धूर्त शेस्तोफ़् ने अर्नोल्द् के अतीत जीवन के कुछ भाग को जान लिया और वह उसपर दबाव डालने लगा। इस प्रकार अर्नोल्द् भी दल में शामिल हुआ।

ध्वंस, अव्यवस्था या भेदिये के काम में अर्नोल्द् ने कुछ नहीं किया। उसपर इल्ज़ाम था कि उसने ओर्दज़ोनिकित्जे और मोलोतोफ् की हत्या करने का प्रयत्न किया। वह एक मोटरखाने का मैनेजर था और उसे हिदायत मिली थी कि मोटर-सम्बन्धी दुर्घटना कराये।

यह पहले से ही मालूम था कि ओर्दजोनिकित्जे अमुक स्थानपर आने वाला है और उसे एक मोटर की आवश्यकता होगी। अर्नोल्द से कहा गया था कि वह स्वयं ड्राइवर होकर जाये और एक ख़ास रास्ते से जहां कि एक निश्चित स्थान पर रास्ता रुका रहेगा, पूरे वेग से मोटर को दौड़ावे। अर्नोल्द ने कहे अनुसार किया। लेकिन आखिरी क्षण में, जब उसने रोक को देखा तो सहम गया और स्टियरिंग चक्का घुमा कर गाड़ी को साफ बचा ले गया।

जब मोलोतोफ़् किसी जगह गया था तब शेस्तोफ् ने अपनी योजना और भी अच्छी तरह से बनायी। उसने अर्नोल्द् को धमकाया कि यदि वह अब की बार फेल हुआ तो उसे मार डाला जायगा—यह ऐसी धमकी थी किजिसे शेस्तोफ् कार्य-

रूप में परिणत करने में समर्थ था। शेस्तोफ् ने अर्नोल्द् को आज्ञा दी कि एक तीस फुट नीची पहाड़ी खड्ड—जहां सड़क के किनारे कठघरा नहीं था—के करारे पर मोटर को ले जावे। अर्नोल्द की जानकारी के बिना शेस्तोफ् ने अपनी योजना की सफलता के लिए एक दूसरी सावधानी भी कर रक्खी थी। उसने इन्तजाम किया था कि जिस समय मोलोतोफ् की कार जा रही हो, उसी समय साइड् के किनारे लोरी पार हो और यदि अर्नोल्द् आज्ञा का अनुसरण न करता हो तो लोरी कारके ऊपर चढ़ जाय। जब अर्नोल्द् खड्ड के पास पहुंचा तो उसने लोरी को आते देखा। उसने परिस्थिति की भीषणता का अनुभव किया और बदहवास हो लोरी से बचकर कार को खड्ड के आधी दूर पहुँचते-पहुँचते रोक दिया। अधिकारियों ने बेपरवाही के साथ कार चलाने के लिए कुछ बुरा भला कह संतोष कर लिया।

यहां अर्नोल्द् के पक्ष में एक बात कही जा सकती है—जब उससे पूछा गया कि क्यों उसका प्रयत्न सफल नहीं हुआ तो वह कह सकता था कि अन्तिम क्षण में मुझे सुबुद्धि आ गई। किन्तु ऐसा न करके उसने निःसंकोच स्वीकार किया कि प्रत्येक अवसर पर मेरी अपनी कायरता ने मुझे वैसा नहीं करने दिया।

९ वां परिच्छेद

फैसला और सजा

अपने अंतिम वाक्य में, प्याताकोफ्, रादेक् और शेस्तोफ् को छोड़कर बाकी सभी अपराधियों ने दया की भिक्षा मांगी। उनमें से किसी ने अपने अपराधों की राजनैतिक न्याय्यता साबित करने का प्रयत्न नहीं किया और अधिकांश ने कहा कि हमें अब मालूम हुआ कि त्रोत्स्कीवाद हमको कहां ले जा रहा था। नोर्किन ने इन शब्दों के साथ अपना वक्तव्य समाप्त किया—

"यदि अदालत में यह मेरे जीवन की अंतिम क्रिया है तो इसका उपयोग करते हुए मैं त्रोत्स्की के लिए अपनी कठोर निन्दा और घृणा प्रकट करता हूं।"

सभी ने कहा कि हमारे अपराध-स्वीकार की पूर्णता में संदेह करते हुए विशिन्स्की ने गलती की। तो भी, जिनोवियेफ् और कामेनेफ (जिन्होंने कि अपने पहले मुकदमे के समय किरोफ् की हत्या के लिए नैतिक जिम्मेवरी से अधिक को अस्वीकृत किया, किन्तु अपने दूसरे मुकदमे में स्वीकार किया कि उन्होंने स्वयं उसका प्रबन्ध किया था, लेकिन साथ ही प्याताकोफ़् के दल की कार्रवाईयों के बारे में कुछ भी नहीं प्रकाशित किया था) के आचरण को देखते हुए विशिन्स्की के संदेहों के लिए कुछ गुंजाइश रह जाती है।

अदालत ने करीब आठ घंटे तक विचार-विनिमय किया और तीन बजे सबेरे अपराध के सम्बन्ध में अपना निर्णय सुनाया। १३ अपराधियों को मृत्यु-दंड मिला, रादेक, सोकोलनिकोफ् और अर्नोल्द को १० साल की जेल और ५ साल तक राजनैतिक अधिकार से वंचित रहने की सजा तथा स्त्रोइलोफ् को ८ साल की सजा और ५ साल तक राजनैतिक अधिकार से वंचित रहने की सजा मिली। सभी अपराधियों की सम्पत्ति जब्त करने की घोषणा हुई।

इसमें कोई शक नहीं कि यदि किसी मुकदमे के लिए मृत्यु-दंड न्याय्य था तो वह इन तेरह आदमियों के मुकदमे के बारे में सबसे उचित था। मेरी राय में अदालत में जो तथ्य प्रमाणित हुए उनसे वे अपराध सिद्ध हुए जिनका इल्जाम कि अपराधियों पर लगाया गया था। इस लिए दंड-विधान की आज्ञा के अनुसार मृत्युदंड का फ़ैसला देना अदालत के लिए उचित था; बल्कि वह इसके लिए मजबूर थी, जब तक कि अपराध के गुरुत्व को कम करने वाली परिस्थितियां मौजूद न होतीं। जिस किसी ने गवाहियों को सुना वह मृत्यु-दंड प्राप्त अपराधियों के विषय में कह नहीं सकता कि वहां कोई परिस्थिति अपराध-गुरुत्व को कम करने वाली थी। कोई उनमें से नौजवान न था। उन सबने जान-बूझकर, संकल्प करके कामका यह रास्ता अख्तियार किया था, यह पूरी तरह जानते हुए कि यदि उनके कार्य्यों का भेद खुल जायेगा तो परिणाम क्या होगा।

शायद यह कहने की बात है कि यदि उनके अपराध इंगलैंड में किये गये होते तो वहां के कानून के अनुसार निःसन्देह वे मृत्युदंड के पात्र होते। महान् देश-द्रोह की सज़ा इंगलैंड में मृत्युदंड है और अंग्रेजी अदालत में उक्त अपराधियों के कार्य महान् देशद्रोह समझे जाते। महान् देशद्रोह के अतिरिक्त भी जब कि कारखानों का व्यवस्था-भंग, हत्या का प्रयत्न और सरकारी रहस्य का उदघाटन यद्यपि इंगलैंड में मृत्युदड से दंडनीय अपराध नहीं समझे जाते, किन्तु साधारण हत्या तो वैसी जरूर है। किसी अंग्रेजी अदालत में गवाहियों के देखते सभी अपराधियों—जिनको कि मृत्युदंड की सजा मिली—को हत्या का अपराधी साबित करने में दिक्कत न होती, और ऐसी अवस्था में मृत्युदंड देने के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता न था।

अदालत में तय पाया कि रादेक् और सोकोल्निकोफ् यद्यपि प्याताकोफ् के दल के सदस्य थे, तो भी उनका सीधे तौर से कारखानों में दुर्व्यवस्था, आतंकवाद या भेद खोलने जैसे कामों के करने या संगठन करने में हाथ न था, और इस कारण से कुछ अपराध की गुरुता की कमी देख कर मृत्युदंड देना नहीं चाहा।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि अदालत के सामने जो गवाही गुजरी थी उसको देखते कानून के विधान के अनुसार रादेक्

और सोकोल्निकोफ़् दोनों को मृत्युदंड दिया जा सकता था। गवाहियों से पता लगा कि दोनों को, जो कुछ हो रहा था, उसका पता था। दोनों उससे सहमत थे और वस्तुतः उन्होंने उत्साहित भी किया। विशेष करके दोनों एक ऐसी संस्था के प्रमुख सदस्य थे जो कि उनकी जानकारी में महा देशद्रोह की तरकीब सोच रही थी। दंडविधान की सतरहवीं धारा में एक विधान है जो कि अंग्रेजी कानून के ही जैसा भाव रखता है।

"सहयोगी, चाहे वे चढ़ानेवाले हों या सहायक, मुख्य अपराधी की तरह दंडनीय हैं।"

"चढ़ानेवाले वे व्यक्ति होते हैं जो कि किसी अपराध के करने में सम्मति देते हैं। सहायक वे व्यक्ति होते हैं जो कि अपराध के करने में आसानी पैदा करने अथवा प्रधान अपराधी या उसके अपराध के परिणाम को छिपाने की चेष्टा द्वारा सम्मति या हिदायत देकर अपराध के करने में सहयोग देते हैं।

पुनश्च। उक्त विधान की धारा ५८ (११) के अनुसार महा देशद्रोह और वैसे संगठनों की सदस्यता की तैयारी में "संगठन सम्बन्धी कार्रवाई" के लिए आदमी मृत्यु दंड का पात्र होता है।

इसलिए, चूंकि गवाही में कुछ कानूनी त्रुटि थी, अदालत रादेक् और सोकोलनिकोफ़् को मृत्युदंड न दे सकी,

यह बात नहीं थी, और चूँकि, उन्होंने वैसा नहीं किया, जिसके कारण कि आम तौर से आश्चर्य हुआ, इसे खास तौर से उक्त दोनों अपराधियों के प्रति विशेष नर्मी ही समझनी चाहिए; क्योंकि उन दोनों की कार्रवाई सिर्फ अप्रत्यक्ष रूपेण थी ।

जहां तक अर्नोल्द् से सम्बन्ध है, वह ऐसा आदमी नहीं था, जिसके लिए कि किसी को सहानुभूति पैदा होती, तो भी उसने ध्वंस (Sabotage) या भेदिये का काम नहीं किया, न त्रोत्स्की का अनुयायी था, और सोवियत् नेताओं की हत्या के लिए दो बार प्रयत्न किये, जिनमें कि वह कामयाब न हुआ। वस्तुतः उसने किसी की हत्या नहीं की और शायद ही उसे महादेशद्रोह का अपराधी कहा जा सके। ऐसी परिस्थिति में उसके साथ नर्मी दिखलाना ठीक समझा जा सकता है ।

स्त्रोइलोफ् ने अनेक ध्वंस सम्बन्धी कार्रवाइयां की हैं और वह वर्षों तक जर्मन-भेदिया विभाग का एजेंट रहा है । यदि अदालत ने, जिन अपराधों को उसने किया, उन्हें आधार माना होता तो निःसन्देह ही उसके लिए मृत्यु-दंड का फैसला सुनाया जाता। लेकिन यह स्पष्ट था, जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, वह अपने सह-अपराधियों से बिलकुल ही दूसरे प्रकार का आदमी था, और साथ ही यह भी साफ था कि सारे मुकदमे के दौरान में अदालत बारीकी के साथ उसपर निगाह रक्खे थी। इसमें सन्देह नहीं कि अदालत ने उसे दंड देते वक्त उसके

स्वभाव और सुधार की संभावना का भी ध्यान रक्खा।

सारी गवाही को सुन लेने के बाद आज मैं भी स्वीकार करता हूं कि मैंने अपने लिए तै किया कि मैं जज होता तो क्या दंड देता। मैं इसी निर्णय पर पहुंचा की पन्द्रह अपराधियों को मृत्यु-दंड देता और अर्नोल्ड् तथा स्त्रोइलोफ् को दस-दस साल की जेल की सजा।

जब की मैं सारे सोवियत् संघ के चारों तरफ होने वाली सभाओं की कार्रवाईयों—जिनमें की सभी अपराधियों के लिए मृत्युदंड की मांग पेश की गई थी—का समाचार पढ़ता और जब कि मैंने विशिन्स्की को ग्यारह मृत्युदंडों के लिए पटुतापूर्ण प्रार्थना करते सुना तो अधिकांश आदमियों की तरह मैंने भी आवश्यक समझा कि सभी अपराधी मृत्युदंड पाते।

मैंने अपने मन में कहा—"अच्छा, यह हो सकता है कि सभी मृत्युदंड के पात्र हैं, और यह भी हो सकता है कि सोवियत् संघ की राजनीतिक अवस्था के लिए जरूरी है कि उन सभी पुरुषों को कठोर दंड दिया जाय जो कि देशद्रोह-सम्बन्धी षड्यन्त्रों में किसी तरह का भाग लें। इसके बारे में मैं नहीं जानता, लेकिन व्यक्तिगत तौर से मैं सोवियत् न्याय के गुण से पूर्णतया संतुष्ट होऊंगा यदि वे अर्नोल्ड् और स्त्रोइलोफ् को छोड़ देने को संभव समझें॥"

जो भिन्न भिन्न प्रकार के दंड दिये गये हैं, उनके स्वभाव के बारे में दो-एक बात कह देनी जरूरी है। सोवियत् दंड विधान जेल की सजा जैसी सामाजिक रक्षा के आयोजन का कुछ खास उद्देश्य बतलाता है। वे उद्देश्य हैं—उन व्यक्तियों द्वारा पुनः वैसे अपराधों के किये जाने में रुकावट डालना, समाज के दूसरे अस्थिरमनस्क सदस्यों पर प्रभाव डालना और प्रकृत्या अपराधी व्यक्तियों को एक मजदूर-राज्य के जीवन की परिस्थितियों के अनुसार तैयार करना। दंडविधान की धारा निम्न अभिमानपूर्ण शब्दों में खतम होती है—

"एक सामाजिक रक्षा के कानून को ऐसा नहीं होना चाहिये कि उसका उद्देश्य हो शारीरिक कष्ट या मनुष्य के आत्मसम्मान को नीचा दिखाना और उसका अभिप्राय बदला या सज़ा नहीं होनी चाहिये।"

जेल की सजा अधिक से अधिक दस साल की होती है और इंगलैण्ड (या भारत) के कानून के विरूद्ध हवालात में बीता समय—सजा की मीयाद के भीतर समझा जाता है। सज़ा भोगते वक्त कैदियों की विशेष योग्यताओं का नियम-पूर्वक उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ—स्त्रोइलोफ़् को निश्चय ही इंजीनियर का काम दिया जायगा, और जैसा की मैंने कहा कि, मुझे आश्चर्य नहीं होगा कि यदि तीन या चार वर्ष में सोवियत् राष्ट्र के एक पूर्ण तथा अनुरक्त सदस्य के रूप में

उसे मुक्त कर दिया जायगा। चाहे सजा की मीयाद कितनी ही बाकी हो, लेकिन जैसे ही अपराधी सुधर गया, उसे फिर जेल में नहीं रक्खा जाता।

राजनैतिक अधिकार से वंचित रखना—इस दंड के कारण आदमी न तो वोट दे सका है, न राजकीय संस्था या सरकारी नौकरी में किसी निर्वाचित पद का अधिकारी हो सकता है और न पदकों के रखने का ही अधिकार रखता है। स्त्रोइलोफ़ को लेनिनपदक से वंचित होना पड़ेगा। किसी नागरिक के राजनैतिक अधिकारों से वंचित रहने की सर्वाधिक अवधि है पाँच वर्ष।

जायदाद की जब्ती मे दंडित व्यक्ति या उसके परिवार के उपयोग के लिए आवश्यक घरेलू चीजें अथवा अपने व्यवसाय में काम आने वाले हथियार शामिल नहीं हैं। दंडित व्यक्ति के परिवार के हरेक सदस्य के लिए कम से कम तीन महीने के वेतन के बराबर की सम्पत्ति को छोड़ कर जायदाद जब्त की जाती है।

दसवाँ परिच्छेद

अंगरेजी राय

सिवाय एक के जो कि बंद कमरे में हुई, अदालत के सभी तारीखों में मौजूद रहने के बाद अपराध-पत्र और दंड-विधान के अध्ययन, सावधानतापूर्वक सभी गवाहियों के पढ़ने और अपराधियों, गवाहों, सरकारी वकील और जजों के तौर तरीकों को नजदीक से देखने के बाद मेरी अपनी निश्चित राय—जो कि एक वकील की गम्भीरतापूर्ण और निश्चयात्मकता के साथ बनायी और प्रकाशित की गई राय है—यह है कि मुकदमा विधान के नियमों के अनुसार, निष्पक्षता और सनियमता के साथ चलाया गया था। जिन अपराधों का आरोप उनपर हुआ था, अपराधी उनके पूर्णतया अपराधी थे और उन परिस्थितियों में उक्त दंड उचित था।

सभी अंगरेज और अमेरिकन पत्र प्रतिनिधि—जो कि मुकदमे के समय मौजूद थे और जिनके साथ विचार-विनिमय का मुझे मौका मिला था—मेरी राय से सहमत थे। एक प्रमुख वैदेशिक दूत-जो कि स्वयं अपने देश में जज और वकील रहा है—ने कहा—"यदि यह गवाही झूठी है तो मैंने सच कभी नहीं सुना।"

मैं समझता हूं कि कोई भी वकील जो कि मुकदमे की पेशी के समय मौजूद होता, उसी निष्कर्ष पर पहुंचता जिस पर कि मैं पहुंचा।

तो भी मैंने देखा कि हमारे देश में बहुत से व्यक्तियों—जिनमें कुछ ऐसे भी व्यक्ति शामिल हैं जिनकी राय के लिए आम तौर से मेरे दिल में बड़ा सम्मान है—ने भिन्न ही राय कायम की है। बहुत ऐसे आदमी—जो कि साधारणतया सोवियत् संघ के विरोधी भी नहीं हैं—इन राजनैतिक मुकदमों कारण सचमुच भ्रम और फिक्र में पड़ गये।

मेरी समझ में ऐसे भ्रम का मुख्य कारण है वह ढंग, जिसे कि इंगलैण्ड के पत्रों ने, मुकदमे की सूचना देते वक्त अख्तियार किया। कुछ बातें, जो मैंने पढ़ीं, वह वास्तविक घटना को पूर्णतया तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है; कितने ही पत्रों में उसे बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया है, और कितने ही वक्तव्यों में तो सच्ची बात को बिल्कुल उलटा छापा गया है।

हो सकता है कि यह बात समाचारों के भेजने की दिक्कतों के कारण हुई हो। मैं जानता हूँ कि मास्को और लन्दन के बीच के टेलीग्राफ और टेलीफोन के सम्बन्ध रखने वाले तारों की संख्या बहुत कम है और मुकदमे के वक्त इतनी अधिकता से समाचार भेजे जा रहे थे कि उनकी मांग का पूरा करना बड़ी दिक्कत का काम था, और खबरों के पहुंचने में भी बहुत देर होती थी।

इसके अतिरिक्त कितने ही पत्र सोवियत् संघ के विरोधी हैं; और कुछ सनसनी फैलाने के ख्याल से अपने पत्रों में समाचार को तोड़-मरोड़ कर प्रकाशित करते रहे।

मैं यह मानता हूं कि कुछ बातों में गलती जान-बूझकर नहीं हुई। उदाहरणार्थ—"रादेक् ने परीक्षकों को सताया" (Radek tortured investigators) यह खबर तार से होकर आई तो उपसम्पादक के दिमाग में आया कि अपराधी बेचारा क्या सतायेगा, और उसने झट. परीक्षक (पुलिस) लोगों ने ही रादेक् को सताया होगा, ख्याल कर लिया। रादेक् ने जो कहा था, वह मेरे कानों में इस प्रकार आया—"सवाल किया गया है कि परीक्षा के समय क्या हमें सताया गया ? मैं कहूंगा कि मैं नहीं सताया गया; बल्कि ढाई महीने तक प्रतीक्षा में रखने के लिए मजबूर करके मैंने ही परीक्षा करने वाले मैजिस्ट्रेट को सताया।"

इस एक घटना को छोड़कर, अधिकांश पत्रों ने जान-बूझकर घटनाओं का वर्णन करने में हेर-फेर किया। यहां हम ऐसे कुछ पत्रों से उद्धरण देते हैं, जिनसे कि हम सच्चाई और यथार्थता की अधिक आशा रख सकते हैं।

'मार्निंग पोस्ट' और 'मान्चेस्टर गार्जियन' ने अदालत के कठघरे को 'पिंजड़े की तरह का' बतलाया। वस्तुतः इंगलैंड के कठघरों की अपेक्षा मास्को का वह कठघरा बहुत कम पिंजड़े-जैसा था। अपराधियों को छाती भर ऊंची एक लकड़ी की बांधी

द्वारा जनता से अलग किया गया था, जिसके भीतर अपराधियों के बैठने के लिए अलग अलग कुर्सियां रक्खी हुई थीं।

'डेली हेरल्ड' ने लिखा कि स्त्रोइलोफ् को विशिन्स्की ने 'निर्दयतापूर्वक पीसा' यह 'जिरह किया' के स्थान पर लिखा गया।

'न्यूज क्रानिकल्' एक गवाह लोगिनोफ् को अपराधियों में से एक' कह कर उसके फोटो को छापा।

'न्यूज क्रानिकल्' ने मोटे मोटे शीर्षक से छापा कि 'विशिन्स्की के भाषण के समय बहुत से अपराधियों के नेत्र अश्रुपूर्ण थे; और 'डेली हेरेल्ड' ने लिखा 'प्याताकोफ् खुल कर रो पड़ा'। मुझे आश्चय होता है कि कहां से ये सूचनाएं मिलीं!

विशिन्स्की के व्याख्यान के समय, शुरू से आखिर तक मैं वहां उपस्थित था (जब कि बहुत से संवाददाता बीच-बीच में उठते रहते थे) लेकिन मैंने एक भी अपराधी को अश्रुपूर्ण नहीं देखा; यद्यपि यह सच है कि कुछ के मुखों पर उदासीनता छायी हुई थी और एक या दो ने मुंह को अपने हाथों में छिपा लिया था। विशेष कर, कोई भी विदेशी संवाददाता अपने बैठने की जगह से प्याताकोफ् की गति-विधि को देख नहीं सकता था; क्योंकि वह पांति के अंत में बैठा था; और उसके तथा हाल में बैठी जनता के बीच तीन या चार, दूसरे अपराधी बैठे थे।

'न्यूज़ क्रानिकल्' ने घोषित किया कि विशिन्स्की ने 'कड़कते हुए' मृत्यु-दण्ड की मांग पेश की। उसने कभी कड़कर कुछ

नहीं कहा; बल्कि जैसा कि 'डेली हेरेल्ड' ने ठीक लिखा कि 'विशिन्स्की का स्वर शायद ही किसी वक्त बोल चाल के स्वर से ऊपर उठा।'

लेकिन साथ ही 'डेली हेरेल्ड' ने यह कह कर गलती की कि विशिन्स्की ने 'जबर्दस्त करतल-ध्वनि' के साथ मृत्युदण्ड की मांग पेश की। वहां पर किसी प्रकार की करतल ध्वनि नहीं हुई; हां, जैसा कि 'मान्चेस्टर गार्जियन' ने ठीक लिखा; सिर्फ संक्षिप्त हर्ष ध्वनि'।

मुझे यहाँ 'डेली टेली ग्राफ' के बारे में कुछ नहीं कहना है, जिसने लिखा कि आदलत घर के बाहर G. P. U. (विशेष पुलिस की ५००० सेना तैयार खड़ी थी (वस्तुतः जैसा कि मैंने पहले लिखा है, वहां पुलिस का सिर्फ एक सिपाही) और परिस्थिति सम्बन्धी निवारण का अतिरंजित वर्णन करते हुए कि फैसला सुनाने के २४ घंटे के भीतर ही अपराधियों को मृत्युदंड दे दिया गया।

जो गलतियां ऊपर बतलायी गई हैं उन्हें अधिकतर इस ख्याल से किया गया था कि मुकदमे को जितना सनसनी खेज़ बनाया जा सके उतना बनाया जाय, चाहे इसके लिए सच्चाई का खून ही क्यों न हो। इंगलैण्ड में मानहानि और अदालत की अवज्ञा का ख्याल करके ही महत्वपूर्ण मुकदमों को उक्त प्रकार से वर्णित करने से अखबारों को रोका जाता है। वकीलों

को कृतज्ञ होना चाहिए कि उनकी जिरह को 'निर्दयतापूर्ण पीसना' और 'फड़कती हुई मांग' के रूप में वर्णित करने का साहस अखबार वाले नहीं कर सकते हैं।

यद्यपि यह अतिरंजित वर्णन स्वयं उतना महत्व नहीं रखता तो भी जिस वातावरण में मुकदमे पर विचार हुआ, उसके सम्बन्ध में इन वर्णनों ने पाठकों के दिल पर बिल्कुल उलटा प्रभाव डाला। समाचार-पत्रों में छपी खबरों में दो बड़ी गम्भीर गलतियां हुई थीं, जिनके आधार पर कि अधिकतर टिप्पणियां की गईं; इसलिए उनके बारे में वास्तविकता की ओर ध्यान दिलाना जरूरी है।

बहुत से समाचार-पत्रों ने शेस्तोफ् को गवाही देते वक्त मुरालोफ् के बीच में टोकने की बात की अतिरंजित किन्तु गलत रिपोर्ट छापी है। शेस्तोफ् बतला रहा था कि कैसे ओर्दजोनिकिल्ज़े की हत्या का षड्यन्त्र रचा गया, उसी समय, छपे समाचारों के अनुसार, मुरालोफ् खड़ा होकर बोल उठा कि अपराधी मैं हूं, शेस्तोफ् नहीं। इसी बात को लेकर 'एकोनोमिस्ट' ने निम्न टिप्पणी की—

"हमें एक विचित्र दृश्य देखने में आता है। एक अपराधी अपने को खून करने वाला बतलाता और तुरत एक दूसरा प्रायश्चित्त करने वाला मुलजिम उसे झूठा बतलाकर अपराध को जिम्मेवरी अपने ऊपर लेता है। हत्या के मुकदमें में

आत्म-दंड-सम्बन्धी अदालती इतिहास में इस तरह का यह पहला ही मुकदमा होगा।"

यदि रिपोर्ट गलत न होती तो उक्त टिप्पणी अनुचित न थी। लेकिन सच्चाई बिल्कुल उलटी है। शेस्तोफ ओर्दजोनिकित्जे की हत्या का षड्यन्त्र कर रहा था और बोला कि मुरालोफ ने ऐसा करने के लिए उसे हिदायत दी थी। यही इल्ज़ाम था जिससे कि मुरालोफ ने खड़े होकर इन्कार किया। उसने कहा, मैं साफ कहना चाहता हूं कि यह शेस्तोफ की मनगढ़न्त बात है, मैंने कभी ऐसी हिदायत न दी।

दूसरी गलती थी, जिसका कि बड़े जोर से प्रचार हुआ, कि एक अपराधी ने स्वीकार किया कि उसने कई हजार रेलवे-दुर्घटनाएं करायीं! यह खबर, जिसने कि बहुतों के दिल में सन्देह पैदा कर दिया, बिलकुल असत्य थी। क्न्याजेफ़ और तुरोक् ने रेल-दुर्घटनाओं की जिम्मेवरी स्वीकार की और कई सालों के भीतर उन्होंने क्रमशः १५ और ४० रेल-दुर्घटनाएं करायीं; रेल-दुर्घटनाओं से और किसी अपराधी का सीधा सम्बन्ध न था।

क्न्याजेफ की एक टिप्पणी इस खबर की जिम्मेवर मालूम होती है। उसने अपनी रेलवे लाइन में १६३४ के भीतर होने वाली दुर्घटनाओं की संख्या बतलाई और कहा कि दुर्घटनाओं की संख्या (१५) बहुत अधिक है और निश्चय

ही इनमें से अधिक त्रोत्स्की-पन्थियों के षड्यन्त्रों द्वारा उद्योग-विभाग की नाना शाखाओं में दुर्व्यवस्था और हानि पहुंचाने के प्रयत्न से हुई थी।

यहां इस बारे में काफी कह दिया गया कि सिर्फ समाचार-पत्रों में छपे उक्त मुकदमे के विवरणों को लेकर जो टिप्पणियां हुई हैं वे अविश्वसनीय हैं। अब मैं बतलाना चाहता हूं कि कितनी ही साधारण टीका-टिप्पणियां भी निराधार हैं।

इन टीका-टिप्पणियों पर अपनी राय जाहिर करते वक्त मैं सोवियन् संघ के पक्ष में या प्रचार करने के ख्याल से कुछ कहने नहीं चला हूं, बल्कि मेरी राय में ये टीका-टिप्पणियां निराधार हैं, इसी बात को यहां दिखलाना चाहता हूं।

अपराध-स्वीकार के सम्बन्ध में एक ओर कहा गया है कि उनकी सच्चाई गवाहियों से मेल नहीं खाती, और दूसरी ओर कहा जाता है कि वे सच्चे नहीं हैं।

जहां तक गवाहियों से मेल खाने का प्रश्न है, वहां कई बातों पर ध्यान रखना होगा। मैं पहले ही कह चुका हूं कि इंगलैंड में, और जहां तक मैं समझता हूं कि दूसरे देशों में भी, यदि अपराधी अपने अपराध को स्वीकार करता है तो मेल खिलाने के लिए कोई गवाही नहीं मांगी जाती और खुद अपराधी के भी जिरह नहीं होते।

इसके अतिरिक्त इस मुकदमे में गवाहियों ने अपराध-स्वीकार की पुष्टि की और बहुत अधिक परिमाण में। पांच सह-अपराधियों को गवाह के तौर पर बुलाया गया था, यद्यपि इस तरह की गवाही अविश्वसनीय होती है। इंगलैंड में कायदा है कि अदालत जूरी को सचेत कर देती है कि सिर्फ सह-अपराधियों की गवाही पर दंड नहीं देना चाहिये और यदि सिर्फ ऐसी गवाहियां ही अपराधियों के अपराध-स्वीकार की पुष्टि करतीं तो यह कहना उचित था कि अपराध-स्वीकार की, सारांशतः पुष्टि नहीं हुई।

तीन विशेषज्ञ गवाहों ने भी गवाही दी कि जिन धड़ाकों की ज़िम्मेवरी अपराधियों ने स्वीकार की है, वे अकस्मात् नहीं हो सकते थे।

इसके अतिरिक्त बहुत से कागज पेश किये गये थे। क्न्याजेफ् के पास जो पत्र पाये गये थे, उन्हें पेश किया गया और क्न्याजेफ् ने उनकी शिनाख्त की। स्त्रोइलोफ् की डायरी में जर्मन-भेदिया-विभाग के टेलीफोन का नम्बर था, वह पेश की गई और अपराधी ने उसकी शिनाख्त की। जर्मन-टेलीफोन डाइरेक्टरी के मिलान करने पर टेलीफोन-नम्बर की सच्चाई अदालत में ठीक साबित हुई।

रादेक् से पूछने पर मालूम हुआ कि त्रोत्स्की ने जो पत्र उसके पास भेजे थे वे नष्ट कर दिये गये। ऐसी

अवस्था में इंगलैंड का कड़े से कड़ा कानून भी ऐसे दस्तावेज के लिखित विषय के सम्बन्ध में जबानी गवाही की आज्ञा देता।

जर्मन-भेदिया-पुलिस के आदमियों के आने-जाने की बात अनेक बार सोवियत् में उनके आगमन-निर्गमन-सम्बन्धी पुलिस के कागजों तथा होटल के रजिस्टरों से प्रमाणित हुई है। बहुत से जर्मन-एजेन्टों की शिनाख्त फोटो द्वारा हुई है। उदाहरणार्थ स्त्रोडलोफ़ ने अपने परिचित पांच जर्मन गुप्तचरों का, गवाही देते वक्त, जिक्र किया था। उसके सामने २० फोटो पेश किये गये और कहा गया कि उनमें से उन पांचों के फोटो ले आओ। उसने बड़ी सावधानी से एक-एक को देखकर उनमें से पांच उठा लिये। जिस सावधानी से उसने फोटो को निहारा, वह सिखाई-पढ़ाई बात नहीं हो सकती। एक-दो फोटो के बारे में उसे हिचकिचाहट हुई और अन्त में वह बोल उठा—"हां, यह फान बेर्ग है। सिर्फ जब मुझसे मिलता था, तब उसके वदन पर मटमैला लिबास रहता था और यहां उसकी पोशाक काली है।" इस तरह की टिप्पणी, जिन्होंने उसे ऐसा कहते सुना, उनके लिए बहुत विश्वास पैदा करती है। दूसरी बात यह है, कि अभियुक्तों के अपराध-स्वीकार एक-दूसरे की पुष्टि करते हैं। यह कहने से मेरा अभिप्राय यह नहीं कि सत्रहों अपराध स्वीकार

स्वयं एक की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक हैं, बल्कि जब सत्रहो अपराध-स्वीकार एक ही षड्यंत्र को बतलाते हैं, और जब कि वे सभी पाँच और छै साल की अवधिमें घटित हुए, और सभी अधिक विस्तार में जाते हैं, और यह पाया गया है, कि कुछ नगण्य छोटी-छोटी बातों—जिनका स्मृति से हट जाना संभव है—को छोड़ कर वे सभी तारीखों, नामों और स्थानों के साथ आपस में शृंखलाबद्ध हैं; यह सबसे जबर्दस्त कारण है विश्वास करने में कि घटनाएं सच्ची हैं।

इतनी बात हुई पुष्टि के सम्बन्ध में। फिर क्या गवाहियों से सिद्ध या असिद्ध ये अपराध-स्वीकार सच्चे थे ?

अभी किसी गवाही की गति-विधि के अध्ययन से बहुत-कुछ मालूम हो सकता है और मैं उन कारणों को दुहराना नहीं चाहता, जिनका मैंने विश्वसनीयता के प्रमाणस्वरूप पहले जिक्र किया है। अदालत में जो कुछ हुआ सत्य था, चाहे पूर्ण सत्य न भी हो।

लेकिन यहां उन कल्पनाओं के सम्बन्ध में कुछ कह देना जरूरी है, जिनमें कहा गया है कि अभियुक्तों को औषध-प्रयोग, मोहिनी विद्या के असर (हिपनोटिज्म) द्वारा, शारीरिक कष्ट, भय या प्रलोभन देकर ऐसे अपराधों को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया, जिन्हें कि उन्होंने नहीं किया था।

समाचार-पत्रों में छपे सभी संवाद इस बात से सहमत हैं कि बुरे बर्ताव के कोई भी बाहरी चिन्ह अभियुक्तों के शरीर पर दिखाई नहीं पड़ते थे। वे अच्छे कपड़े पहने हुए, अच्छे खाये-पिये और बहुत ही स्वस्थ दिखाई पड़ते थे। उनका बर्ताव स्वतंत्रता पूर्वक था और उनकी बातचीत परस्पर-सम्बद्ध होती थी एवं उन्होंने तारीखों और नामों के साथ कई वर्षों तक के अपने कार्यों के लम्बे और दुरूह विवरण दिये। यह विशिन्स्की नहीं था, जिसने कि अपने सवालों द्वारा उनको अपनी कहानियों की ओर प्रेरित किया; बल्कि जब उनसे पूछा जाता था—"बतलाइये, अपने (कल-कारखाने के) नाश-सम्बन्धी कार्यों को" तो वे कितने ही मिनटों तक इसके उत्तर में बोलते रहते थे।

कुछ लोग एक और भी उपहासास्पद कल्पना गढ़ते हैं और कहते हैं कि जिस औषध का प्रयोग अभियुक्तों पर किया गया था वह इच्छा न रहते हुए भी अभियुक्त से झूठ नहीं बल्कि सच बुलवाने में समर्थ था। यदि ऐसा औषध कोई है तो जिनके ऊपर अपराध का संदेह है उनके ऊपर उसके प्रयोग में बहुत कम आपत्ति की जा सकती थी, और वर्तमान मुकदमे में उसके प्रयोग का औचित्य और भी अधिक है।

तथापि जो लोग अपराध-स्वीकारों को कल्पनामय बतलाना चाहते हैं, वे कहना चाहते हैं कि औषध एक निरपराध व्यक्तिको शृंखला-बद्ध झूठ बोलने के लिए मजबूर करता था। मेरी

समझमें इसका उत्तर यह है कि सचमुच ही वह बड़ी आश्चर्य-जनक दवा होगी, जो कि सतरह दिमागों के ऊपर ऐसा असर डालरके कि वे सतरह कहानियां गढ़ें और वे सारी की सारी पूर्णतया एक जैसी हों और साथही अभियुक्तों के ऊपर ऐसे औषध प्रयोग का कोई भी बाह्य चिह्न दिखलाई न पड़े।

शारीरिक यंत्रणा, भय, संमोहन तथा इस तरह की दूसरी कल्पनाओं का उत्तर एकत्र भी दिया जा सकता है। विशिन्स्की ने जेल में उसके साथ हुए बर्ताव को लेकर कुछ अभियुक्तों से पूछा।

नोर्किन ने कहा कि "जेलखाने की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। वहां किसी प्रकार का दबाव नहीं था।

विशिन्स्की —किसी आदमी को अच्छे भोजन से वंचित किया जा सकता है, निद्रा से वंचित किया जा सकता है। पूंजी-वादी जेलखानों के इतिहास से हमें इसका पता है। सिगरेट से वंचित किया जा सकता है।

जहाँ तक इन बातों का सम्बन्ध है, ऐसी कोई बात नहीं है।
"क्या वे तुम्हें अच्छा भोजन देते थे।"
"वे हमारा बहुत ही अधिक ख्याल रखते थे।"

अपने अन्तिम वक्तव्य को देते हुए प्याताकोफ ने कहा—नागरिक जजो! मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं; और यहां इस सम्बन्ध में कुछ कहना उपहासास्पद होगा कि मेरे सम्बन्ध

में किसी प्रकार का कठोर बर्ताव या प्रलोभन इस्तेमाल नहीं किया गया। सचमुच जहां तक कि मुझसे सम्बन्ध है, इस तरह के बर्ताव अपराध स्वीकार कराने में कुछ भी लाभदायक नहीं होते।

रादेक ने भी, जैसा कि मालूम है, अपने अन्तिम वक्तव्य में स्वेच्छापूर्वक कहा कि मुझे कोई भी शारीरिक कष्ट नहीं दिया गया।

विशिन्स्की ने वेगुस्लाब्स्की से पूछा था—

"पहले तुम बिल्कुल अंगीकार नहीं करते थे, फिर अंगीकार करने लगे। शायद इसका कारण तुम्हारी गिरफ़्तारी की कोई खास स्थिति होगी, या शायद तुम्हारे ऊपर कोई दबाव डाला गया होगा?—"नही।"

"शायद तुमसे कहा गया होगा कि तुम्हारी सजा हल्की कर दी जायगी, यदि तुम इस तरह से अंगीकार करो जिस तरह कि पीछे तुमने अंगीकार किया?—"नहीं।"

यह तो हुआ जो कुछ कि अभियुक्तों ने स्वयं अपने साथ किये हुए बर्तावों के सम्बन्ध में कहा। यह भी ध्यान में रखना होगा कि अभियुक्त जानते थे कि वहाँ, अदालत के कमरे में, बहुत से विदेशी संवादपत्रों के संवाददाता और विदेशी राजदूत मौजूद हैं। रादेक व्यक्तिगत रूप से बहुत से विदेशी पत्रों के संवाददाताओं से परिचय रखता था। अभियुक्तों में से

अधिकांश, और खासकर राडेक जैसा अनुभवी पत्रकार खूब जानता था कि बुरे बर्ताव का एक हल्का सा संकेत भी तुरंत संसार के चारों कोनों में विद्युतगति से फैल जायगा और सभी समाचार-पत्रों के प्रमुख पृष्ठों पर उसे छापा जायगा। इसलिए अभियुक्तों के साथ अच्छे बर्ताव का यह जबर्दस्त प्रमाण है कि उन्होंने बुरे बर्ताव के सम्बन्ध में संकेत तक न किया।

लेकिन जो लोग कहते हैं कि जिस किसी तरह से अभियुक्तों को मजबूर कर के झूठी अपराध-स्वीकृति ली गई, उनको एक भारी काम का सामना करना पड़ता है जब कि वह यह सोचने की कोशिश करते हैं कि कैसे अपराध-स्वीकृतियों को एक दूसरे के साथ सम्बद्ध किया गया।

यदि अभियुक्तों द्वारा वर्णित कथा असत्य थी तो किसी एक ने उसको जरूर गढ़ा होगा। यदि कोई ऐसी बेसिर-पैर की कल्पना करने के लिए तैयार न हो जाय कि सत्रहों अभियुक्त राज उलटने के लिए मिलकर षड्यंत्र करने की जगह, शारीरिक यंत्रणा सहने के बीच-बीच में वे मिलकर षड्यंत्र करके अपना अपना पार्ट लिख रहे थे, और अभियुक्तों से भिन्न किसी आदमी ने एक सप्ताहव्यापी नाटक (जो हर रोज आठ घंटे खेला जाता था) लिखा और उसने सत्रह अभियुक्तों, पांच गवाहों, तीन जजों और सरकारी वकील के लिए उपयुक्त पार्ट खेलने के लिए दिये। ऐसे सजीव नाटक, जिसे कि सात दिनों

में खेला गया, को लिखने के लिए एक सोवियत्-शेक्सपियर की जरूरत होती। फिर अभियुक्तों को अपनी गिरफ्तारी के बाद के समय— चूंकि तब से उन्हें जिरह और पूछताछ के बखेड़े से फुर्सत थी- में उनसे एक साथ बराबर रिहर्सल कराया गया और यह काम तब तक कराया गया जब तक कि विशिन्स्की जजों, और गवाहों के साथ सभी अभियुक्त निर्दोष रूप से अपने अपने पार्ट को अदा न कर सके। और यह भी मान लेने की जरूरत है कि सभी अभियुक्त इतने प्रतिभाशाली अभिनेता थे, कि अपने पार्ट के अदा करने के लिए दबाव पड़ने पर भी वे बिना किसी भूल के, और बिना किसी एक को,अभिनय के बीच में कुछ समझाये सात दिनों तक इस प्रकार अपने अपने पार्ट को खेलने में समर्थ हुए कि जितने लोग अदालत में उपस्थित थे, सभी भ्रम में पड़ गये कि वह नाटक वास्तविक है।

इस प्रकार की कल्पना कितनी बच्चों की सी है, इस सम्बन्ध में सिर्फ एक बात कहने की जरूरत है। स्पष्ट है कि इस प्रकार की बनावट के लिए यह मान लेना जरूरी है कि अभियुक्त एक नाटक का अभिनय कर रहे थे और यह बे-सिरपैर की कल्पना है। उपर्युक्त कारण अभियुक्त या उनके परिवारों को धमकी देना, शारीरिक यंत्रणा, औषधि-प्रयाग, संमोहन प्रयोग और प्रलोभन की कल्पना को भी सारहीन साबित करते हैं।

त्रोत्स्की के पुत्र सेदोफ् ने स्वयं 'मांचेस्टर गार्डियन" में

एक लेख छपवाया था, जिसमें उसने कहा है कि अभियुक्त को जीवनदान का प्रलोभन देकर उससे झूठी अपराध-स्वीकृति करायी गई। वह कहता है कि यह धोखा इस मामले में अधिक आसान है; क्योंकि यदि सब नहीं तो अधिकांश अभियुक्त (उदाहरणार्थ प्याताकोफ् और रादेक्) जिनोवियेफ् के मुकदमे के खतम होने से पहले ही गिरफ्तार हो गये और जेल के सख्त एकान्त-वास में अब भी उन्हें, जिनोवियेफ्, कामेनेफ्, स्मिर्नोफ् और दूसरों के भाग्य का पता नहीं था।

मैंने यहां सिर्फ सेदोफ् के लेख से उद्धरण दिया है, यह दिखलाने के लिए कि अपराध-स्वीकार की प्रामाणिकता के ख़िलाफ तर्क करते हुए आदमी कहां तक चला जा सकता है। जिनोवियेफ् के मुकदमे के समाप्त होने के समय रादेक् गिरफ़्तार नहीं होकर बिल्कुल स्वतंत्र था। वह "प्रावदा" में लेख लिख रहा था (जिसे कि उस विशेष समय में शायद सेदोफ् नहीं पढ़ सका हो)। यहां प्रसंगवश वह बात लिख देनी है जिसे कि रादेक् ने लिखा—

"सांपों को कुचल दो! यह ऐसे महत्त्वाकांक्षी मनुष्यों के विनाश की बात नहीं है, जो कि एक बड़े अपराध को करने पर उतारू हो गये, बल्कि यह फासिज्म के ऐसे एजेन्टों के नाश की बात है जो कि युद्ध की आग भड़काने में हाथ बटाने को तैयार थे और फासिज्म की विजय को इस ख्याल से

आसान बनाना चाहते थे जिसमें कि उसके हाथ से उन्हें कम से कम शासन-शक्ति की छाया भी मिल जाय।"

प्याताकोफ् भी उस समय स्वतन्त्र था, कम से कम २१ अगस्त तक; उसने भी रादेक् के उपर्युक्त लेख के छपने के बाद लिखा था—

"अपने क्षोभ और घृणा को पूरे तौर पर जाहिर करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। इन लोगों के पास मनुष्यता का लेश भी नहीं रह गया, इन्हें नष्ट कर देना चाहिए, ऐसे मुर्दार की तरह नष्ट कर देना चाहिए जो कि सोवियतों की भूमि की शुद्ध हवा को गन्दा करते हैं और ऐसे खतरनाक मुर्दार हैं जो हमारे नेताओं की हत्या के कारण बन सकते हैं।"

इन वाक्यों के पढ़ने के बाद यह सोचना मुश्किल है कि प्याताकोफ् और रादेक् को जिनोवियेफ् और कामेनेफ् के भाग्य का कुछ भी पता न था। खास करके पहले के मुकदमे के अभियुक्तों की फाँसी का जिक्र अदालत में बराबर होता था; उदाहरणार्थ—रादेक के अपने अन्तिम भाषण में। नोर्किन् भी ३० सितम्बर तक गिरफ़्तार नहीं हुआ था। यह सचमुच ही विश्वास करने लायक बात नहीं है कि सजा के नरम करने के प्रलोभन ने और बातों से बिल्कुल अलग ही, अभियुक्तों के ऊपर किसी प्रकार का भी असर डाला हो।

इस प्रकार एक आदमी को सिर्फ यही बात युक्तियुक्त मालूम होती है कि अभियुक्त सच बोल रहे थे।

अच्छा, तो यह पूछा जा सकता है कि यदि अपराध-स्वीकार सच्चे थे, और अभियुक्त इतने पतित अपराधी थे जितने कि अपनी स्वीकृतियों से वे जान पड़ते हैं, फिर उन्होंने क्यों अपने अपराध को स्वीकार किया? क्यों नहीं वे चुप रहे? क्यों उन्होंने पश्चात्ताप प्रकट किया और दया की भिक्षा मांगी?

यह प्रश्न दिलचस्प है। आइये, पहले हम उस बात की छानबीन करें जिसे कि अभियुक्तों ने स्वयं कहा।

प्याताकोफ़—"गिरफ्तारी के बाद मेरे सामने दो बातें थीं या तो मैं अन्त तक शत्रु बना रहूँ, अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अनुताप-रहित, स्वीकारिता-रहित ट्रोत्स्की-पक्षी बना रहूं, या वह रास्ता पकड़ूं जिसे कि मैंने पकड़ा।"

रादेक्—"इजहार लेनेवाले प्रधान मजिस्ट्रेट ने मुझ से कहा—'तुम बच्चे नहीं हो, यहां १५ आदमी तुम्हारे खिलाफ प्रमाण पेश कर रहे हैं। तुम इससे छुटकारा नहीं पा सकते और एक समझदार आदमी की भांति तुम्हें ऐसा करने के लिए सोचना भी न चाहिये। यदि तुम स्वीकार नहीं करना चाहते तो यह इसी लिए होगा कि तुम समय चाहते हो, जिसमें कि उसपर और गंभीरता के साथ विचार कर सको। बहुत

अच्छा, इस पर सोचो।' ढाई महीने तक मैं इजहार लेनेवाले मैजिस्ट्रेटों को परेशान करता रहा... और उन्हें बहुत से व्यर्थ काम करने को मजबूर करता रहा। ढाई महीने तक मैं इजहार लेनेवाले मैजिस्ट्रेट को मजबूर करता रहा कि वह मुझ से प्रश्न पूछे और दूसरे अभियुक्तों के स्वीकार को सामने रक्खे। सभी बातों को मेरे सामने खोले, जिसमें कि मैं अन्दाजा लगा सकूं कि किसने स्वीकार किया है और किसने नहीं और कहां तक हर एक ने स्वीकार किया है।

"और एक दिन इजहार लेनेवाले प्रधान मैजिस्ट्रेट ने मेरे पास आकर कहा—'अब तुम्हीं अंतिम व्यक्ति हो। क्यों वक्त बरबाद कर रहे हो?' तब मैंने उत्तर दिया—'अच्छा, तो कल से मैं अपना इजहार शुरू करूँगा।'"

बोगुस्लाव्स्की (जो आठ दिन तक अपने को रोके रहा) "जब मैं गिरफ्तार हुआ, मैं अपने को एक ऐसे आदमी की तरह समझने लगा जो कि एक बड़े खडड् के किनारे पर खड़ा हो और समझता हो कि वह अवश्य उसमें गिरेगा। अपने अपराध-स्वीकार से पहले के आठ दिनों में मुझे साफ झलकने लगा था कि अब वह समय आ गया है जब कि मुझे यह सब छोड़ना होगा।"

मुरालोफ़ (जो त्रोत्स्की का सब से अधिक विश्वासपात्र

समर्थक था, और जिसने साम्यवादी दल में फिर से प्रवेश पाने के लिए कभी दर्खास्त नहीं दी। उसे गिरफ्तार हुए आठ महीने हो गये थे जब कि उसने बयान देने का निश्चय किया और पेशी से सिर्फ एक महीने पहले अपराध स्वीकार किया)—"मैं समझता हूं, कि इतने दिनों तक जो मैं हर एक बात से इन्कार करता रहा और अपने को रोके था, इसके तीन कारण हैं .... मैं नरम और चिड़चिड़े मिजाज का हूं। यह पहला कारण है। जब मैं पहले पकड़ा गया, मेरा मन कड़वा और चिड़चिड़ा हो गया।"

विशिन्स्की—"क्या तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव किया गया?"

"मैं अपनी स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया।"

"शायद, तुम्हारे साथ कठोरता का बर्ताव किया गया?"

"नहीं। इस प्रकार का कठोर बर्ताव नहीं हुआ। मैं बतला देना चाहता हूं कि यहां मेरे साथ किया गया बर्ताव नम्रतापूर्ण था और चिड़चिड़ाहट का कोई मौका नहीं दिया गया। मेरे साथ बड़ी नर्मी और उदारता के साथ बर्ताव किया गया।"

"तुम्हें जेल में रक्खा जाना पसन्द नहीं?"

"हाँ, मुझे पसंद नहीं।"

"द्वितीय कारण भी एक वैयक्तिक ढंग का है। वह

त्रोत्स्की के साथ मेरी घनिष्ठता है। ... मैं सोचता था कि त्रोत्स्की की पोल खोलना मेरे लिए अनुचित होगा, यद्यपि मैं हत्या और ध्वंस की प्रेरणा पर विश्वास नहीं करता। तृतीय कारण था—हां, जैसा कि तुम जानते हो कि हर एक बात की एक हद होती है।

"और जब मैंने विचारना शुरू किया कि यदि मैं त्रोत्स्की का अनुयायी बना रहा, खास करके जब कि दूसरे उसे छोड़ रहे हैं—कुछ ईमानदारी से और कुछ बेईमानी से—चाहे जो भी हो, वे प्रतिक्रान्ति के ध्वजावाहक नहीं हैं, किन्तु मैं—यहां मेरे लिए वीर बनने की संभावना है!—यदि मैं इस रास्ते पर डटा रहा तो प्रतिक्रान्ति का ध्वजावाहक बन सकता हूं। इस ख्याल ने मेरे दिल को विचलित कर दिया। हर समय योग्य कार्यकर्त्ता, उद्योग, राष्ट्रीय अर्थनीति मेरी आंखों के सामने आगे बढ़ती जा रही है। मैं अंधा नहीं हूं, और मैं वैसा मतान्ध भी नहीं हूं।

करीब आठ महीने के बाद मैंने अपने मन से पूछा कि मैं अपने को उस राष्ट्र-हित के लिए समर्पित करूं जिसके लिए कई वर्ष से लड़ रहा हूँ, जिसके लिए मैं तीन क्रान्तियों में क्रियात्मक रूप से लड़ता रहा जब कि मेरा जीवन दर्जनों बार एक कच्चे धागे से लटक रहा था या मेरे लिए यह उचित होगा कि मैं आज की स्थिति में बना रहूं और अवस्था को

भीषणतर बनाता चलूं ? जो लोग अब भी प्रतिक्रान्ति के दल में हैं उनके लिए मेरा नाम एक उदाहरण का काम देगा। यह बात थी जिसने कि मुझे निश्चय पर पहुंचने में मदद दी—बहुत अच्छा मैं जा रहा हूँ. सम्पूर्ण सत्य कहने।' मैं नहीं जानता हूं कि मेरे उत्तर ने आपको संतुष्ट किया कि नहीं ?"

मुरालोफ् के वक्तव्य का जिक्र रादेक् ने निम्न प्रकार से किया:—मुरालोफ्—त्रोत्स्की का अत्यन्त घनिष्ठ अनुयायी, जिसके बारे में मैं निश्चित जानता था कि वह एक भी शब्द मुंह से निकालने की अपेक्षा मर जाना पसंद करेगा—ने गवाही दी और बतलाया कि मैं यह जानता हुआ मरूं कि मेरा नाम प्रत्येक प्रतिक्रान्तिवादी गुण्डे के लिए पथप्रदर्शन का काम करेगा, और इस मुकदमे का यह सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है।"

मेरी राय में अभियुक्तों ने स्वीकारिता के लिए जो कारण बतलाये हैं, वे विश्वसनीय हैं। यह भी ख्याल रखना होगा कि बहुत कमने गिरफ्तार होने के बाद तुरन्त ही अपराध स्वीकार किया। मुरालोफ् आठ महीने चुप रहा और रादेक् अपनी गिर-फ्तारी के ढाई महीने के बाद तक। द्रोबूनिस् जानता था कि मेरी गिरफ्तारी के छै सप्ताह बाद एक विस्फोटन का इंतजाम किया गया है और तो भी उसने उसके बारे में कुछ नहीं कहा। इसलिए यह समझना गलत है कि अभियुक्त सारी बात को बक देने के लिए छटपटा रहे थे।

खासकर जैसा कि विशिन्स्की ने कहा, मुकदमे की पेशी के समय भी उन्होंने सम्पूर्ण सत्य कह डाला, इसमें संदेह करने के लिए प्रबल कारण मौजूद हैं। उनके सह-अपराधी कामेनेफ और ज़िनोवियेफ ने दो बार घोषित किया कि उन्होंने सारी बात खोल दी. लेकिन तो भी उन्होंने प्याताकोफ-दल की कार्रवाइयों को छिपाये रखकर अपना प्राण दिया—विशेषकर प्याताकोफ ने, मालूम होता है, उतनी ही बातों को प्रकट किया कि जिसके लिए वह बाध्य था।

मैं समझता हूं कि आम तौर पर यह बात स्वीकार की जायगी कि चंद साल पहले सोवियत संघ की जनता देश के उद्योगीकरण और पंचायतीकरण के लिए पहले पहल महान प्रयत्न के निमित्त कमर कस रही थी, उस वक्त बहाना ढूँढ निकालना आसान था, बनिस्पत अब जब कि स्तालिन की नीति की सफलता को हम जनता के सुखमय और समृद्ध जीवन के रूप में प्रत्यक्ष देख रहे हैं। यह हो सकता है कि अभियुक्त या उनमेंसे जो अपनी कार्रवाई के सैद्धान्तिक औचित्य पर विश्वास रखते थे, और निरे गुंडे न थे तथापि श्रमिक श्रेणीकी रचनात्मक शक्ति में विश्वास न रखने के कारण जो दिल से स्तालिन की नीति को खतरनाक समझते थे उन्हें उस नीति को बदलने के लिए एक ही रास्ता दीख पड़ा कि आतंकवाद और कारखानों में ध्वंस का संचार किया जाय। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता

गया यह बिल्कुल संभव है, कि उनमें से कुछ (जैसा कि उन्होंने अपनी गवाहियों में कहा) को अपने कार्य के औचित्य पर संदेह होने लगा। वेतन और जीविका का मान जिस तरह ऊँचा उठता जा रहा था, उसका इन लोगों के ऊपर, विना सोचे, असर होता गया।

लेकिन आतंकवाद और ध्वंस के कार्य को आरम्भ करना एक बात है और उसको छोड़ देना दूसरी बात है। एक बार जब एक आदमी कुछ दूसरे आदमियों—जिनके बारे में वह नहीं जानता कि कहां तक उनपर विश्वास किया जाय और जो पर्दा फाश करने, फँसा देने या जान ले लेने में भी आनाकानी नहीं करेंगे—के साथ अपराधपूर्ण जीवन शुरू कर देता है तो उसके लिए यह असम्भव सा हो जाता है कि वह उस जीवन को स्वेच्छापूर्वक छोड़ सके। जैसा कि राडेक ने कहा—'तुम्हारे पीछे द्वार बंद है'। हो सकता है कि १९३६ तक बहुत से अभियुक्त अपनी जमात से बचनेका मौका ढूँढ़ रहे थे और गिरफ्तारी ने उन्हें अवसर दिया कि अधिकारियों के सामने कह कर अपना दिल हलका कर लें। यह भी हो सकता है कि जेल में रहते वक्त उन्हें अपनी करनी पर फिर से विचार करने का मौका मिला और उनकी अंतरात्मा ने इस नये कर्म-पथ के विषय में लानत-मलामत की और अंत में अपनी कार्रवाई (जिसके ऊपर कार्य-व्यस्त जीवन के कारण उन्हें विचार करने का मौका नहीं मिला

था) की निरर्थकता को भली भाँति समझकर अंत में इस निर्णय पर पहुंचे कि अपनी सफाई के बारे में कहने के लिए कोई बात नहीं रह गई है।

उनमें से जो बिल्कुल ही अपराधी प्रकृति के थे, उन्होंने निस्सन्देह, उतनी ही बातें स्वीकार कीं जितनी कि अधिकारियों को पहले से मालूम थीं। यह सम्भव है कि उनमें से कुछ को आशा थी कि ऐसा करके वे अदालत पर अच्छा प्रभाव डाल सकेंगे और इस प्रकार अपने को बचा सकेंगे। यदि कोई वस्तुतः अपराधी है तो अपराध स्वीकार करने में उसे नफा रहता है, यह बात इंगलैंड में भी अज्ञात नहीं है।

इसपर आश्चर्य प्रकट किया जाता है कि अपराध-स्वीकार करने पर भी राजनैतिक सफाई पेश करने के लिए अभियुक्तों ने अधिक प्रयत्न नहीं किया। यह प्रसिद्ध है कि राजनैतिक मुकदमे में अनेक अभियुक्त बड़ी निर्भयता प्रदर्शित करते हैं, चाहे वातावरण उनके लिए अत्यंत प्रतिकूल भी हो। उदाहरणार्थ—दिमित्रोफ् ने लाइप्जिग (जर्मनी) में अपने ऊपर लगाये गये बनावटी अभियोग के खिलाफ बहादुरी के साथ बहस की और इल्जाम लगानेवालों का पर्दा फाश कर दिया। लेकिन किसी अदालत को राजनैतिक मंच बनाना तब तक उपयोगी नहीं है जब तक कि अदालत के भीतर या बाहर उसके विचारों के प्रति कुछ सहानुभूति न हो। दिमित्रोफ् जानता था कि

उसके उद्देश्य से जर्मनी के भीतर और बाहर बहुत सी जनता सहमत है, और यह भी जानता था कि मुकदमे का परिणाम उसके लिए चाहे कुछ भी हो, लेकिन लाखों के लिए चाव से सीखने लायक वह एक राजनीतिक पाठ होगा।

लेकिन इसके खिलाफ प्याताकोफ और रादेक अपने को जनता द्वारा परित्यक्त होनेका अनुभव रखते थे। जैसा कि विशिन्स्की ने कहा कि यदि अभियुक्तों के विचारों को जनता के सामने प्रकट करने का कोई साहस करता तो जन-समाज क्रोधान्ध हो, उसे पकड़ कर सबसे नजदीक वाले वृक्ष की डाली से लटका देता। वे बिना सेना के सेनापति थे। यदि मुकदमे में अब भी अपने विचारों के राजनीतिक औचित्य को मानते तो भी उसे प्रकट करने का लोभ उनके मन में नहीं होता, क्योंकि वहां कोई उसे सुनने को राजी नहीं होता और न दिमित्रोफ की तरह लाखों सहानुभूति रखने वालों के भाव से उन्हें अन्तः प्रेरणा मिलती।

अखबारों में "रूसी मनोभाव" का भी जिक्र किया गया है, यह दिखलाने के लिए कि जब रूसी किसी अपराध के अपराधी होते हैं तो बिल्कुल ही समझ में न आने वाले एक दूसरे मनोभाव का परिचय देते हैं। यहाँ बतला देने की जरूरत है कि क्रान्ति के पहले रूसमें जारशाही की अदालतों में बहुत से राज-

नीतिक कैदियों ने काफी हिम्मत और चतुराई के साथ अपने मुकदमों की पैरवी की थी।

कुछ लोग यह सवाल करते हैं कि अभियुक्त क्यों इतने पागल हो गये जो कि आतंकवाद, ध्वंस और सोवियत् के सबसे बड़े शत्रुओं के साथ सहयोग करके राजशक्ति को हथियाने का प्रबल प्रयत्न करने लगे। इन आदमियों ने जिन अपराधों को किया, उनकी सूची को पढ़कर आश्चर्य होता है और इंगलैंड में अब भी प्रचलित इस अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण सामाजिक अवस्था में जो पले हैं उन्हें दंग रह जाना पड़ता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि ये अभियुक्त कई ऐसी क्रान्तियों से गुजर चुके हैं जिनमें ऐसे जान पर खेलने के कार्य उतने अनुचित नहीं मालूम होते हैं, जितने कि इंगलैंड में।

खासकर, अभियुक्तों के लिए हिंसात्मक तरीका ही काम करने का रह गया था। वे सोवियत् संघ के लोगों को अपने पीछे नहीं ले जा सकते थे; क्योंकि उनमें इनकी संख्या नगण्य सी थी। यह ध्यान रखने की बात है कि अभियुक्तों पर किसी सार्वजनिक आन्दोलन के संचालन का इल्जाम नहीं लगाया गया था। पहले उन्होंने वैसा करना चाहा था, लेकिन वे असफल रहे। उनके लिए सिर्फ दो ही रास्ते रह गये थे, या तो विरोध-नीति को छोड़ दें या वैयक्तिक हिंसा का अवलम्बन करें। इसमें संदेह नहीं कि साम्यवादी दल की नीति से

जब-तब असहमत हुए लोगों की संख्या ने पहले ही मार्ग को अख्तियार किया और जब उन्होंने देखा कि उनके मत को लोगों ने नहीं अपनाया तो बहुजन-स्वीकृत मत का ईमानदारी के साथ अनुसरण किया। यह समझना मुश्किल नहीं है कि अभियुक्तों की तरह चंद लोगों ने दूसरा मार्ग ग्रहण किया। एक बार जब उन्होंने ऐसा कर लिया और आतंकवाद और ध्वंस के पथपर अग्रसर हो चुके तो उनके लिए आवश्यक हो गया कि वे सोवियत् संघ की सभी विरोधी शक्तियों के साथ सहयोग के सूत्र में बद्ध हो जायं। वे क्यों न ऐसा करते, चूंकि वे स्तालिन् की नीतिको पसन्द नहीं करते थे, इसलिए रेलवे-दुर्घटनाएं कराते और जापान के साथ सहयोग करते थे। सोवियत् संघ के ऊपर सशस्त्र-आक्रमण करने की तैयारी में वे रेलें लड़वा रहे थे। यह बिल्कुल स्वाभाविक था। उनमें से चंद को शायद यह पता लगा हो कि उनकी कार्रवाइयां उन्हें कहां ले जा रही हैं और उनमें से चंद के दिमाग में चाहे खलबली मची हो जब कि उन्हें अनुभव हुआ हो कि वे किधर जा रहे हैं; लेकिन एक बार जब वे उस रास्ते पर चल पड़े तो उनके लिए रुकना आसान नहीं था।

किसी किसी ने कहा है कि अगर ये लोग इंगलैंड में रहे होते तो पार्लियामेन्ट के विरोधी-दल के मंचों की शोभा बढ़ाते, लेकिन मेरी राय में यह परिहासास्पद है; क्योंकि

वस्तुतः यही तो बात थी जो कि विरोधी या सरकारी मंच पर बिठलानेवाली जनता का साहाय्य उन्हें प्राप्त न था और इसी लिए जान पर खेलकर वे हिंसा के कार्य पर उतर आये थे।

दूसरा सवाल उठाया गया है कि कैसे अभियुक्त बिना पता लगे सभी अपराधों को करते रहे। लेकिन याद रखना होगा कि अभियुक्तों में से तीन सहायक राजमंत्री थे और दूसरे व्यक्ति भी दायित्वपूर्ण पदों पर नियुक्त थे। अपने अपराधों को छिपाने में उनका पद बड़ा सहायक था। यह पहले बतलाया जा चुका है कि वे अपने आदमियों द्वारा कराये किसी विस्फोटन की जांच के लिए ऐसे विशेषज्ञों का कमीशन भेजते थे जो खुद उनके षड्यंत्रों में शामिल थे। उन्होंने कुछ निरपराध इंजिन-ड्राइवरों और मेटों के खिलाफ मुकदमे चलाये और कुछ को सजा दिलाकर जेल भी भिजवाया। अपराध एक विशाल देश की भिन्न भिन्न जगहों में हुए थे, और समय के ख्याल से भी कई वर्षों में फैले हुए थे। यह भी याद रखना चाहिये कि वे सिर्फ अपराधपूर्ण कार्रवाइयों में ही लगे न थे; बल्कि प्याताकोफ़ और सेरेब्र्याकोफ़ की तरह उनमें से अनेक बहुत से सुंदर उपयुक्त काम—अपने पद को कायम रखने के ख्याल से—करने को मजबूर थे और इस प्रकार संदेह से अपने को बचा सकते थे। हमको जारशाही

पुलिस के भेदिये मार्लीनोव्स्की की घटना याद है जो कि बोल्शेविक दल के केन्द्रीय सदस्य के पद को कायम रखने के लिए ड्रूमा (जारशाही पार्लियामेन्ट) में लेनिन के तैयार किये हुए कई अत्यन्त क्रान्तिकारी भाषणों को देने के लिए मजबूर था।

इस प्रश्न का अच्छा उत्तर 'एकोनोमिस्ट' का एक लेख देता है, यद्यपि 'एकोनोमिस्ट' इस विषय में बिल्कुल उलटा मत रखता है—

"मुकदमे का एक दूसरा असाधारण रूप है तथाकथित अपराधों की संभावना। यहां पर हमें ऐसे आदमियों का एक समुदाय मिल रहा है जो ऐसे शक्तिशाली पदों पर पहुंच गये हैं जिनकी तुलना के व्यक्ति इस गरीब सभ्यता में पाना मुश्किल है। रादेक् एक प्रसिद्ध पत्रकार है... और जिस पद पर वह अधिष्ठित था उसके लिए षड्यंत्र और ध्वंस में भाग लेना तभी उचित था जब कि वह समझता कि वह उससे कुछ कर सकता है। सोकोल्निकोफ भारी उद्योग का राजमंत्री था (?) जिस तरह का पद इंगलैंड में नहीं है। यह आसानी से समझा जा सकता है कि देश के आर्थिक जीवन पर उसका इतना अधिकार था कि एक या दो महीने की जान बूझकर की गई दुर्व्यवस्था द्वारा वह सारे औद्योगिक प्रबन्ध को विशृंखलित कर सकता था और देश को अस्तव्यस्त अवस्था में पहुँचा रहा था। दूसरे... भी उससे कम नाश करने की शक्ति नहीं रखते थे।

"उन्हें क्या मिला ? उनकी अपनी स्वीकृति बतलाती है।

उन्होंने एक या दो हत्याएं कीं ... उन्होंने बारूद से कुछ खानों को उड़ा देने का इन्तजाम किया...यह कितनी हैरत की बात है कि जो आदमी एक पेचीदा और विस्तृत मशीन बनाने में समर्थ थे वे भी जब उसे नष्ट करना चाहते हैं तो असफल होते हैं।

'एकोनोमिस्ट' इतने ही से संतुष्ट नहीं है, वह ख्याल करता है कि अभी उन्हें और इससे अधिक करना चाहिए; दूसरे सोचते हैं कि इसका आधा भी बिना पता लगे नहीं किया जा सकता है। सच बात यह हो सकती है कि वे ठीक उतना ही करते थे जिसमें कि पकड़ में न आ सकें।

× × × ×

एक बात जो खासकर सोवियत संघ के खुले दुश्मनों की ओर से कही जाती है कि स्तालिन अपने सभी पुराने सहायकों की हस्ती को मिटा देने में लगा हुआ है। अभियुक्त बोल्शेविक-दल के पुराने स्तम्भ बतलाये जाते हैं और धनिकों के समाचारपत्र उनके साथ बड़ा सौहार्द दिखलाने का अभिनय करते हैं। वे ही पत्र, जो पहले मौका-बे-मौका हर वक्त उन्हें कोसने के लिए तैयार थे, आज यह पहला अवसर है जब कि वे उनके प्रति सम्मान और सौहार्द प्रकट करने में होड लगा रहे हैं। उनके लिए "प्रतिभाशाली"—"योग्य शासक" आदि विशेषण इस्तेमाल किये जा रहे हैं। उनके व्यक्तित्व के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने लेनिन की कुछ थोड़ी सी

सहायता—और स्तालिन् की तो बिल्कुल ही नहीं—से १९१७ की क्रान्ति को सफल बनाया, और सचमुच, क्रान्ति के एक मात्र निर्माता के तौर पर उनकी प्रशंसा की जाती है।

जहां तक वस्तुस्थिति से मेरा परिचय है, मैं कह सकता हूं कि यह उनकी बकवास है। १७ अभियुक्तों में से सभी ने १९१७ की क्रान्ति में भाग नहीं लिया था, और जिन्होंने कुछ विशेषता प्राप्त की, वह भी इतिहास के ग्रन्थों के अनुसार, कार्य-नीति के सम्बन्ध में लेनिन् के साथ अकसर मतभेद रख कर। कालेनिन, मोलोतोफ् मृत ओर्दजोनिकिद्जे और वोरोसिलोफ् जैसे अधिकांश स्तालिन् के साथी—जो कि सोवियत् संघ में अत्यंत लोकप्रिय हैं—"क्रान्ति के पुराने स्तम्भ" कहे जाने के लिए कहीं अधिक योग्य हैं, न कि कठघरे में बन्द ये अभियुक्त। रादेक् को छोड़ कर इनमें से कोई भी गिरफ्तारी से पहले वैयक्तिक प्रसिद्धि का दावा नहीं रखता था।

खास करके इन अभियुक्तों को मिटाकर स्तालिन का कौन विशेष मतलब सिद्ध हो सकता था? उनमें से कोई भी उसका खतरनाक या मजबूत राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी न था। वे शासन-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण पदों पर अवस्थित थे और उसका उन्हें काफी अनुभव था। क्यों एक-न-एक स्तालिन् चाहेगा कि सोवियत् संघ का एक योग्य भार-उद्योग सहायक राजमंत्री, एक योग्य यातायात-सहायक राजमंत्री और योग्य परराष्ट्र-सहायक राज-

मंत्री से वंचित कर दे ? इन पदों की पूर्ति आसानी से नहीं हो सकती। जिनोवियेफ् और कामनेफ् के मामले में उपर्युक्त युक्ति कुछ थोड़ी ताकत भी रखती क्योंकि वे केवल राजनितिज्ञ थे और किसी पद पर अधिष्ठित न थे। लेकिन यह कहना कि स्तालिन सब किसी को अपने रास्ते से हटाना चाहता है, सोवियत् संघ की अवस्था से पूर्ण अनभिज्ञता का ही परिचय नहीं देता है; बल्कि कलुषित हृदय से कीचड़ उछालना है।

कुछ लोग पूछते हैं कि जब सोवियत् सरकार जान सकती थी कि ऐसा करने से विदेश के कुछ भागोंपर बुरा असर पड़ेगा तो क्यों इस तरह के मुकदमे की कार्रवाई को होने दिया ?

संभवतः यह सत्य है कि सोवियत सरकार अच्छी तरह जानती थी कि बाहर क्या कहा जायगा—खास करके जब कि वह ज़िनोवियेफ् और कामेनेफ् के मुकदमों के बारे में इसका अनुभव कर चुकी थी। मुझ से बतलाया गया है कि उस समय उनको दिल से बड़ा आश्चर्य हुआ यह देखकर कि श्रमिक श्रेणी के बाहर या उनमें से कुछ को छोड़कर—सभी समाचार पत्र उनके खिलाफ लिखने में एकमत थे, उनको आशा थी कि उदार दल के कुछ पत्र महसूस करेंगे कि जिस षड्यंत्र का उन्होंने उद्घाटन किया वह सच्चा और खतरनाक था। और वे समाचार-पत्र इसका ध्यान रखते हुए टिप्पणी करेंगे; लेकिन सोवियत् के अधिकारियों को इस विषय में निराश होना पड़ा।

इसलिए जब उन्होंने प्याताकोफ् और रादेक् पर मुकदमा चलाने का निर्णय किया तो इस विषय में वे भ्रम में नहीं थे। ये निर्णय इस बात के और भी प्रमाण हैं, यदि दूसरे प्रमाण की जरूरत है, कि मुकदमा सच्चा था और अपराधियों को देश-द्रोह सम्बन्धी षड्यंत्र में तत्पर पाकर उनपर मुकदमा चलाने की जहमत सहने के लिए तैयार होना पड़ा।

यह भी समझना कठिन है कि मुकदमा चलाने से सोवियत् संघ के भीतर प्रचार करने का कौन सा मतलब सिद्ध होता। देशद्रोह, दुर्व्यवस्था और भेदियापन की एक मनगढ़न्त कहानी को प्रकाशित करने से भला कौन सा अच्छा प्रचार हो सकता था? एक कमजोर सरकार आम तौर से अपने प्रति हर तरह के विरोध के अस्तित्व को छिपाने के लिए भरपूर कोशिश करती है, इसके विरुद्ध यदि अपराध सच्चे थे तो सोवियत सरकार को हर तरह से उचित था कि वह अपने भीतरी अपराधियोंके एक झुण्ड के अस्तित्व से, एक सार्वजनिक मुकदमा द्वारा जनता को अवगत करती।

इस मुकदमे के सम्बन्ध की एक बात पर जिससे कि इंगलैंड में बड़ा आश्चर्य प्रकट किया गया और वह थी मुकदमे के दौरान में सोवियत् समाचारपत्रों की उसके सम्बन्ध में टिप्पणियां। मुकदमे की पेशी से एक या दो दिन पहले जैसे ही अपराध-पत्र प्रकाशित हुआ, समाचार-पत्रों में ऐसे लेखों की भरमार थी

जो कि अपराधियों पर बड़ी निष्ठुरता से प्रहार करते थे और सोवियत् संघ के कोने-कोने में होनेवाले उन प्रदर्शनों और सभाओं की रिपोर्टें छापते थे जिनमें अपराधियों को मृत्युदण्ड देने की मांग थी। आरंभ से लेकर फैसला होने तक बराबर ऐसी रिपोर्टें प्रकाशित होती रहीं।

इसमें कोई शक नहीं कि यदि इंगलैंड में किसी मुकद्मे के सम्बन्ध में ऐसे लेख प्रकाशित होते तो उन्हें अदालत की अवस्था सम्बन्धी कानून के खिलाफ समझा जाता और ऐसे समाचार-पत्रों को बहुत भारी जुर्माने की सजा दी जाती।

तो भी याद रखना चाहिये कि अदालत की अवज्ञा सम्बन्धी अंग्रेजी कानून दुनिया के और हिस्सों में नहीं देखा जाता। अमेरिका में इसकी एक क्षीण रेखा सी पाई जाती है। अंग्रेजी उपनिवेशों—जिनके कि कानून अंग्रेजी कानून के ढाँचे पर बने हैं—में शायद ऐसी कानूनी धारा मिलती है, लेकिन युरोप में कहीं ऐसा विधान नहीं है। जब कोई सनसनीखेज मुकद्मा यूरोप के किसी देश में चलने लगता है तो वहां सोवियत् की तरह की ही टिप्पणियां तथा सख्त सजा की मांग समाचार-पत्रों में प्रकाशित होने लगती है।

जहां तक वर्तमान मुकद्मे का सम्बन्ध है, अपराध-पत्र—जिसमें कि लिखा हुआ था कि अपराधियों ने अपराध स्वीकार

किया है—के प्रकाशन से पहले पत्रों ने टिप्पणी करनी नहीं शुरू की; इसलिये अपराधियों के लिये उचित दंड की मांग उतनी अनुचित नहीं थी, जितनी कि यदि अपराधियों ने अपराध न स्वीकार किया होता। जब तक अपराधी अपराध स्वीकार नहीं करते—ऐसा मुझे बतलाया गया है, यद्यपि इसकी जांच करने का मुझे मौका नहीं मिला—तब तक सोवियत् समाचार पत्र बहुत अधिक संयम दिखलाते हैं। मुझे यह भी बतलाया गया है कि यदि आज कोई समाचार-पत्र किसी ऐसे आदमी के ऊपर अनुचित आक्रमण करता है जिसके ऊपर इस वक्त मुकदमा चल रहा हो, और पीछे छूट जावे तो समाचार-पत्र के ऊपर दावा कर के क्षतिपूर्ति ली जा सकती है। दंड-विधान की धारा १६१—जिसके द्वारा ६ महीने के लिए सुधारात्मक काम के लिए सजा या मानहानि के लिए ५००) का जुर्माना हो सकता है—में समाचार-पत्र पर फौजदारी मुकदमा दायर किया जा सकता है, और समाचार-पत्र को दोहरी सजा मिल सकती है।

मुकदमा चलते वक्त टिप्पणी करने पर रोक-थाम लगाने के लिए कानून की, ऐसे देश में, कम आवश्यकता पड़ती है जहां जूरी की प्रथा प्रचलित नहीं है; मैं समझता हूं, इसका सबसे अच्छा उदाहरण यही मुकदमा है, जिसमें कि यद्यपि समाचार-पत्र सत्रहों अभियुक्तों के लिए मृत्युदंड की मांग कर रहे थे,

लेकिन अदालत पर उसका प्रभाव नहीं पड़ा और सिर्फ १३ को मौत की सजा हुई।

उपसंहार में मैं एक हार्दिक भाव प्रकाशित करना चाहता हूं जिस भाव को इंगलैंड में अब तक बहुत कम आदमियों ने प्रकाशित किया है, लेकिन जिस भाव को लोग, मुझे निश्चय है, बहुत अधिक संख्या में अनुभव करने लगेंगे जैसे ही इन मुकदमों के भीतर की सच्चाई को वे महसूस करने लगेंगे। यह भाव है सोवियत् सरकार और सोवियत् जनता के प्रति मेरी सहानुभूति, जिनके यहां इस किस्म के भयंकर अपराध किये गये, और मैं उन्हें इसके लिए बधाई देता हूं कि उन्होंने जिम्मेवर आदमियों को पकड़ लिया। मुझे आशा है कि सोवियत् संघ अपने देश में समाजवाद के निर्माण के काम में शान्ति-पूर्वक अग्रसर होने पायेगा।

समाप्त

हमारी साहित्यक पुस्तकें

१ अनुभूति (*कविता*) सजिल्द ... १॥)

रचयिता—प्रो० जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' एम० ए०

२ मीरा की प्रेम-साधना (*आलोचना*) सजिल्द ... १॥)

लेखक-पं० भुनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव' एम० ए०

३ प्रेमचन्द की उपन्यास-कला (*आलोचना*) सजिल्द १॥)

लेखक प्रो० जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' एम० ए०

४ ज्योतिर्मयी (*उपन्यास*) सजिल्द ... ... २)

लेखक-श्रीयुत अनूप लाल मंडल 'साहित्य-रत्न'

५ चित्र कथा (*कहानियां*) सजिल्द ... ... १।)

लेखक-प्रो० कन्हैया प्रसाद सिंह एम० ए०

६ रुदन (*कविता*) सजिल्द ॥।) अजिल्द ... ॥)

रचयिता--श्रीयुत श्यामधारी प्रसाद

७ जान हथेली पर (*कहानियां*) ले०-श्रीयुत रामबृक्ष बेनीपुरी ॥।)

८ फलों का गुच्छा (*कहानियां*) ले० श्रीयुत रामबृक्ष बेनीपुरी ॥।)

९ पद-चिन्ह (*जीवनियां*) ले०-श्रीयुत रामबृक्ष बेनीपुरी ।≋)

१० आज का सवाल (*लेख-संग्रह*) ले० श्री चन्द्रमा राय शर्मा ॥=)

११ तलवार की धार पर *कहानियाँ* ,, ,, ... ॥)

१२ विरक्ति (*कविता*) रचयिता—श्री रामनन्दन सिंह ... ।)

१३ तुम्हारी क्षय—श्री राहुल सांकृत्यायन ... ॥=)

१४ फुट बौल की नियमावली—ले० बम्ब बहादुर सिंह नेपाली =)

१५ जीने के लिए—श्री राहुल सांकृत्यायन ... २॥)

संचालक---**'वाणी-मन्दिर', छपरा।**